शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार

एन0आई0ओ0एस0 स्कूल प्रोजेक्ट

2020-21

सहायक सामग्री

कक्षा-दसवीं

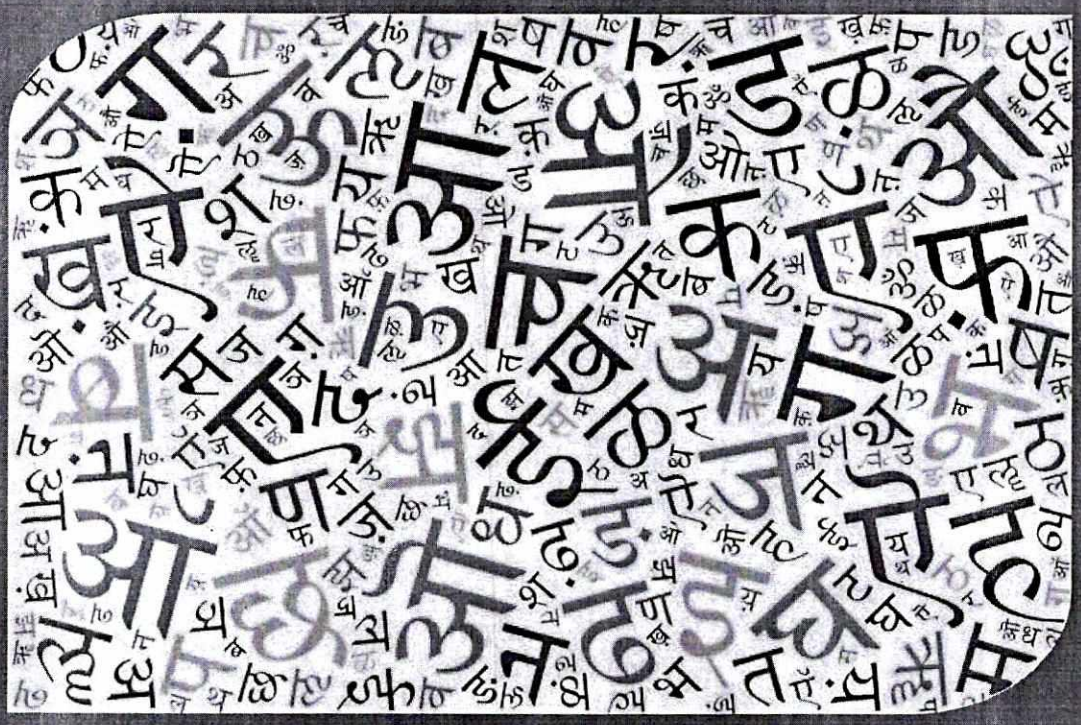

हिन्दी-201

एन0आई0ओ0एस0 बोर्ड के पाठ्यक्रम पर आधारित

NIOS SCHOOL PROJECT

Directorate of Education, GNCT of Delhi

SUPPORT MATERIAL
(2020-21)
Class : X

201- HINDI

Under the Guidance of

Mr. H. Rajesh Prasad
Secretary (Education)

Mr. Udit Prakash Rai
Director (Education)

Ms. Afsan Yasmin
Addl. DE. (NIOS School Project)

Dr. Rajvir Singh
DDE (NIOS School Project)

Coordination

Mr. Angad Kumar Pandey
OSD
(NIOS School Project)

Academic Advisor

Mr. G.D. Kanaujia
OSD
(Patrachar Vidyalaya, DoE)

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

सत्यमेव जयते

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली–110002
Email. msisodia.delhi@gov.in

D.O. No.: Dy.CM/2021/140
Date: 17.03.2021

MESSAGE

In the recent years, a significant transformation has taken place in the infrastructure and quality of education in Government Schools of Delhi. A number of Historic steps have been taken by the Delhi Government to ensure that our students receive world class education. NIOS School Project has come up with Support Material for the students of Class X in various subjects. Availability of sufficient and good quality examination material, adequate practice and guidance are keys to doing well in the examinations. It is learnt that the Support Material developed by dedicated, committed and knowledgeable teachers and coordinators has summary of chapters in bullet points followed by important questions categorized marks-wise.

I am sure that the Support Material, prepared by the NIOS School Project will stand in good stead for all students and prove immensely helpful in their preparation for examinations.

My sincere compliments to all teachers and coordinators who have made valuable contributions to its development. I also convey my best wishes to all the students for success in the coming examination.

(MANISH SISODIA)

H. RAJESH PRASAD
IAS

सत्यमेव जयते

प्रधान सचिव (शिक्षा/प्रशिक्षण व तकनीकी शिक्षा/ उच्च शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Pr. Secretary (Education/TTE/ HE)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

MESSAGE

I am happy to learn that the NIOS Team and Patrachar Vidyalaya of the Directorate of Education has prepared Support Material for students who are going to appear for Class X exam through the NIOS in the session 2020-21.

This year, more than in any other year, our students need extra support, guidance and easily comprehensible material which can be readily used for examinations.

This Support Material is the result of immense hard work, coordination and cooperation of teachers and coordinators of various schools. It is hoped that this material will be of immense help to students and teachers alike. The purpose of the Support Material is to impart ample practice to the students for preparation of exams.

This Support Material is based on the syllabus given by NIOS for the Academic Session 2020-21 and covers different level of difficulties.

I congratulate the entire team led by Sh. Rajvir Singh, DDE NIOS School Project for their sincere efforts to bring out the Support Material in such a short time.

I wish all the students for their success.

(H. Rajesh Prasad)

UDIT PRAKASH RAI, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

No. PS/DE/2021/56

Dated: 12/05/2021

संदेश

आधुनिक विश्व के इतिहास में शायद यह पहला अवसर है जब औपचारिक शिक्षा के केंद्र विद्यालय, महाविद्यालय इत्यादि कोरोना के चलते तनिक असहज दिखाई दे रहे हैं ; जबकि अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम जैसे NIOS या देश भर में फैले मुक्त विश्वविद्यालय गर्व के साथ अपनी जिम्मेवारी का निर्वाह निर्बाध रूप से कर रहे हैं।

मैं देख पा रहा हूँ कि आगे आने वाले समय में, शिक्षा प्राप्ति के अनौपचारिक माध्यम भी उतने ही महत्वपूर्ण होते चले जाएंगे जैसे कि अब तक स्कूल व कॉलेज रहे हैं।

अतीतमें NIOS की प्रमाणिकता को लेकर विद्यार्थियों में कुछ शंकाएं रहती थीं । गत दो वर्षों में शिक्षा निदेशालय ने भरसक प्रयास किया है कि NIOS को लेकर हमारे विद्यार्थियों के संदेह व संशय दूर हों और उससे भी बढ़कर यह प्रयास रहा है कि हमारे विद्यार्थी गली-बाज़ारों में NIOS के नाम पर चलाये जा रहे गोरख धंधों में न फँसें और वे सीधे शिक्षा निदेशालय के NIOS प्रकोष्ठ से संपर्क करें।

इसीक्रम में NIOS में नामांकित हुए अपने विद्यार्थियों की सुविधा के लिए शिक्षा निदेशालय ने एक नयी पहल की है । दसवीं कक्षा के पांच प्रमुख विषयों पर पहली बार Support Material तैयार किया गया है।

मैंने देखा है कि इसमें पहले तो पाठ को बड़ी ही सरल भाषा में संक्षेप में समझाया गया है और उसके बाद ठीक वैसे ही प्रश्नों का संग्रह तैयार कर Practice Papers तैयार किये गये हैं जैसे कि NIOS के प्रश्न पत्रों में होते हैं। मैंआशा करता हूँ कि हमारे छात्र-छात्राएं इस Support Material का भरपूर उपयोग करेंगे जिससे कि वे परीक्षाओं को और भी ज्यादा सहज भाव और आत्मविश्वास से Face कर सकें।

NIOS के उप शिक्षा निदेशक डॉ.राजवीर सिंह तथा उनकी टीम के सभी अध्यापकों की `लगन व मेहनत की भी मैं भूरी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ, जिसके फलस्वरूप यह सहायक सामग्री आज हमारे हाथों में है।

मेरी शुभकामनाएं।

उदित प्रकाश राय

OFFICE OF THE REGIONAL DIRECTOR (PV/NIOS)
DIRECTORATE OF EDUCATION
GNCT OF DELHI
FU-BLOCK, PITAMPURA, DELHI

MESSAGE

It gives me immense pleasure and sense of satisfaction to forward the support material prepared by a team of dedicated teachers and coordinators designated as Core Academic Unit Members for the benefit of the NIOS project students appearing in the Annual Exam 2021.

The purpose of providing support material is to make available ready-to-use study material, which can be relied on for success in examination - 2020-21.

The use of support material by the teachers and students will make their teaching and learning more effective and enjoyable. I hope it will be a comprehensive guide to students and teachers alike. I would like to congratulate all the Core Academic Unit Members for their tireless and valuable contribution. I wish success to all the students.

(Dr. AFSHAN YASMIN)
ADDL. DIRECTOR
(NIOS SCHOOL PROJECT)

उप–शिक्षा निदेशक
पत्राचार विद्यालय एवं
एन0आई0ओ0एस0 प्रोजेक्ट

संदेश

प्रिय विद्यार्थियो,

शैक्षणिक सत्र 2020–21 पूर्णता की ओर अग्रसर है, बोर्ड परीक्षाएं भी नज़दीक हैं। वैश्विक महामारी के चलते सत्र पर्यन्त कक्षाएं भी सुचारू रूप से नहीं चल सकीं। ऐसे कठिन समय में एन0आई0ओ0एस0 स्कूल प्रोजेक्ट के विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी सहायक सामग्री की नितान्त आवश्यकता थी जोकि बिन्दुपरक व परीक्षोपयोगी हो। इसी को ध्यान में रखकर विषय–विशेषज्ञों के द्वारा एन0आई0ओ0एस0 के विद्यार्थियों के लिए सहायक सामग्री को तैयार किया गया है। कोर ग्रुप की सभी टीमें बधाई की पात्र हैं जिन्होनें इतने कम समय में यह सामग्री तैयार की है। शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत चलने वाले एन0आई0ओ0एस0 स्कूल प्रोजेक्ट में पहली बार यह कार्य प्रारम्भ किया गया है। इन प्रयासों को सफलता तभी मिलेगी जब आप सभी विद्यार्थी इस सत्र में अच्छे अंकों के साथ दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करेगें। आप सभी के लिए एन0आई0ओ0एस0 बोर्ड से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अपने विद्यालय में ही अथवा सम्बन्धित राजकीय विद्यालय में ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश की व्यवस्था सुनिश्चित है। इस कार्य की सफलता हेतु शिक्षा निदेशक श्री उदित प्रकाश राय, आई0ए0एस0 का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिनके उत्साहवर्धन एवं सक्रिय सहयोग से यह पावन कार्य सम्भव हो सका।

आप इस सहायक सामग्री को नियमित रूप से मन लगाकर पढ़ें, दिए गये प्रश्नों का अधिकाधिक अभ्यास करें, मुझे विश्वास है कि ऐसा करने से आप न सिर्फ उत्तीर्ण होंगें बल्कि अच्छे अंक भी प्राप्त कर सकेंगे।

आगामी बोर्ड परीक्षाओं के लिए शुभकामनाओं के साथ मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

आपका शुभेच्छु

डा0 राजवीर सिंह
उप–शिक्षा निदेशक
(पत्राचार विद्यालय / एन0आई0ओ0एस0 प्रोजेक्ट)

Text of Article 51-A

PART IVA

FUNDAMENTAL DUTIES

51A. Fundamental duties.-It shall be the duty of every citizen of India—

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers and wild life, and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(I) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

(k) who is a parent of guardian to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

मौलिक कर्तव्य की संख्या 11 है, जो इस प्रकार हैं :

1. प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करें।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखें और उनका पालन करें।
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें।
4. देश की रक्षा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें।
6. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझें और उसका निर्माण करें।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्धन करें।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञानार्जन की भावना का विकास करें।
9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें।
10. व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें।
11. माता-पिता या संरक्षक द्वारा 6 से 14 वर्ष के बच्चों हेतु प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना (86वां संशोधन)।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens:

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation;

WE DO HEREBY GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.

भारत का संविधान

उद्देशिका।

हम, भारत के लोग, भारत को एक [सम्पूर्ण प्रभुत्व - सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त करने के लिए,

तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और [राष्ट्र की एकता और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढाने के लिए

हम दृढ़संकल्प होकर इस संविधान को आत्मार्पित करते है।

DIRECTORATE OF EDUCATION
Govt. of NCT of Delhi

SUPPORT MATERIAL
(2020-21)
Class : X

201
HINDI

NOT FOR SALE

Prepared By: NIOS SCHOOL PROJECT

अध्यापकों हेतु (विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी के लिए) **आवश्यक निर्देश:**

'एन.आई.ओ.एस. में आपका स्वागत है'

- सभी हिन्दी अध्यापकों से अपेक्षित है कि हिन्दी पाठ्य पुस्तक 2 के पृष्ठ संख्या 156-170 पर दिए गए ''नमूने का प्रश्नपत्र'' व **अंक योजना** को सभी छात्रों से साझा करें व प्रश्न प्रारूप समझाएं।
- सभी छात्रों के पास प्रश्नपत्र का प्रारूप (अंक योजना), ''नमूने के प्रश्नपत्र'' व पिछले वर्षों के कुछ प्रश्नपत्र उपलब्ध हों ताकि प्रश्नपत्र के नमूने व अंक योजना से वे भली-भाँति परिचित होकर अभ्यास कर सकें।
- **छात्रों को निबंध लेखन, पत्र लेखन, सार लेखन, पठित काव्यांश, अपठित काव्यांश, पठित गद्यांश व अपठित गद्यांश संबंधित प्रश्नों का पर्याप्त अभ्यास करवाया जाए, क्योंकि ये सातों प्रश्न छात्र को परीक्षा पास करने व अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए अति महत्त्वपूर्ण हैं।**
- प्रत्येक पाठ के साथ उस पाठ से संबंधित परीक्षापयोगी लघु प्रश्न, बहुविकल्पीय प्रश्न, काव्य-सौंदर्य संबंधी व अन्य प्रश्न उत्तर सहित दिए गए हैं। इन सभी प्रश्नों का अभ्यास छात्रों को करवाया जाए व दो से तीन पाठों को मिलाकर साप्ताहिक/पाक्षिक/मासिक लघु कक्षा परीक्षा आयोजित की जाएं।
- इस सहायक साम्रगी के साथ में दिए गए व्याकरण भाग व पाँचों प्रश्न-पत्रों का कक्षा में पर्याप्त अभ्यास करवाएं व कक्षा परीक्षा लें।
- पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व पाठ की विधा का परिचय करवाना आवश्यक है।
- प्राय: छात्र काव्य-सौंदर्य के प्रश्नों के उत्तर में केवल सरलार्थ लिख देते हैं। यह दो उपशीर्षकों (भाव सौंदर्य व शिल्प सौंदर्य) के अन्तर्गत लिखा जाए।
- पत्र लेखन के अन्तर्गत, पत्र के प्रारम्भ, अन्त, विषय प्रतिपादन, प्रस्तुतीकरण का अंक विभाजन के अनुसार अभ्यास करवाया जाए। पत्र में अपना नाम, पता, विद्यालय का नाम आदि न लिखें।
- प्रश्नों के उत्तर अंकानुसार व शब्द-सीमा के अर्न्तगत लिखने का अभ्यास कराएं। दो प्रश्नों के बीच उचित स्थान छोड़े। उन प्रश्नों को पहले हल करें, जो अच्छी तरह आते हों।
- प्रस्तुत सहायक सामग्री एन.आई.ओ.एस. प्रश्नपत्र के लिए अंतिम व पूर्ण नहीं है व इसे पाठ्यपुस्तक के पूर्ण विकल्प के रूप में न लिया जाए। अध्यापकों से अनुरोध है कि वे स्वविवेक से छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम व विषय की पूर्ण जानकारी देकर पर्याप्त अभ्यास कराएं।

-जलदीप सिंह सहरावत
(परियोजना समन्वयक: हिन्दी)

LIST OF GROUP LEADER, SUBJECT EXPERTS, DATA ENTRY OPERATOR & OTHER STAFF FOR PREPARATION OF SUPPORT MATERIAL

CLASS-X

SUBJECT: 201-HINDI

GROUP LEADER			
S.No.	**Name**	**Designation**	**NIOS Study Centre/School**
1.	Jaldeep Singh Sehrawat 2020033	Coordinator	SBV, Block-A, Vikaspuri 1618002

SUBJECT EXPERTS			
S.No.	**Name**	**Designation**	**NIOS Study Centre/School**
1.	Lalman Pandey 2017043923	TGT Hindi (Guest Teacher)	SBV, Ashok Nagar 1515002
2.	Manju Bala 2017119543	TGT Hindi (Guest Teacher)	Govt. Co-Ed SSS, Site-1, Sector-6, Dwarka 1821206
3.	Sukhminder Kaur 2017004082	TGT Hindi (Guest Teacher)	Skv Rajouri Garden, Extension 1515021
4.	Rajani 2017013506	TGT Hindi (Guest Teacher)	Skv Q-Block, Mangolpuri 1412080
5.	Vimal Kumar Sharma 2017039405	TGT Hindi (Guest Teacher)	Skv Moti Nagar 1516018

DATA ENTRY OPERATOR			
S.No.	**Name**	**Designation**	**School/Branch**
1.	Bhupendra Kumar 20143129	Data Entry Operator	DTE-Patrachar Vidyalaya 5000005

LOGISTICS & TECHNICAL SUPPORT			
S.No.	**Name**	**Designation**	**School/Branch**
1.	Bhanu Pratap Awasthi 20112093	TGT English	DTE-Patrachar Vidyalaya 5000005

प्रश्न-पत्र का प्रारूप

स्तर - माध्यमिक पाठ्यक्रम

विषय : हिंदी समयावधि : तीन घंटे

अंक : 100

1. उद्देश्यानुसार अंक विभाजन

उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
ज्ञान	24	24
अर्थग्रहण (बोध)	36	36
अनुप्रयोग/अभिव्यक्ति	40	40

2. प्रश्नों के प्रकारानुसार अंक विभाजन

प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक योग	अपेक्षित समय
निबंधात्मक प्रश्न	3	21	70 मिनट
लघुत्तरीय प्रश्न	12	42	60 मिनट
अतिलघुत्तरीय प्रश्न	22	22	30 मिनट
वस्तुनिष्ठ प्रश्न	15	15	20 मिनट
कुल योग	52	100	180 मिनट

3. विषयानुसार अंक विभाजन

इकाई/उपइकाई	अंक
पढ़ना	38
कविता पठन	22
गद्य पठन	16
व्याकरण तथा भाषा प्रयोग	20
लिखना	42
लेखन कला	9
भाव पल्लवन	5
सार लेखन	4
तालिका निर्माण....आदि लेखन	5
पत्र लेखन	9
निबंध लेखन	10
कुल योग	100

4. प्रश्न पत्र का कठिनाई स्तर

कठिनाई स्तर	अंक प्रतिशत में
कठिन (योग्य और प्रतिभाशाली विद्यार्थी द्वारा हल किए जा सकते हैं।	15
औसत (वह प्रश्न जो पाठ्य सामग्री का गहन अध्ययन कर निश्चित समय सीमा में दिए जा सकते हैं।)	45
सरल (सामग्री के अध्ययन के पश्चात् आसानी से संतोषजनक उत्तर दिए जा सकते हैं।)	40

माध्यमिक पाठ्यक्रमः हिन्दी पुस्तक 1 व पुस्तक 2 (एन.आई.ओ.एस)

विषय सूची

पाठ सं0	पाठ का नाम	विधा	लेखक/कवि	पृष्ठ सं0
पाठ 1	बहादुर	(कहानी)	अमरकांत	1
पाठ 2	दोहे	(कविता)	कबीर, रहीम, वृन्द	6
पाठ 3	गिल्लू	(रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा	15
पाठ 4	आह्वान	(कविता)	मैथिलीशरण गुप्त	20
पाठ 5	रॉबर्ट नर्सिंग होम में	(रिपोर्ताज)	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर	25
पाठ 6	भारत की ये बहादुर बेटियाँ	(फ़ीचर)	------	29
पाठ 7	आज़ादी	(कविता)	बालचंद्रन चुल्लिक्काड	33
पाठ 8	चंद्रगहना से लौटती बेर	(कविता)	केदारनाथ अग्रवाल	37
पाठ 9	अख़बार की दुनिया	(गद्य)	------	43
पाठ 10	पढ़ें कैसे	(गद्य)	------	49
पाठ 11	सार कैसे लिखें	(लेखन)	------	53
पाठ 12	इसे जगाओ	(कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र	57
पाठ 13	सुखी राजकुमार	(कहानी)	ऑस्कर वाइल्ड	61
पाठ 14	बूढ़ी पृथ्वी का दुख	(कविता)	निर्मला पुतुल	67
पाठ 15	अंधेर नगरी	(नाटक)	भारतेंदु हरिश्चंद्र	74
पाठ 16	अपना पराया	(वैज्ञानिक लेख)	हरसरन सिंह विश्नोइ	79
पाठ 17	बीती विभावरी जाग री	(कविता)	जयशंकर प्रसाद	84
पाठ 18	नाख़ून क्यों बढ़ते हैं?	(ललित निबंध)	हजारी प्रसाद द्विवेदी	88
पाठ 19	शतरंज के खिलाड़ी	(कहानी)	मुंशी प्रेमचंद	93
पाठ 20	उनको प्रणाम	(कविता)	नागार्जुन	100
पाठ 21	पत्र कैसे लिखें	(लेखन)	------	105
पाठ 22	निबंध कैसे लिखें	(लेखन)	------	109

	व्याकरण भाग	113
	अभ्यास प्रश्न-पत्र-I (हल सहित)	1Page 11 of 48
	अभ्यास प्रश्न-पत्र-II	1Page 12 of 48
	अभ्यास प्रश्न-पत्र-III	1Page 20 of 48
	अभ्यास प्रश्न-पत्र-IV	1Page 29 of 48
	अभ्यास प्रश्न-पत्र-V	1Page 38 of 48

पाठ:1

बहादुर

(कहानी)

लेखक- अमरकांत

सारांश:

बहादुर बारह तेरह वर्ष के लड़के की कहानी है। बहादुर नेपाल और बिहार की सीमा में पड़ने वाले किसी गाँव का रहने वाला है। कहानी के आरंभ में वाचक उसका चित्रात्मक वर्णन करता है। बहादुर के पिता सेना में थे, उनकी मृत्यु हो चुकी है। बहादुर अपनी माँ का इकलौता सहारा है, पर उसका मन काम में नहीं लगता। वह बच्चा है, वह बच्चों जैसी शरारतें करता है, इस पर उसकी माँ उसे पीटती है तो वह घर से भाग जाता है।

बहादुर को नौकर के रूप में वाचक का साला वाचक के घर लेकर आता है। वाचक का परिवार मध्यवर्गीय है। इस परिवार में वाचक की पत्नी निर्मला के अतिरिक्त इनका एक पुत्र किशोर और एक लड़की है। किशोर, बहादुर की उम्र के आसपास का ही है। मध्यवर्गीय परिवारों में बहुत सी चीज़ें दिखावे के लिए लाई जाती हैं, इस परिवार में भी बहादुर दिखावे की चीज़ है।

शुरू-शुरू में निर्मला उसे बड़े स्नेह से रखती है। बहादुर भी ख़ूब मेहनत से घर के काम हँसते-हँसते करता है। किशोर घर का बिगड़ैल लड़का है और बहादुर को मारता, पीटता है, साथ ही गालियाँ भी देता है। उसे वाचक और निर्मला में से कोई नहीं रोकता। आगे चलकर निर्मला भी पड़ोसिन के बहकावे में आकर बहादुर की रोटियाँ बनाना छोड़ देती है।

एक दिन वाचक के एक रिश्तेदार का परिवार वाचक के घर आया और उसने बहादुर पर चोरी का झूठा आरोप लगा दिया, जबकि बहादुर बहुत ईमानदारी से काम कर रहा था। इस दिन वाचक और उसकी पत्नी दोनों बहादुर को पीटते हैं। अगले दिन शाम को वाचक जब लौटकर घर आता है, तो देखता है कि अभी तक अँगीठी जली नहीं थी व आँगन गंदा पड़ा था। बर्तन भी बिना धुले रखे थे तभी वाचक की पत्नी उसे ख़बर देती है कि बहादुर भाग गया।

इसके बाद पूरा परिवार बहादुर के प्रति अपने व्यवहार और उसे पीटने पर पछताता है। वाचक का यह पछतावा हमें अनुभव कराता है कि मध्यवर्गीय परिवारों में मासूम नौकरों के प्रति किया जाने वाला व्यवहार बहुत क्रूर होता है।

बहादुर पर हुए अत्याचार का बुरा लगना इस कहानी का संप्रेष्य है। यह कहानी हमें भी इस बात के लिए तैयार करती है कि हम समाज में रहने वाले नौकरों या उन जैसे अनेक लोगों के प्रति समानुभूति रखें, उन्हें अपने जैसा ही मनुष्य समझें व उन पर अत्याचार न होने दें। ऐसा करने से उनके जीवन की दिशा बदल सकती है और समाज भी अनेक समस्याओं से बच सकता है।

मुख्य बिंदु:

- 'बहादुर' कहानी की कथावस्तु एक मध्यवर्गीय परिवार और उसमें रहने वाले नौकर बहादुर पर आधारित है। इस कहानी में मुख्य पात्र बहादुर, वाचक, निर्मला और किशोर हैं।
- बहादुर संवेदनशील, ईमानदार, मेहनती, हँसमुख और स्वाभिमानी है।
- जो कहानी सुनाता है और खुद कहानी का एक पात्र भी होता है, वह 'वाचक' कहलाता है।

- कोई भी निर्णय भावों के आवेग में या दूसरों के कहने पर नहीं, बल्कि खूब सोच-विचार कर करना चाहिए।
- ईमानदार और मेहनती लोगों को स्नेह देना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए।
- मासूम नौकरों से आवश्यकता से अधिक काम लेकर भी उन पर झूठे आरोप लगाना, अत्याचार करना अपराध है।
- बहादुर जैसे लड़कों के साथ समानुभूति का व्यवहार करना चाहिए। उनसे भावनात्मक संबंध स्थापित करना चाहिए।
- कहानी की भाषा बोलचाल की है। संवाद और भाषा पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं के अनुकूल है। मुहावरों और तत्सम, तद्भव, देशज तथा उर्दू के प्रचलित शब्दों का आवश्यकता के अनुसार उपयोग किया गया है।
- **सहानुभूति**- किसी को दुखी देखकर स्वयं दुखी होना, हमदर्दी रखना।
- **समानुभूति**- जब दूसरे का दुख अपना दुख बन जाए।

उद्देश्य:

- मध्यवर्गीय परिवारों का मासूम नौकरों के प्रति किया जाने वाला व्यवहार बहुत क्रूर होता है। नौकरों के प्रति क्रूरता नहीं करनी चाहिए।
- 'बहादुर पर हुए अत्याचार का बुरा लगना'– यह दर्शाना इस कहानी का उद्देश्य है।
- हम समाज में रहने वाले नौकरों के प्रति समानुभूति रखें व अत्याचार न होने दें।
- जीवन में कोई भी ऐसा कार्य न करें जिसकी वजह से पछतावा या आत्मग्लानि का सामना करना पड़े।
- बाल श्रम एक दंडनीय अपराध है। इस तरफ़ लेखक ने हमारा ध्यान खींचा है।
- मध्यवर्गीय परिवार की मनोवृत्तियों के बारे में बताना भी 'बहादुर' कहानी का उद्देश्य है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ''माँ-बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है'' - यह वाक्य किसका है?

(क) निर्मला का (ख) वाचक का **(ग) बहादुर का** (घ) किशोर का

2. बहादुर ने काम करने से मना कर दिया, क्योंकि–

(क)उसे अपने घर की बहुत याद आने लगी।

(ख) निर्मला ने उसके लिए रोटियाँ नहीं सेंकीं।

(ग) उस पर चोरी का झूठा आरोप लगाया गया।

(घ) किशोर ने उसे गाली दी, जो उसके बाप पर पड़ती थी।

3. कहानी में वाचक किस वर्ग का है?

(क)निम्न (ख) सामंत **(ग) मध्य** (घ) उच्च

4. 'बहादुर' कहानी के अंत में क्या अभिव्यक्त नहीं होता?

(क) घृणा (ख) पछतावा (ग) दुख (घ) अपराध-बोध

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. वाचक के लिए नौकर रखना किन कारणों से आवश्यक था? आपकी दृष्टि में क्या वे कारण उचित थे? उल्लेख कीजिए।

उत्तर:

- वाचक के सभी भाई और रिश्तेदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के यहाँ नौकर थे।
- जब वाचक बहन की शादी में घर गया, तो वहाँ नौकरों का सुख देखा।
- वाचक की दोनों भाभियाँ रानी की तरह बैठकर चारपाइयाँ तोड़ती थीं, जबकि निर्मला को सबेरे से लेकर रात तक काम करना पड़ता था।
- हमारी दृष्टि में वे कारण उचित नहीं थे क्योंकि कोई भी निर्णय भावों के आवेग में या दूसरों के कहने पर नहीं, बल्कि ख़ूब सोच-विचार कर करना चाहिए।

प्रश्न 2. 'बहादुर' कहानी के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:

- मध्यवर्गीय परिवार के बहुत से लोग दूसरों के कहे या दबाव में आ जाते हैं। निर्मला और वाचक भी ऐसे ही पात्र हैं। निर्मला पड़ोस की स्त्री के कहने पर बहादुर के लिए रोटियाँ बनाना छोड़ देती है और वाचक रिश्तेदार के कहने पर बहादुर पर चोरी का शक करता है, उसे मारता है।
- मध्यवर्गीय परिवार कुछ कार्य दिखावे के लिए करता है। उन्हें लगता है कि इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।
- मध्यवर्गीय परिवार के लोगों में सुविधाओं को प्राप्त करने की होड़ लगी रहती है।

प्रश्न 3. जब बहादुर को अपने घर की याद आती थी तो वह क्या करता था ?

उत्तर: जब बहादुर को अपने घर की याद आती थी तो वह कुछ गोलियाँ, पुराने ताश की एक गड्डी, कुछ ख़ूबसूरत पत्थर के टुकड़े, ब्लेड, कागज़ की नाव से कुछ देर तक खेलता। उसके बाद वह धीमे-धीमे स्वर में गुनगुनाने लगता था। उन पहाड़ी गानों की मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती थी।

प्रश्न 4. बहादुर ने काम करने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर: बहादुर ने काम करने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि किशोर बहादुर को उसके बाप पर पड़ने वाली भद्दी गालियाँ देता था, जो उसे बर्दाश्त नहीं होती थी।

प्रश्न 5. बहादुर और किशोर के व्यवहार में अंतर के कारणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर: किशोर और बहादुर लगभग एक ही आयु के हैं। इस आयु-वर्ग के किशोरों में मूलत: समानता होती है लेकिन वातावरण, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थिति आदि के कारण व्यवहार में अंतर आ जाता है। दोनों में समानता यह है कि कोई निर्णय लेते समय दोनों ही सोच-विचार नहीं करते।

प्रश्न 6. बहादुर का चरित्र-चित्रण व व्यक्तित्व की विशेषताएं लिखो।

उत्तर:

बहादुर कहानी का मुख्य पात्र है। वह बारह-तेरह साल का छोटे कद का गोल-मटोल लड़का है। उसका रंग गोरा है, चेहरा चपटा व आँखें छोटी-छोटी हैं। वह गले में रूमाल बाँधता है। बहादुर में बचपन का भोलापन और संवेदनशीलता है। वह घर के लोगों का सम्मान करता है।

बहादुर ईमानदार है। रिश्तेदार जब उस पर चोरी का आरोप लगाते हैं, तो स्वयं वाचक कहता है -''अरे नहीं, वह ऐसा नहीं है।'' जब वह वाचक के घर से भागता है, तो कुछ भी लेकर नहीं जाता।

बहादुर मेहनती और हँसमुख लड़का है। बहादुर घर के सारे काम करता है व हमेशा खुश रहता है। वह किसी की बात का बुरा नहीं मानता व सबको प्रसन्न रखता है। वह फिरकी की तरह काम के लिए घर में इधर से उधर, नाचता-दौड़ता रहता है।

बहादुर स्वाभिमानी है। किशोर द्वारा पिटाई को तो वह सहन कर लेता है परन्तु कोई उसके पिता को गाली दे, यह उससे सहन नहीं होता।

वाचक के अलावा सब उसे मारते हैं, पर वह घर से नहीं भागता। लेकिन जब उसका यह विश्वास टूटता है, तो वह भाग जाता है।

बहादुर में अपने परिवार के प्रति कर्तव्य-बोध भी है। वह अपनी तनख़्वाह के पैसे माँ के पास भेजने के लिए कहता है। कारण पूछने पर जवाब देता है - माँ-बाप का कर्ज़ा तो जन्म भर भरा जाता है।

प्रश्न 7. वाचक का चरित्र-चित्रण व व्यक्तित्व की विशेषताएं लिखो।

उत्तर:

कहानी में दूसरा प्रमुख पात्र वाचक है। उसमें मध्यवर्गीय व्यक्ति के गुण और दोष दोनों हैं। उसके व्यक्तित्व का कोई पक्ष बुरा लगता है तो कोई पक्ष अच्छा।

किशोर द्वारा पीटने और भद्दी गालियाँ देने पर वह बहादुर को बचाता है। निर्मला बहादुर को पीटती है, तो वह निर्मला को समझाने की बजाए उलटे बहादुर को ही डाँटता है।

मध्यवर्ग की तथाकथित सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण लोग दूसरों के कहे में आ जाते हैं। वाचक रिश्तेदार के कहने पर बहादुर पर चोरी का शक करता है व उसे मारता है।

वाचक के व्यक्तित्व का एक रूप और भी है। उसका पछतावा बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह पूरी कहानी ही उसके पछतावे पर लिखी है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

धीरे-धीरे वह घर के सारे काम करने लगा। सबेरे ही उठकर वह बाहर नीम के पेड़ से दातून तोड़ लाता था। वह हाथ का सहारा लिए बिना कुछ दूर तक तने पर दौड़ते हुए चढ़ जाता। मिनट भर में वह पेड़ की पुलई पर नज़र आता। निर्मला छाती पीटकर कहती थी – अरे रीछ-बंदर की जात, कहीं गिर गया तो बड़ा बुरा होगा। वह घर की सफ़ाई करता, कमरों में पोंछा लगाता, अँगीठी जलाता, चाय बनाता और पिलाता। दोपहर में कपड़े धोता और बर्तन मलता। वह रसोई बनवाने की भी ज़िद करता, पर निर्मला स्वयं सब्ज़ी और रोटी बनाती। निर्मला की उसको बहुत फ़िक्र रहती थी। उसकी उन दिनों तबीयत ठीक नहीं रहती थी, इसलिए वह कुछ दवा ले रही थी। बहादुर उसको कोई काम करते देखकर कहता था – माता जी, मेहनत न करो, तकलीफ बढ़ जाएगा। वह, कोई भी काम करता होता, समय होने पर हाथ धोकर भालू की तरह दौड़ता हुआ कमरे में जाता और दवाई का डिब्बा निर्मला के सामने लाकर रख देता।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) गद्यांश का मूलभाव स्पष्ट करके लिखिए।

(iii) बहादुर कौन था? उसकी दो विशेषताएँ लिखिए।

***

पाठ:2 दोहे

(कविता)

कवि: कबीर, रहीम, वृन्द

प्र01 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होइ ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदै सोइ ॥''

उत्तर: कविता का नाम -**दोहे**
कवि का नाम -**कबीर**

सरलार्थ -कबीर कहते हैं कि अगर अच्छे घर-ख़ानदान में पैदा हुए व्यक्ति का व्यवहार और कर्म अच्छे न हों, तो वह उसी प्रकार निंदा का पात्र होता है, जिस प्रकार शराब भरे सोने के कलश को सज्जन निंदनीय समझते हैं।

आदमी की पहचान उसके घर-ख़ानदान से, उसके धनवान और निर्धन होने से नहीं बल्कि उसके आचरण, व्यवहार और चाल-चलन से होती है। अच्छे कर्म करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा और बुरे कर्म करने वाले की निंदा होती है।

काव्य सौंदर्य:

- जब किसी बात को समझाने के लिए जीवन-जगत् के किसी दूसरे व्यवहार को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे दृष्टांत कहते हैं। अत: यहाँ **दृष्टांत अलंकार** का प्रयोग हैं।
- बहुत आसान तरीके से अच्छे कर्म करने की बात कही गई है।
- दोहा छंद है।
- कबीर ने आसान शब्दों और उदाहरणों के माध्यम से नीति व सामाजिक व्यवहार की गूढ़ बातें बताई हैं।
- **तत्सम** शब्द और **तद्भव** शब्द का प्रयोग है।
- भक्तिकालीन रचना है।
- सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है।
- संगीतात्मकता है।
- अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

प्र02 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय ॥''

उत्तर- कविता का नाम -**दोहे**
कवि का नाम -**कबीर**

सरलार्थ -कबीर ने ऐसे आलोचकों को, जो हमारी कमियाँ बताएँ उनसे बचने की नहीं, बल्कि उनको अपने नज़दीक रखने की आवश्यकता पर बल दिया है।

निंदक को तो आँगन में कुटी बनवाकर अपने पास ही रखना चाहिए। निंदा से हमें अपनी कमियों का पता चलता है और हम उन्हें दूर कर लेते हैं। इस प्रकार, साबुन और पानी के बिना ही वे हमारे स्वभाव को निर्मल बना देते हैं।

आदमी को अपनी कमियाँ, कमज़ोरियाँ, बुराइयाँ खुद तो दिखती नहीं। वे आलोचक ही हैं, जिनसे हमें पता चलता है कि हममें कहाँ और क्या कमी है? उनकी सुनें, जिससे हमें अपनी कमियों को दूर कर सकें और अपने स्वभाव को निर्मल बनाए।

काव्य सौंदर्य:

- आलोचकों से बचने की नहीं, बल्कि उनको अपने नज़दीक रखने की आवश्यकता पर बल दिया है।
- साबुन और पानी के बिना ही वे हमारे स्वभाव को निर्मल बना देते हैं।
- 'निंदक नियरे' में 'न' वर्ण की आवृत्ति से **अनुप्रास अलंकार** है।
- प्रस्तुत दोहे में 'आत्म-बोध' और 'विश्लेषणात्मक चिंतन' जैसे जीवन-कौशलों को उभारा गया है।
- दोहा छंद है।
- कबीर ने आसान शब्दों में और उदाहरणों के माध्यम से नीति और सामाजिक व्यवहार की गूढ़ बातें बताई हैं।
- सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है।
- संगीतात्मकता व तुकात्मकता है।

प्र03 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ॥''

उत्तर: कविता का नाम -**दोहे**
कवि का नाम -**कबीरदास**

सरलार्थ -कबीर ने अपने इस दोहे में गुरु-शिष्य संबंध और गुरु के कार्य के विषय में बताया है। जिस प्रकार कुम्हार घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य को तैयार करता है। कबीर कहते हैं कि गुरु कुम्हार है और उसकी रचना यानी उसका शिष्य घड़ा है।

गुरु का व्यवहार ऊपर से तो कठोर लगता है, पर आंतरिक रूप से बड़ा स्नेहपूर्ण होता है। वह अपने शिष्य की तमाम कमियों और कमज़ोरियों को अपने कठोर नियंत्रण से दूर कर देता है और उसे ज्ञान देने के साथ-साथ आत्मिक और चारित्रिक रूप से भी दृढ़ बना देता है।

काव्य सौंदर्य:

- ज्ञान की सामाजिक उपयोगिता यानी व्यवहार की कसौटी पर ज्ञान के खरे उतरने पर बल दिया है।

- कबीर ने अपने दोहे में गुरु को अत्यधिक महत्त्व दिया है।
- दोहा छंद है।
- कबीर ने आसान शब्दों में और उदाहरणों के माध्यम से नीति और सामाजिक व्यवहार की गूढ़ बातें बताई हैं।
- सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है।
- संगीतात्मकता व तुकात्मकता है।
- 'गढ़ि-गढ़ि' में पुनरूक्ति प्रकाश अंलकार है।
- 'बाहर बाहै' में 'ब' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

प्र04 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम ।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ॥''

उत्तर- कविता का नाम -**दोहे**
कवि का नाम - **संत कबीरदास**

सरलार्थ -कबीर कहते हैं कि यदि नाव में पानी भरने लगे और घर में पैसे की अधिकता होने लगे, तो समझदारी इसी में है कि दोनों हाथों से उलीचना शुरू कर दीजिए।
तात्पर्य यह है कि नाव में पानी बढ़ने पर उसका डूबना निश्चित है, इसलिए जैसे ही पानी भरने लगता है, नाविक उसे दोनों हथेलियाँ मिलाकर अंजुरी बनाकर पानी को बाहर फेंकने लगता है।
उसी प्रकार घर के अंदर आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ने लगे, तो समझदार व्यक्ति को अंजुरी भर-भर कर उसे बाहर कर देना चाहिए अर्थात् दान कर देना चाहिए, क्योंकि धन की अधिकता अपने साथ ऐसी विकृतियाँ लेकर आती है, जिससे घर का विनाश होना निश्चित होता है।

काव्य सौंदर्य:

- घर के अंदर आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ने लगे, तो समझदार व्यक्ति को उसे दान कर देना चाहिए।
- नीतिगत उपदेश को सरल और बोधगम्य बना दिया गया है।
- 'सयानो काम' का अर्थ है– समझदारी का काम।
- कबीर ने धन की आवश्यकता को नकारा नहीं है, उसकी अधिकता को हानिकारक बताया है।
- दोहा छंद है।
- भक्तिकालीन रचना है।
- सधुक्कड़ी भाषा है।
- गेयता की विशेषता है।
- 'जो जल' में 'ज' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

प्र05 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन''।।

उत्तर- कविता का नाम - **दोहे**
कवि का नाम -**रहीम**

सरलार्थ -कवि ने कोयल को ज्ञानवान व्यक्ति के प्रतीक के रूप में और मेंढक को शोर-शराबा करके ध्यान खींचने वालों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। रहीम कहते हैं कि पावस अर्थात् वर्षा ऋतु के आने पर कोयल अपने मन में यह विचार करके मौन साध लेती है कि अब तो मेंढक वक्ता हो गए हैं। जानकारी न रखते हुए भी बढ़-चढ़कर बात करने लगे हैं ।

जब कम जानकार या अज्ञानी लोग बढ़-चढ़ कर बातें करते हुए महत्त्व पाने लगते हैं, तब ज्ञानी लोग मौन धारण कर लेते हैं; क्योंकि उनका स्वर इस शोर-शराबे में दबकर रह जाता है और न सुने जाने के कारण उनकी बात का उचित प्रभाव नहीं पड़ता।

अनुकूल अवसर मिलते ही विद्वान को फिर ज्ञान और मानव-कल्याण की बातें कहनी चाहिएँ, अर्थात विद्वान अनुकूल अवसर पर ही अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करते हैं।

काव्य सौंदर्य:

- कोयल को ज्ञानवान और मेंढक को शोर-शराबा करने वालों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।
- ज्ञानी लोग अनुकूल अवसर पर ही अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करते हैं।
- जहाँ साधारण तौर पर एक बात कही जाए, पर उसका अर्थ बिल्कुल भिन्न या अप्रत्यक्ष निकलता हो, वहाँ **अन्योक्ति अलंकार** होता है। प्रस्तुत दोहे में अन्योक्ति का बहुत सुंदर और सटीक प्रयोग है।
- 'अब दादुर बक्ता भए' में 'बक्ता' शब्द में व्यंजना का सौंदर्य निहित है।
- दोहा छंद है।
- भक्तिकालीन दोहा है।
- संगीतात्मकता व गेयता है।
- अंत्यानुप्रास अलंकार है।
- ब्रज भाषा का प्रयोग है।

प्र06 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''खैर, खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान''।।''

उत्तर- कविता का नाम - **दोहे**
कवि का नाम -**रहीम**

सरलार्थ-इस दोहे में सात चीज़ों या बातों का उल्लेख है। वे हैं- खैर यानी कत्था, खून, खाँसी, खुशी, वैर यानी दुश्मनी, प्रेम और मद-पान यानी नशीली चीज़ का सेवन।

रहीम कहते हैं कि ये सात बातें दबाने से भी नहीं दबती यानी जग ज़ाहिर हो जाती हैं। दुनिया जानती है कि इन सातों को छिपाया नहीं जा सकता। ये सभी समय आने पर प्रकट हो ही जाती हैं।

खैर यानी कत्था पान में प्रयोग किया जाता है और होठों को लाल करके अपनी उपस्थिति प्रकट कर देता है। खून भी अपने रंग को ऐसा छोड़ देता है कि उसे छिपाना संभव नहीं होता। खाँसी को भी दबाया नहीं जा सकता।

ऐसे लोग जिनकी आपस में नहीं बनती और मौका पाते ही वे एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने से नहीं चूकते। इसी को वैर कहते हैं। उनका हाव-भाव और व्यवहार सभी के सामने उनके संबंधों को स्पष्ट कर देता है। किसी के प्रति प्रेम का भाव भी आँखों की चमक, बोलने के तरीके और व्यवहार से प्रकट हो जाता है। नशेड़ियों या शराबियों की चाल-ढाल, बोलने का तरीका अपने आप शराब पीने की बात ज़ाहिर कर देता है। जिन सात बातों की चर्चा इस दोहे में की गई है, वे स्वयं ही अपने आपको व्यक्त कर देती हैं। उन्हें छिपाया नहीं जा सकता।

काव्य सौंदर्य:

- रहीम कहते हैं कि उपरोक्त सात चीजों को छिपाया नहीं जा सकता। ये सभी समय आने पर प्रकट हो ही जाती हैं।
- 'खैर, खून, खाँसी, खुसी' में 'ख' वर्ण का दुहराव से **अनुप्रास अलंकार** है।
- दोहा छंद है।
- संगीतात्मकता व गेयता की विशेषता है।
- ब्रज भाषा का प्रयोग है।
- तत्सम, तद्भव व आगत शब्दों का प्रयोग है।

प्र07 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''करत-करत अभ्यास तें, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तें, सिल पर परत निसान''॥

उत्तर- कविता का नाम -**दोहे**
कवि का नाम -**वृंद**

सरलार्थ -कवि ने कहा है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानवान बन जाता है। कवि ने मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग किया है। **जड़मति का अर्थ है** जिसकी बुद्धि का विकास न हुआ हो या जो मूर्ख हो।

सुजान का अर्थ है चतुर, बुद्धिमान, विद्वान। कवि कहता है कि बार-बार अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी चतुर और ज्ञानवान बन जाता है। ठीक उसी तरह, जैसे रस्सी के निरंतर आने-जाने से पत्थर पर उसका निशान बन जाता है। इसीलिए, किसी भी काम में सफलता पाने के लिए अभ्यास करना ज़रूरी है।

काव्य सौंदर्य:

- निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानवान बन जाता है।
- किसी भी काम में सफलता पाने के लिए अभ्यास करना ज़रूरी है।

- जड़मति से सुजान बनने की प्रक्रिया के लिए दैनिक व्यवहार के उदाहरण 'सिल पर परत निसान' का प्रयोग किया गया है, इसलिए यहाँ **दृष्टांत अलंकार** है।
- भाषा ब्रज है।
- दोहा छंद है।
- तुकांतता, लयात्मकता व गेयता की विशेषता है।
- 'करत-करत' में **पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार** है।
- 'पर परत' 'आवत-जात' में 'प' व 'त' वर्ण की आवृत्ति से **अनुप्रास अलंकार** है।

प्र08 निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''नैना देत बताय सब,हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत॥''

उत्तर- कविता का नाम - **दोहे**
कवि का नाम -**वृंद**

सरलार्थ-आरसी का अर्थ है शीशा या आईना। आरसी एक आभूषण का भी नाम है, जिसे स्त्रियाँ अँगूठे में पहना करती थीं। इसमें एक शीशा लगा होता था।

इस दोहे का अर्थ है कि आदमी के नयन यानी उसकी आँखें उसके हृदय में विद्यमान हित या अहित के भाव को पूरी तरह व्यक्त कर देती हैं। ठीक उसी तरह जैसे स्वच्छ आरसी भले या बुरे रूप-रंग को व्यक्त कर देती है।

अर्थ यह है कि आदमी की आँखों से उसके मन के भावों का पता चल जाता है। प्रेम करने वालों की आँखों में चमक होती है। क्रोध हो, तो आँखें लाल हो जाती हैं। अगर शोक है, तो आँसू उमड़ आते हैं, वगैरह... वगैरह। आँखें ही व्यक्ति के मन के भाव को ठीक-ठीक प्रकट करती हैं।

काव्य सौंदर्य:

- आरसी एक आभूषण का नाम है, जिसे स्त्रियाँ अँगूठे में पहना करती थीं।
- आदमी की आँखों से उसके मन के भावों का पता चल जाता है।
- 'नैना' शब्द संस्कृत के नयन से बना है, यह तद्भव रूप है। हित से हेत और अहित से अहेत भी ऐसे ही प्रयोग हैं।
- दृष्टांत अलंकार है। दोहा छंद है।
- संगीतात्मकता, लयात्मकता व गेयता का गुण विद्यमान है।
- भाषा ब्रज है।
- आँखों के महत्व को दर्शाया गया है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कबीर के अनुसार ऊँचे कुल में जन्म लेने पर भी आदमी निंदा का पात्र होता है, जब वह-

क) अच्छे कर्म नहीं करता।

ख) सुरापान करता है।

ग) साधुओं का सत्संग करता है।

घ) धन को इकट्ठा नहीं होने देता।

2. कबीर ने दोहे में जल की तुलना किससे की है?

क) नाव से

ख) धन से

ग) हाथों से

घ) सयानेपन से

3. 'अब दादुर बक्ता भए' से कवि का क्या आशय है?

क) मूर्ख मंच पर आ पहुँचे।

ख) समझदारों की इज्ज़त होती है।

ग) मेंढकों ने कूकना शुरू कर दिया।

घ) कोयल ने मौन साध लिया।

4. **''पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन।**
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।।''

- ऊपर दिए गए दोहे में कौन-सा अलंकार है?

क) दृष्टांत

ख) उपमा

ग) रूपक

घ) अन्योक्ति

5. अभ्यास करने का अर्थ होता है:

क) किसी काम को जल्दी करने लगना

ख) कार्य-कारण संबंध सीख जाना

ग) निरंतर कार्य करके उसमें कुशलता पाना

घ) बहस करके सीख जाना

प्रश्नोत्तर

प्र0 1. सुबरन कलस और सुरा की तुलना किससे की गई है?
उत्तर-सुबरन कलस और सुरा की तुलना मनुष्य के तन और उसमें बुराइयों से की गई है।

प्र0 2. कबीर ने अपने दोहे में कुम्हार और घड़े के माध्यम से क्या समझाने की कोशिश की है?
उत्तर- कबीर कहते हैं कि गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा है। जिस प्रकार कुम्हार घड़ा बनाता हैं, उसी प्रकार गुरु शिष्य को तैयार करता है।

प्र0 3. कबीर ने गुरु शिष्य के संबंध का आदर्श रूप किसे बताया है और क्यों?
उत्तर- कबीर ने गुरु शिष्य के संबंध का आदर्श रूप बताया है कि गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा है क्योंकि घड़े में अगर नन्हे-नन्हे छेद रह जाएँ, तो उससे पानी रिसेगा और उसकी उपयोगिता कम या समाप्त हो जाएगी, वैसे ही शिष्य अगर आचरण या व्यवहार पर खरा नहीं उतरेगा, तो उसकी भी सामाजिक उपयोगिता नहीं रहेगी।

प्र0 4. घर में बाढ़ै दाम से कबीर का क्या आशय है?
उत्तर- घर में बाढ़ै दाम से कबीर का आशय है कि घर के अंदर आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ना।

प्र0 5. धन संग्रह आवश्यकता के अनुकूल ही क्यों अच्छा होता है? कबीर के कथन का आशय बताइए।
उत्तर- धन संग्रह आवश्यकता के अनुकूल ही अच्छा होता है क्योंकि कबीर कहते है कि घर के अंदर आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ने लगे, तो समझदार व्यक्ति को अंजुरी भर-भर कर उसे बाहर कर देना चाहिए अर्थात् दान कर देना चाहिए, क्योंकि धन की अधिकता अपने साथ ऐसी विकृतियाँ लेकर आता है, जिससे घर का विनाश होना निश्चित होता है।

प्र0 6. 'अब दादुर बक्ता भए' में रहीम ने दादुर और कोयल से किनकी ओर संकेत किया है? दोनों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर- कवि ने कोयल को ज्ञानवान व्यक्ति के प्रतीक के रूप में और मेंढक को शोर-शराबा करके ध्यान खींचने वालों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।
जब कम जानकार या अज्ञानी लोग बढ़-चढ़ कर बातें करते हुए महत्त्व पाने लगते हैं, तब ज्ञानी लोग मौन धारण कर लेते हैं क्योंकि उनका स्वर इस शोर-शराबे में दबकर रह जाता है और न सुने जाने के कारण उनकी बात का उचित प्रभाव नहीं पड़ता।

प्र0 7. कवि रहीम के अनुसार कोयल मेंढक की वाणी सुनकर चुप हो जाती है। यहाँ कोयल और मेंढक किसके प्रतीक हैं?

उत्तर- कवि रहीम के अनुसार कोयल मेंढक की वाणी सुनकर चुप हो जाती है। कवि ने कोयल को ज्ञानवान व्यक्ति के प्रतीक के रूप में और मेंढक को शोर-शराबा करके ध्यान खींचने वालों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्र0 8. कवि वृंद ने 'जड़मति होत सुजान' दोहे के माध्यम से विद्यार्थियों को क्या संदेश दिया है?

उत्तर- कवि ने इस दोहे के माध्यम से विद्यार्थियों को यह संदेश दिया है कि निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी चतुर और ज्ञानवान बन जाता है।

प्र0 9. कवि वृंद के दोहे 'करत-करत अभ्यास तें, जड़मति होत सुजान' में अभ्यास शब्द से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- करत-करत अभ्यास से तात्पर्य है- **निरंतर कार्य करके उसमें कुशलता पाना।**

पाठः 3

गिल्लू

(रेखाचित्र)

लेखिका - महादेवी वर्मा

सारांशः

इस रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने एक छोटे-से जीव गिलहरी (गिल्लू) के साथ जुड़ी अपनी यादों का उल्लेख किया है। कौवों की चोंच के प्रहार से घायल गिल्लू उन्हें अपने घर के आँगन में मिला। काफ़ी उपचार व देखभाल करके उन्होंने गिल्लू को पूरी तरह स्वस्थ कर लिया। धीरे-धीरे दोनों में आत्मीय संबंध बनते चले गए।

गिल्लू हमेशा लेखिका के आसपास ही रहा करता था। वह अक्सर अपनी शरारतों द्वारा लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता रहता था।

लेखिका को गिल्लू की हरकतों से यह अनुभव हुआ कि उसे अपने साथियों के साथ उछल-कूद करने के लिए आज़ाद किया जाना चाहिए, तो उन्होंने खिड़की की जाली का कोना खोल दिया। गिल्लू दिन-भर बाहर घूमता और लेखिका के घर आते ही घर में वापस आ जाता।

लेखिका जब अस्वस्थ होने के कारण अस्पताल में रही, गिल्लू घर पर बहुत उदास रहता। अपना मनपसंद भोजन काजू भी नहीं खाता। लेखिका जब घर वापस आई, तो उसके सिरहाने बैठकर उसके बालों को ऐसे सहलाता, मानो कोई सेविका देखभाल कर रही हो।

गिलहरी की आयु (जीवन अवधि) लगभग दो वर्ष की होती है। गिल्लू अपने अंतिम समय में अपनी डलिया से उतरकर महादेवी के पास आ गया। महादेवी ने उसे अपनी हथेली में रखकर बचाने का प्रयास भी किया, पर वह नहीं बचा।

उसकी मृत्यु के पश्चात् भी महादेवी को ऐसा लगता रहा कि फिर वह कहीं से अचानक आकर उन्हें चौंका देगा। गिल्लू की हर छोटी-बड़ी बात उन्हें याद आती रहती।

मुख्य बिंदुः

- लेखिका सोनजुही की लता को देखती है, तो उसे गिल्लू की याद आती है। गिल्लू सोनजुही की छाया में बैठता था। लेखिका जब नजदीक आती थी, तो अचानक कूदकर उसे चौंका देता था। गिल्लू की समाधि भी सोनजुही के नीचे दी गई, इसीलिए सोनजुही में आए फूल को देखकर लेखिका को गिल्लू की याद आती है।
- लेखिका ने पहली बार गिल्लू को तब देखा, जब वह अपने घोंसले से गिरकर घायल हो गया था और कौवे उस पर अपनी चोंचों से प्रहार कर रहे थे। लेखिका ने इस स्थिति का वर्णन करते हुए कौवों के स्वभाव का व्यंग्यात्मक वर्णन किया है। वह कौवों की अंतर्विरोधी स्थिति का भी उल्लेख करती है।

- लेखिका अपने करुणा-भाव और समानुभूति के कारण गिल्लू का उपचार करके उसे नया जीवन देती है। गिल्लू के प्रति करुणा और समानुभूति ही लेखिका और गिल्लू के आत्मीय संबंध का आधार है।
- लेखिका के वर्णन से पता लगता है कि जिस प्रकार मनुष्य में उम्र के अनुसार शारीरिक एवं व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं, वैसे ही अधिकांश मानवेतर प्राणियों में भी ये परिवर्तन होते हैं।
- इस रेखाचित्र का अंत बहुत मार्मिक है।
- रेखाचित्र की भाषा-शैली आत्मकथात्मक, सहज, सरल और चित्रात्मक है। भाषा प्रवाहपूर्ण है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'लघु प्राण' व 'लघु गात' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

क) चिड़िया ख) सोनजुही **ग) गिल्लू** घ) कली

2. लेखिका गिल्लू को अपने कमरे में क्यों लाई?

क) अन्य पशु-पक्षियों से मिलाने के लिए **ख) उसका जीवन बचाने के लिए**

ग) अपने घर के लोगों को दिखाने के लिए घ) उसे पालतू बनाने के लिए

3. लेखिका ने खिड़की की जाली का एक कोना खोल दिया ताकि–

क) बाहर की गिलहरियाँ अंदर आ सकें। ख) बाहर से ठंडी हवा आ सके।

ग) गिल्लू आज़ादी से अंदर-बाहर आ-जा सके। घ) नीम-चमेली की गंध कमरे में आ सके।

4. गिल्लू' रेखाचित्र के साथ-साथ और किस विधा के नज़दीक है?

क) लघु कथा **ख) संस्मरण** ग) डायरी घ) रिपोर्ताज

5. लेखिका के प्रति गिल्लू की समानुभूति का पता किस बात से लगता है–

क) कमरा खुलने पर दौड़कर आने पर लेखिका को न पाकर वापस लौट जाने से

ख) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा काजू देने पर प्राय: उन्हें न खाने से

ग) लेखिका के बालों को अपने नन्हे-नन्हे पंजों से सहलाने से

घ) लेखिका के पास सुराही पर लेट जाने का तरीका खोजने से

6. मनुष्य की तरह गिल्लू भी अपनी समस्याओं का समाधान कर लेता था– किस घटना से यह पता चलता है?

क) थाली में बैठकर खाने से **ख) सुराही पर सोने से** ग) लेखिका का सिर सहलाने से घ) काजू कम खाने से

7. 'गिल्लू' रेखाचित्र का अंत–

क) भावुकतापूर्ण है ख) वैचारिक है ग) हताशाजन्य है घ) उत्साहजनक है

8. गिल्लू ने अपने अंतिम समय में लेखिका की उँगली क्यों पकड़ ली थी?

क) वह लेखिका से पुनः प्राण-रक्षा की अपेक्षा करता था।

ख) वह लेखिका के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट कर रहा था।

ग) वह लेखिका के हाथ से काजू खाना चाहता था।

घ) वह लेखिका की उँगली पकड़कर मरना चाहता था।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखिका ने गिल्लू पाठ के आरंभ में ही सोनजुही की पीली कली को क्यों याद किया है- उल्लेख कीजिए।

उत्तर- लेखिका सोनजुही को देखती है, तो उसे गिल्लू की याद आती है। गिल्लू सोनजुही की छाया में बैठता था। लेखिका जब नज़दीक आती थी, तो अचानक कूदकर उसे चौंका देता था। गिल्लू को समाधि भी सोनजुही के नीचे दी गई थी, इसीलिए सोनजुही में आए फूल को देखकर लेखिका को गिल्लू की याद आती है।

प्रश्न 2. घाव ठीक होने के पश्चात गिल्लू में कैसा परिवर्तन दिखाई पड़ा- उल्लेख कीजिए।

उत्तर- घाव ठीक होने के पश्चात गिल्लू इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि वह लेखिका की उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़ कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा। गिल्लू लेखिका के साथ निकटता प्राप्त करने के लिए उछल-कूद करने लगा।

तीन चार मास में गिल्लू के स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगी।

प्रश्न 3. गिल्लू की कौन-सी बात आपको अच्छी लगी और क्यों?

उत्तर- गिल्लू की बहुत सी बातें हमें अच्छी लगी जैसे लेखिका की निकटता प्राप्त करने के लिए सुराही पर लेटना, नन्हें पंजों से बीमार लेखिका के बालों को सहलाना, लेखिका के बीमार पड़ने पर अपने पसंदीदा काजू को न खाना, लेखिका की थाली से खाना खाना, अंतिम समय में लेखिका की अँगुली को पकड़ना आदि। ये सभी बातें हमें सिखाती है कि करूणा और समानुभूति के माध्यम से हम किसी को भी अपना बना सकते हैं।

प्रश्न 4. गिल्लू रेखाचित्र की भाषा की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-

- भाषा सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण है।
- लेखिका ने इसमें आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है।
- इसकी भाषा में ऐसी अभिव्यक्तियों और वाक्यांशों का प्रयोग किया गया है, जिससे पढ़ते समय आनंद की अनुभूति होती है।
- चित्रात्मकता, प्रवाहपूर्णता व प्रवाहमयता का गुण है।
- शैली आत्मकथात्मक है।

प्रश्न 5. गिलहरियों में किशोरावस्था का आगमन कितने माह में होता है?

उत्तर- गिलहरियों में किशोरावस्था का आगमन तीन-चार माह में होता है।

प्रश्न 6. 'काकभुशुंडि' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर- 'काकभुशुंडि' शब्द 'कौआ, एक ऋषि के नाम' के लिए प्रयुक्त हुआ है जिनकी बुद्धि और ज्ञान की प्रशंसा भारतीय परंपरा में की जाती है।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट करो ।

क) "परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।"

उत्तर- लेखिका ने गिल्लू की मृत्यु का बहुत ही मार्मिक वर्णन किया है। आमतौर पर हम अपने किसी बहुत ही प्रिय की मृत्यु के बाद यह नहीं कहते कि 'वह मर गया' या 'वह मर गयी'। सामान्य शिष्टाचार में हम उसके लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं जैसे– 'भगवान को प्यारे हो गये', 'हमें छोड़कर चली गई', 'उनका स्वर्गवास हो गया' आदि। लेखिका ने प्रेम के वशीभूत होकर ही गिल्लू की मृत्यु पर यह वाक्य प्रयोग किया है–'वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।'

प्रश्न 8. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में आए पशु-पक्षियों के नाम लिखो।

उत्तर:

1. नीलकंठ - मोर
2. गौरा - गाय
3. सोना - हिरन
4. गिल्लू - गिलहरी

प्रश्न 9. लिंग बदलो:

1. शेर - शेरनी
2. मोर - मोरनी
3. घोड़ा - घोड़ी
4. कुत्ता - कुतिया
5. बिल्ली - बिलौटा
6. हाथी - हथिनी
7. माली - मालिन
8. गिलहरी - नर गिलहरी
9. चींटी - नर चींटी
10. भेड़िया - मादा भेड़िया

प्रश्न 10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

उसी बीच मुझे मोटर-दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतर कर दौड़ता और फ़िर किसी दूसरे को देख कर तेज़ी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठ कर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) गद्यांश का मूलभाव स्पष्ट करके लिखिए।

(iii) गिल्लू का काजू तक न खाना- उसके किस गुण को उजागर करता है?

***

पाठ:4 आह्वान

(कविता)

कवि: मैथिलीशरण गुप्त

मूलभाव:

- यह कविता 1912 ई. के आसपास तब लिखी गयी, जब हमारा देश गुलाम था। देश के लोगों में हताशा, निराशा और निष्क्रियता थी। ऐसे में भाग्यवादी हो जाने का खतरा भी होता है।
- इस कविता में कवि ने भाग्य के भरोसे आलसी बनकर व्यर्थ बैठे रहने की जगह कर्मशील होकर आगे बढ़ने का आह्वान किया है।
- जीवन में सफलता पाने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक होता है। कवि ने देश के उत्थान के लिए लोगों में एकजुटता के आधार पर संघर्ष करने की भावना जगाने का प्रयास किया है।
- यदि देश के लोग एक होकर आगे बढ़ने का प्रयास करें तो धर्म, संप्रदाय और क्षेत्रीय आधार पर भिन्नता किसी देश के विकास की राह में बाधा नहीं बन सकती।

मुख्य बिन्दु:

- भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठना आलस्य की पहचान है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है, जो परिश्रमी एवं कर्मशील होते हैं।
- विकास करने के लिए कर्मशील होना आवश्यक है। संसार में अनेक देश ऐसे हैं, जो पहले पिछड़े थे, लेकिन अब अपनी कर्मशीलता के कारण विकसित हो गए हैं।
- आलस्य के साथ विकास संभव नहीं है।
- पतन के लिए भाग्य को दोष देना उचित नहीं है।
- विविधता में एकता है। एकजुट होकर ही देश का उत्थान संभव है।

काव्यांश:1

"बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरुष का पढ़ो!
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं"

सरलार्थ:

यह कविता सन् 1912 के आस-पास, तब लिखी गई थी जब हमारा देश गुलाम था। कवि को आशंका थी कि देश की जनता निराश होकर भाग्यवादी न बन जाए अर्थात् भाग्य के भरोसे न बैठ जाए। अत: इस कविता के माध्यम से वह देश की जनता को जगाकर कर्म और संघर्ष की प्रेरणा देता है।

कवि कहता है कि अगर अपने दुखों से मुक्ति पाना चाहते हो तो उठो और सफलता की चोटी छूने के लिए चल पड़ो। भाग्य के बदलने या परिस्थितियाँ सुधरने की प्रतीक्षा में बैठे रहना छोड़ो।

कवि फिर कहता है- तुम जानते हो कि सामने रखा निवाला भी अपने-आप मुँह में नहीं जाता, उसके लिए भी प्रयास करना पड़ता है।

कवि खेद प्रकट करते हुए कहता है कि यह सब जानते हुए भी हम दुख से मुक्त होने के लिए उद्यम नहीं करते। यह आवश्यक है कि हम समस्त देशवासी निराशा के अंधकार से बाहर निकलें, सुस्ती की जकड़न को तोड़ फेंके और देश की दशा सुधारने के लिए हर संभव प्रयत्न में जुट जाएँ।

काव्यांश:2

निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करो?

"जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं"

उत्तर: कविता का नाम- **आह्वान**
कवि का नाम- **मैथिलीशरण गुप्त**

सरलार्थ:

कवि ने इसमें भारतवासियों को कर्म का पाठ पढ़ाने का प्रयास किया है, जो लोग पीछे थे, वे आगे बढ़ गए हैं और बढ़ते जा रहे हैं। प्रगति के पथ पर अग्रसर अन्य देशों की ओर इशारा करते हुए कवि कहता है कि वे लोग आगे बढ़ रहे हैं और हम शासकों के दमन से भयभीत, हताश और निराश होकर भाग्य के भरोसे बैठे हैं। बदलते हुए समय के अनुसार अपने को बदलने के लिए परिश्रम नहीं करते और अपनी हर असफलता के लिए भाग्य को दोषी मानते हैं। जिस तरह दीपक को जलाने के लिए तेल का होना आवश्यक है, उसी प्रकार किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक है। कवि एक दूसरे उदाहरण से समझाते हुए कहता है कि मूर्ति ढालने या बनाने से पहले उसका साँचा या फर्मा बनाना आवश्यक होता है और यह साँचा मनुष्य अपने परिश्रम से बनाता है।

काव्य सौंदर्य:

- कवि देश की जनता का उद्बोधन करके उनका आह्वान करता है।
- कर्म और परिश्रम के संबंध की व्याख्या की गई है।
- जीवन में उन्नति के लिए पुरुषार्थ के महत्व को दर्शाया गया है।
- कोई भी वस्तु बिना प्रयास के प्राप्त नहीं होती।
- राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है।
- 'कर्म रूपी तेल' व 'भाग्य रूपी दीपक' - में रूपक अलंकार का सुंदर प्रयोग किया है।
- तुकान्तता व लयात्मकता है।
- सहज, सरल व खड़ी बोली का प्रयोग है।
- काव्यांश की भाषा ओजपूर्ण है।
- 'पीछे पड़े' में 'प' वर्ण की आवृति से अनुप्रास अलंकार है।

काव्यांश:3

"आओ, मिलें सब देश-बांधव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?"

सरलार्थ:

भारत अनेक धर्मों, जातियों एवं संप्रदायों का देश है। जब तक सब लोग एकजुट होकर देश के विकास के लिए कार्य नहीं करेंगे, तब तक देश गुलामी, गरीबी और पिछड़ेपन से मुक्त नहीं हो सकता। हम अलग-अलग जातियों व संप्रदायों से जुड़े हुए हैं, पर भारत के नागरिक होने के नाते हम सब भाई-भाई हैं। इसलिए हम सबको मिलकर देश को एकता के सूत्र में बाँधना है। इसके लिए हमें एक होकर संघर्ष करना पड़ेगा। समृद्धि और शांति लाने के लिए हमें मिलजुल कर कठिन परिश्रम करना होगा।

कवि कहना चाहता है कि भिन्नता एकता के मार्ग में बाधक नहीं है। हम एक देश के होने के नाते एक हो सकते हैं। इसी तरह वह कहता है कि क्या अलग-अलग प्रकार के फूलों को इकट्ठा करके एक माला नहीं बनाई जा सकती? आशय है- बनाई जा सकती है। जिस प्रकार यह हो सकता है, वैसे ही हम सब भी एक हो सकते हैं।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि ने किन्हें पौरुष का पाठ पढ़ने के लिए कहा है?

(क) आलसी लोगों को
(ख) भाग्य का विरोध करने वालों को
(ग) आगे बढ़ने वालों को
(घ) ऊँचे चढ़ रहे लोगों को

2. जो भाग्य के भरोसे रहता है उसे क्या कहते हैं?

(क) भाग्यहीन
(ख) भाग्यवादी
(ग) भाग्यवान
(घ) भाग्यशाली

3. कर्म के बारे में क्या सच नहीं है?

(क) स्वस्थ, चुस्त और सतर्क बनाता है।
(ख) आराम करने का अवसर प्रदान करता है।
(ग) कठिनाइयों से मुक्ति दिलाता है।
(घ) एक सफल मनुष्य बनाता है।

4. जो लोग कभी पीछे थे वे कैसे आगे बढ़ गए?

(क) भाग्य के सहारे
(ख) ईश्वर की कृपा से
(ग) साँचे में ढलकर
(घ) कठिन परिश्रम करके

5. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द कष्ट की स्थिति में प्रयुक्त नहीं होता–

(क) हाय (ख) आह

(ग) ओह **(घ) अहा**

6. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों को उनके सामने कोष्ठक में दिये गए दो विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए:

1. पश्चिम के लोग ..... के बल पर ही हर क्षेत्र में विकास कर सके हैं। (**परिश्रम**/सुविधाओं)
2. परिश्रम न करने पर यदि हम असफल हुए तो इसके लिए ..... दोषी हैं। (भगवान/परिस्थितियाँ/**हम स्वयं**)
3. कर्मरूपी .....(भाग्य/**तेल**) के बिना भाग्यरूपी ..... (**दीप**/भाग्य) नहीं जल सकता।
4. .....(साँचा/**मूर्ति**) बनाने की अपेक्षा ..... बनाने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। (साँचा/**मूर्ति**)

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भाग्य के भरोसे रहने वालों को क्या कहा गया है?

उत्तर: भाग्य के भरोसे रहने वालों को भाग्यवादी कहा गया है ।

प्रश्न 2. 'आह्वान' कविता में एकता को गले का हार किस अर्थ में कहा है?

उत्तर: कवि ने एकता को गले का हार कहा है। जिस तरह अनेक प्रकार के फूलों से एक माला बन सकती है, ठीक उसी प्रकार विभिन्न धर्मों के अलग-अलग प्रदेशों में रहने वाले लोग मिलकर देश को एक बनाकर उसे बेहतर ढंग से मज़बूत कर सकते हैं।

प्रश्न 3. 'आह्वान' कविता में 'आगे बढ़ो ऊँचे चढ़ो' पंक्ति द्वारा देशवासियों को कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर: 1. 'आह्वान' कविता में 'आगे बढ़ो और ऊँचे चढ़ो' का प्रयोग पहल करने, विकास करने या प्रगति करने का संदेश निहित है।

2. इस पंक्ति में यह बात कही गई कि कोई भी वस्तु बिना प्रयास के प्राप्त नहीं होती।

प्रश्न 4. 'पाठ पौरुष का पढ़ो' कथन से कवि का क्या आशय है?

उत्तर: इस कविता में कवि ने भारतवासियों को कर्म का पाठ पढ़ने का आह्वान किया है। 'पाठ पौरुष का पढ़ो' कथन से कवि का आशय कर्म या पुरुषार्थ के मार्ग पर चलने से है। परिस्थितियाँ अपने आप नहीं बदलतीं, उन्हें मनुष्य अपने उद्यम से बदल सकता है।

प्रश्न 5. 'आह्वान' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि हमारे देश की अनेकता हमारे देश की एकता में बाधक नहीं है?

उत्तर: भारत अनेकता में एकता वाला देश है। यहाँ पर अनेक धर्मों, संप्रदायों और जातियों के लोग रहते हैं, लेकिन इनकी अनेकता देश की एकता में बाधक नहीं है। सभी लोग देश के लिए एक होकर उसका विकास कर सकते हैं। जिस तरह अनेक प्रकार के फूलों से एक माला बन सकती है, ठीक उसी प्रकार विभिन्न धर्मों के अलग-अलग प्रदेशों में रहने वाले लोग मिलकर देश को एक बनाकर उसे बेहतर ढंग से मज़बूत कर सकते हैं।

प्रश्न 6. 'पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं' आह्वान कविता के आधार पर कवि ने उक्त पंक्ति द्वारा क्या संदेश दिया है?

उत्तर: आलसी लोग कर्म नहीं करते और विपत्ति आने पर केवल भाग्य को दोष देते हैं। ऐसे लोग नहीं जानते कि कर्म-रूपी तेल के बिना कभी भी भाग्य-रूपी दीपक नहीं जल सकता अर्थात् जिस तरह दीपक को जलाने के लिए तेल का होना आवश्यक है, उसी प्रकार किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए, भाग्य को उज्ज्वल करने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक है।

...

पाठ:5 रॉबर्ट नर्सिंग होम में

(रिपोर्ताज)

लेखक -कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

सारांश:

- इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम में लेखक की मुलाकात मानव सेवा में लीन तीन विदेशी महिलाओं से हुई।
- लेखक ने मदर टेरेसा, सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड और मदर मार्गरेट को समर्पित भाव से पीड़ितों की सेवा करते हुए देखा।
- यह देखकर लेखक को एहसास हुआ कि नारी में कितनी करुणा हो सकती है।
- देश की सीमाएँ, धार्मिक भेदभाव, जातीय बंधन मानव-सेवा के मार्ग में बाधक नहीं बन सकते। बस आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की।
- अपनी जन्मभूमि से इतनी दूर अनजान देश व अपरिचित लोगों की सेवा में रत इन महिलाओं को देखकर लेखक अचंभित एवं प्रभावित हुआ।
- मानव-सेवा को अपना धर्म मानकर मदर ने संपूर्ण जीवन इसके लिए समर्पित कर दिया।
- असीम पीड़ा से चिल्लाते हुए रोगी को मदर टेरेसा का स्पर्शमात्र राहत व सुख की अनुभूति करा देता था।
- इसी नर्सिंग होम में लेखक ने जर्मनी की एक युवा व आकर्षक सेविका क्रिस्ट हैल्ड को देखा व उसकी तपस्या व निष्ठा से वह बहुत प्रभावित हुआ।
- भील सेवा केंद्र में तबादले से सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड बिल्कुल विचलित नहीं हुईं, जबकि लेखक चिंतित हुआ कि वह उस जंगली इलाके में कैसे रह पाएगी। सिस्टर क्रिस्ट को मानवता की सेवा की धुन सवार थी।
- मदर टेरेसा फ्रांस देश की और क्रिस्ट हैल्ड जर्मनी देश की थी।
- फ्रांस और जर्मनी दोनों देश एक दूसरे के घोर विरोधी रहे हैं।
- यहाँ मदर टेरेसा और सिस्टर क्रिस्ट, दोनों को एक साथ, एक ध्येय के लिए, मिलकर काम करते देखकर लेखक अभिप्रेरित हुआ।
- इसी पाठ में मदर मार्गरेट की मशीन-सी फुर्ती देखकर लेखक उन्हें जादू की पुड़िया कहता है। वे जितनी अधिक वृद्ध थीं, उतनी ही अधिक ऊर्जावान व खुशमिजाज़ थीं।
- इन महिलाओं ने ही सही अर्थों में गीता के उपदेशों को अपने जीवन में उतारा और अपने कर्म को सबसे सुंदर रूप प्रदान किया।

मुख्य बिन्दु:

- मदर टेरेसा, मदर मार्गरेट व सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड समर्पित भाव से मानव-सेवा करने वाले लोगों, विशेष रूप से महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- सेवा, सहानुभूति, समर्पण एवं करुणा के व्यवहार व आचरण से किसी को भी अपना बनाया जा सकता है।
- मानव-मानव में भेद करना उचित नहीं है।
- ऐसे महान व्यक्तित्व नि:स्वार्थ सेवा-भाव की प्रेरणा प्रदान करते हैं।
- सारा विश्व एक परिवार की तरह है।
- मानवीय संस्कृति के निर्माण व संचालन में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी' के माध्यम से लेखक क्या बताना चाहता है?

(क) सौंदर्य (ख) मौसम (ग) उम्र **(घ) चुस्ती-फुर्ती**

2. हिटलर को मदर ने बुरा कहा, क्योंकि वह–

(क) फ्रांस को जीतना चाहता था। **(ख) नफ़रत फैला रहा था।**

(ग) जर्मनी का रहनेवाला था। (घ) स्त्री-विरोधी था।

3. 'काम यों कि मशीन मात माने' का आशय है-

(क) सभी उपकरण चलाने का (ख) शीघ्रता से काम कर लेने का कौशल

(ग) मशीनों को बुरा मानना **(घ) मशीनों से भी तेज़ काम करना**

4. मदर टेरेसा का जीवन-उद्देश्य था–

(क) ईसाई-धर्म का प्रचार करन (ख) महिलाओं को जागरूक बनाना।

(ग) भारत की संस्कृति को समझना। **(घ) रोगियों व ज़रूरतमंदों की सेवा करना।**

5. ''पर कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?– कहने का आशय है–

(क) अमीर लोगों पर कष्ट नहीं आना चाहिए (ख) सहने की क्षमता के अनुसार कष्ट आना चाहिए।

(ग) कष्ट किसी भी व्यक्ति पर आ सकता है। (घ) प्रत्येक व्यक्ति को कष्ट झेलना चाहिए।

6. चीखते-तड़पते रोगी को मदर मार्गरेट ने 'कुछ नहीं, कुछ नहीं' कहा क्योंकि वे–

(क) उसके रोग को मामूली समझती थीं। (ख) डॉक्टर पर विश्वास करती थीं।

(ग) रोग से लड़ने की हिम्मत देना चाहती थीं। (घ) रोग का सही उपचार जानती थीं।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. रॉबर्ट नर्सिंग होम में जाना लेखक के लिए क्यों यादगार बन गया?

उत्तर: लेखक इंदौर के रॉबर्ट नर्सिंग होम में अपने किसी जानकार को इलाज के लिए लेकर गया था। यहीं पर उसने पहली बार मदर टेरेसा, मदर मार्गरेट और क्रिस हैल्ड को देखा। लेखक इनके रूप-सौंदर्य तथा रोगियों के प्रति इनकी आत्मीयता, मानवता के प्रति समर्पण और सेवा-भावना से बहुत प्रभावित एवं प्रेरित हुआ। उनकी तपस्या, निष्ठा, समर्पण एवं करूणापूर्ण व्यवहार, आचरण व समानुभूति लेखक के लिए यादगार बन गई।

प्रश्न 2. 'रॉबर्ट नर्सिंग होम के डॉक्टर ने कहा, 'मदर तुम हँसी बिखेरती जो हो।' आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर: 'रॉबर्ट नर्सिंग होम के डॉक्टर ने कहा, 'मदर तुम हँसी बिखेरती जो हो' का आशय है कि जैसे हम अपनी माँ के स्पर्श मात्र से खुश हो जाते हैं, वैसे ही मदर टेरेसा के स्पर्श से रोगी अपनी पीड़ा भूलकर हँसने लगते थे। लेखक कहना चाहता है कि मदर टेरेसा जिस तरह रोगियों के प्रति प्रेम व ममता का भाव प्रकट करती हैं, उससे रोगी अपना दर्द भूलकर मुस्कुराने लगते हैं।

प्रश्न 3. लेखक मदर टेरेसा के जाने के बाद किस प्रकार की दीवारों के बारे में सोचता रहा? आपकी दृष्टि में इन दीवारों को गिराना क्यों ज़रूरी है?

उत्तर: लेखक मदर टेरेसा के जाने के बाद उन दीवारों के बारे में सोचता रहता है जो दीवारें सारी मनुष्य जाति को एक परिवार नहीं बनने देतीं। हमारी दृष्टि में इन दीवारों को गिराना ज़रूरी है क्योंकि हम केवल मानव हैं, न कि मराठी-गुजराती या हिंदू-मुस्लिम या ब्राह्मण-क्षत्रिय। मानव-मानव में भेद करना उचित नहीं है। धर्म, जाति, क्षेत्र एवं भाषा रूपी बाँटने वाली ये दीवारें गिरानी होंगी तभी सबका कल्याण संभव है।

प्रश्न 4. मदर मार्गरेट का जादू किसे कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: रॉबर्ट नर्सिंग होम में मदर मार्गरेट अपने व्यवहार व सेवा से रोगियों को पलभर में ठीक कर देतीं। इतनी बूढ़ी होने के बावजूद उनमें गज़ब की चुस्ती व फुर्ती थी। मार्गरेट की हँसी व मुस्कान के जादू से कष्ट के कारण तड़पता रोगी पलभर में भला-चंगा हो जाता था। इसीलिए लेखक ने उन्हें जादू की पुड़िया कहा है।

प्रश्न 5. रॉबर्ट नर्सिंग होम को लेखक ने 'जादू-होम' क्यों कहा है?

उत्तर: रॉबर्ट नर्सिंग होम को लेखक ने 'जादू-होम' कहा है क्योंकि यहाँ मदर टेरेसा, क्रिस हैल्ड और मदर मार्गरेट, जो रोगियों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करके उनका जीवन सुधार रही हैं। असीम पीड़ा से चिल्लाते हुए रोगियों को इनका स्पर्श मात्र राहत व सुख की अनुभूति करा देता था, जो किसी जादू से कम नहीं था।

प्रश्न 6. निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए:-

(क) "फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ, एक रूप, एक ध्येय, एक रस।"

उत्तर: जर्मनी में जन्मी क्रिस्ट हैल्ड, फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा के साथ ही रॉबर्ट नर्सिंग होम में रोगियों की निःस्वार्थ-भाव से सेवा करती थीं। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जर्मनी और फ्रांस एक-दूसरे के विरूद्ध लड़े थे। लेखक को इस बात पर थोड़ा आश्चर्य होता है कि इनके देशों में आपसी शत्रुता/दुश्मनी होने के बाद भी

ये दोनों महिलाएँ यहाँ एक साथ मानव सेवा में लीन थीं तथा ये दोनों धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा व देश के बंधन को नहीं मानती थी। रॉबर्ट नर्सिंग होम में मदर टेरेसा और क्रिस्ट हैल्ड एक होकर रोगियों व दुखियों की सेवा करती थीं।

(ख) "कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?"

उत्तर: अस्पताल में एक अमीर रोगी आया जिसने कभी कोई दुख नहीं सहा था। वह बहुत तड़प रहा था। अमीर छोटे से कष्ट को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर दिखाते हैं, दूसरों के भयानक कष्ट उन्हें नहीं दिखाई देते। दुख कभी यह देखकर

नहीं आता कि कौन कितना सह सकता है। अगर ऐसा होता तो छोटे मासूम बच्चे और कमज़ोर तथा वृद्ध कभी दुखी ही नहीं होते। दुख या कष्ट अगर आया है थोड़ा-बहुत तो उसे सहना ही पड़ता है।

(ग) "हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुईं।"

उत्तर: 'गीता' में कर्म को बहुत महत्त्व दिया गया है, हम भारतवासी ये बात जानते हैं, परंतु इस पर अमल नहीं करते। हम भारतवासियों के लिए नित्य गीता पाठ करना या गीता की चर्चा करना ही उसे कंठ में रखना है। सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड व मदर टेरेसा सच्चे अर्थों में गीता के अनुसार आचरण कर रही थीं। क्रिस्ट ने सही अर्थों में कर्म के ज्ञान को नि:स्वार्थ मानव सेवा द्वारा अपने जीवन में उतारकर विश्व को धन्य कर दिया।

प्रश्न 7. 'रॉबर्ट नर्सिंग होम' पाठ से हम अपने जीवन में क्या प्रेरणा ले सकते हैं, उल्लेख कीजिए।

उत्तर:

- अपने मानवीय व्यवहार व आचरण से हम किसी को भी अपना बना सकते हैं।
- मदर टेरेसा, मदर मार्गरेट व सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का मानवता के लिए समर्पण एवं नि:स्वार्थ सेवा-भाव से हमें समानुभूति की प्रेरणा मिलती है।
- मानव-मानव में भेद करना उचित नहीं है।
- सारा विश्व एक परिवार की तरह है।
- हम विश्व में कहीं भी रहकर रचनात्मक और मानवीय कार्य कर सकते हैं।
- नि:स्वार्थ भाव से सदैव कर्मरत रहने की प्रेरणा मिलती है।
- मानवता का धर्म ही सर्वोपरि है।
- बड़े और महान उद्देश्य के लिए महत्त्वहीन बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

प्रश्न 8. रिपोर्ताज क्या है?

उत्तर: रिपोर्ताज किसी सच्ची घटना पर आधारित सामान्यत: समाचार पत्र के लिए लिखी जाने वाली विधा है।

***

पाठ:6 भारत की ये बहादुर बेटियाँ

(फ़ीचर)

सारांश:

- देश को गौरव दिलाने में महिलाओं की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। महिलाओं ने अपनी शक्ति, उत्साह और लगन के सहारे अनेक क्षेत्रों में नाम कमाया है। गरीबों और कुष्ठ रोगियों की सेवा के द्वारा मदर टेरेसा ने संत की उपाधी प्राप्त की।
- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है यानी वहाँ सुख-समृद्धि, शांति होती है। यह बात प्राचीन काल में मनुस्मृति में कही गई थी। गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी, अपाला आदि प्राचीनकाल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ हैं। प्राचीनकाल से ही नारियाँ हमारे देश में समाज के निर्माण-कार्यों में अपना योगदान देती रही हैं।
- आधुनिक काल में भी नारी अपनी पूरी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ समाज में दिखाई देती है। भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ़ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि महिलाएँ घर-बार छोड़ कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने निकल पड़ी थीं।
- महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं हैं, उन्होंने यह बात सिद्ध कर दिखाई है। आज शिक्षा प्रशासन, राजनीति, अर्थव्यवस्था, व्यापार या तकनीक क्षेत्र हो- हर जगह महिलाएँ काम करती नज़र आएँगी। हवाई जहाज, रेल इंजन, बस या ऑटो रिक्शा चलाने का काम, पेट्रोल पंपों पर काम, हर काम अब महिलाएँ कर रही हैं।
- उन्होंने सिद्ध कर दिखाया है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, ईमानदार तथा कुशल प्रशासक होती हैं। महिलाओं ने फिल्म-निर्माण, अभिनय, चिकित्सा, अनुसंधान हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है।
- **कल्पना चावला, और बचेंद्री पाल** भारतीय महिलाओं के अदम्य साहस, बुद्धि कौशल और कर्तव्य निष्ठा की प्रतीक बन चुकी हैं।
- इनका पालन-पोषण भी सामान्य भारतीय लड़कियों की तरह ही हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा भी सामान्य लोगों की तरह ही हुई।
- इन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास के बल पर लोगों के विरोध पर ध्यान नहीं दिया और अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ती रहीं।

1. कल्पना चावला:

अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला:

अमेरिकी अंतरिक्ष यान कोलंबिया मिशन की विशेषज्ञ

1. कल्पना चावला का जन्म **हरियाणा** प्रांत के करनाल शहर में **1961** की पहली जुलाई को एक साधारण व्यापारी परिवार में हुआ था।
2. पिता बनवारी लाल एक साधारण व्यापारी थे तथा माँ संयोगिता एक सामान्य गृहिणी।

3. जब कल्पना **11वीं कक्षा** में पढ़ती थीं, तब उन्होंने अपनी कक्षा की परियोजना में **मंगल ग्रह** को दर्शाया। शुरू से ही वे अंतरिक्ष की यात्रा के सपने देखती थीं।
4. परिवारवालों के लाख मना करने के बाद भी उन्होंने **चंडीगढ़** के **पंजाब इन्जीनियरिंग कॉलेज** में **एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग**)वैमानिकी (को अपना विषय चुना। उनके सहपाठी उनका मज़ाक उड़ाते रहे, लेकिन उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। वे 1982 में इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली गई।
5. उन्होंने टेक्सास विश्वविद्यालय से **एअरोस्पेस** इन्जीनियरिंग में **एम.एस.** की डिग्री ली व 1988 में एअरोस्पेस में **पी-एच.डी.** की डिग्री प्राप्त की।
6. अमेरिकी अंतरिक्ष यान के कोलंबिया मिशन के लिए 19 नवंबर को पहली बार अंतरिक्ष की यात्रा पर मिशन की विशेषज्ञ बन कर गई। जब वह अंतरिक्ष में थीं तब **तत्कालीन प्रधानमंत्री** श्री इंद्र कुमार गुजराल ने उन्हें इस अभियान के लिए बधाई दी।
7. कोलंबिया के दूसरी बार अंतरिक्ष में जाने का कार्यक्रम बना, तो एक बार फिर कल्पना को उसके अभियान-दल में शामिल किया गया।
8. 16 जनवरी, 2003 को कल्पना पुन: **'केनेडी अंतरिक्ष केंद्र'** से अंतरिक्ष की यात्रा पर गई। 16 दिन के इस अभियान में **80 प्रयोग किए गए**, जिनमें **मानव-शरीर**, **कैंसर कोशिकाओं की परीक्षा** व **कीट-पतंगों पर भारहीनता संबंधी** प्रयोग शामिल थे।
9. जब यह अभियान-दल **1 फरवरी, 2003** को पृथ्वी पर लौट रहा था, तो इस दल का यान भयानक विस्फोट के साथ नष्ट हो गया और अपने अभियान-दल के बाकी सात साथियों के साथ अंतरिक्ष की यह बेटी कल्पना अंतरिक्ष में ही खो गई। **(मृत्यु हो गई)**
10. संसद में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने घोषणा की कि उनकी स्मृति में **अंतरिक्ष-यान 'मेट सेट'** का नाम **'कल्पना-1'** रखा जाएगा।
11. **अदम्य साहस, दृढ़ इच्छा शक्ति और कर्तव्य-निष्ठा** के बल पर कल्पना ने पूरे देश का नाम इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित कर दिया।

2. बचेंद्री पाल :

पहली भारतीय महिला एवरेस्ट विजेता

संसार के सर्वोच्च शिखर (पर्वत चोटी) पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला

1. बचेंद्री पाल को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है।
2. बचेंद्री का जन्म सन् 1954 में चमोली जिले में एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था।
3. पिता किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में बचेंद्री तीसरी संतान हैं।
4. बचेंद्री के बड़े भाई को पहाड़ों पर चढ़ना अच्छा लगता था, लेकिन जब बचेंद्री उनके साथ पहाड़ पर जाने की बात करती थीं, तो उन्हें डाँट कर मना कर दिया जाता था। इससे बचेंद्री का मनोबल और बढ़ा और पहाड़ पर चढ़ने की इच्छा दृढ़ होती गई।
5. बचेंद्री को बचपन में रोज़ 5 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था।
6. पिता ने उनकी पढ़ाई का ख़र्च उठाने से मना कर दिया। बचेंद्री ने **सिलाई का काम** सीखा और **सिलाई करके पढ़ाई का ख़र्च जुटाने लगीं**। इस तरह उन्होंने संस्कृत से एम.ए. तथा **बी.एड. की उपाधि** प्राप्त की।

7. पढ़ाई के साथ-साथ बचेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को हमेशा अपने सामने रखा। बचेंद्री ने 'कालानाग' पर्वत, 'गंगोत्री ग्लेशियर' तथा 'रूड गैरा' की चढ़ाई की, जिससे इनमें आत्मविश्वास बढ़ा।
8. **23 मई, 1984 को 1 बजकर 7 मिनट पर एवरेस्ट पर पहुँचकर भारत का झंडा फहरा दिया।** उस समय उनके साथ पर्वतारोही अंग दोरजी भी थे।
9. बचेंद्री पाल ने अदम्य **साहस** और **आत्मविश्वास** के बल पर अपनी पहचान बनाई। उन्होंने कठिनाइयों के सामने कभी घुटने नहीं टेके।
10. बचेंद्री पाल ने सिद्ध कर दिखाया कि अगर व्यक्ति में **आत्मविश्वास, लगन, साहस** और **दृढ़ इच्छा** शक्ति हो तो अभाव या अन्य कोई भी कठिनाई उनका रास्ता नहीं रोक सकती।
11. तेनज़िंग नोर्गे (एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पहले पुरुष) तथा
    जुंके ताबी (एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला) थे।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. जब पहली बार कल्पना चावला अंतरिक्ष में थीं, तब भारत के प्रधानमंत्री ने -

(क)उन्हें ऐसे ख़तरे न उठाने की सलाह दी। (ग)उन्हें कहा कि महिलाओं के लिए ऐसे करतब ठीक नहीं।

(ख)उन्हें जल्दी से जल्दी पृथ्वी पर लौट आने को कहा। (घ)**उन्हें इस अंतरिक्ष अभियान के लिए बधाई दी।**

2. एवरेस्ट अभियान-दल में बचेंद्री के साथ निम्न में से कौन था?

(क) तेनज़िंग (ख) हंसा देई (ग) जुंके ताबी (घ) **अंग दोरजी**

3. बचेंद्री का पर्वतारोही बनने का संकल्प किस बात से मज़बूत हुआ?

(क) पिता द्वारा पढ़ाई का खर्च न देने से (ख) **लड़की होने के कारण उपेक्षा से**

(ग) सिलाई द्वारा प्राप्त आमदनी से (घ) उच्च शिक्षा से प्राप्त आत्मविश्वास से

4. कल्पना की दुखद मृत्यु के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री ने विशेष घोषणा की कि -

(क) कल्पना को सभी भारतीय वैज्ञानिक श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(ख) **मेट-सेट अब कल्पना-1 के नाम से जाना जाएगा**

(ग) हमें ऐसे ख़तरे आगे भी उठाते रहने होंगे।

(घ) अंतरिक्ष से जुड़े शोध-कार्य कभी भी रुकने नहीं चाहिए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. संसार के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला का नाम बताओ ?

उत्तर: बचेंद्री पाल एवरेस्ट पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला थी।

प्रश्न-2. फ़ीचर किसे कहते हैं? समाचार और फ़ीचर में क्या अतंर है? 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है'। सिद्ध कीजिए?

उत्तर: 'फ़ीचर' पत्रकारिता जगत की महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें समसामयिक पकड़ को प्रधानता दी जाती है।''जो कुछ हुआ वह क्यों और कैसे हुआ और इसका परिणाम क्या होगा'', यह बताना फ़ीचर का काम है। फ़ीचर में घटनाओं को हमारी आँखों के आगे उतार दिया जाता है, कानों में घटनाओं की

आवाज़ गुँजा दी जाती है। फ़ीचर रोचक होते हैं। फ़ीचर पाठक के लिए शिक्षक, पथ-प्रदर्शक का काम करता है। इसकी भाषा सहज, सरल और सभी को समझ में आने वाली होती है।

'क्या हुआ?' यह बताना समाचार है। समाचार सूचना देते हैं। फ़ीचर हमें शिक्षित करते है व हमारा मनोरंजन करते हैं।

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँची महिलाओं पर लिखा गया है। इस पाठ में फ़ीचर की सारी विशेषताएँ हैं।

प्रश्न-3. इस पाठ का शीर्षक आपको उचित लगता है या नहीं? यदि उचित लगता है तो क्यों?

उत्तर: इस पाठ का शीर्षक हमें उचित लगता है क्योंकि इस पाठ से यह स्पष्ट होता है कि नारी-शक्ति की दृष्टि से भारत किसी भी देश से पीछे नहीं है। भारतीय महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं है। भारत की बेटियों ने अपने आत्मविश्वास, संकल्प और परिश्रम से ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जिससे भारत को पूरे संसार में सिर उठाने का मौका मिला है। नारियों में अदम्य शक्ति है। उन्हें उपयुक्त अवसर मिलना चाहिए। कल्पना चावला, बचेंद्री पाल जैसी बहादुर बेटियों की जीवन-कथाएँ सभी को प्रेरित करेंगी।

प्रश्न-4. आज भी हमारे समाज के कुछ हिस्सों में लड़के और लड़की में भेद किया जाता है, क्या आपकी दृष्टि में यह उचित है-तर्क सहित लिखिए?

उत्तर: आज भी हमारे समाज के कुछ हिस्सों में लड़के और लड़की में भेद किया जाता है। यह उचित नही है क्योंकि लिंग भेद समाज के लिए ही नहीं अपितु राष्ट्र के विकास में भी बाधक है। लड़कियों को आगे बढ़ने व विकास करने का पूरा मौका मिलना चाहिए क्योंकि दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। उनके विकास से ही किसी देश का, दुनिया का विकास संभव है। यदि उन्हें अपने अधिकारों व शिक्षा से वंचित किया जाएगा तो देश व समाज का उचित विकास संभव नहीं है।

प्रश्न-5. स्कूली शिक्षा के दौरान कल्पना चावला क्या सपने देखती थी?

उत्तर: स्कूली शिक्षा के दौरान कल्पना चावला अंतरिक्ष यात्रा के सपने देखती थी।

प्रश्न-6. कल्पना चावला ने किस क्षेत्र में ख्याति अर्जित की?

उत्तर: कल्पना चावला ने अंतरिक्ष उड़ान (विज्ञान) के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की।

प्रश्न-7. पिता के द्वारा पढ़ाई का खर्च न उठा पाने पर बचेंद्री पाल ने क्या किया?

उत्तर: बचेंद्री पाल ने सिलाई का काम सीखा और खुद सिलाई करके अपनी पढ़ाई का खर्च उठाया।

***

पाठ:7 आज़ादी

(कविता)

कवि (मूल लेखक) : **बालचंद्रन चुल्लिक्काड**

अनुवाद : **असद ज़ैदी**

मूलभाव

- कविता का आरंभ काम से थके शागिर्द की जिज्ञासा से होता है। दर्जी से उसके शागिर्द ने पूछा कि आज़ादी का क्या अर्थ है? अपनी ओर से कई संदर्भों को जोड़कर शागिर्द ने आज़ादी का अर्थ जानना चाहा। कवि शागिर्द के माध्यम से प्रश्न करता है कि क्या सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आज़ादी है?
- शागिर्द सैर-सपाटा, घूमना-फिरना, अनंत कपड़े के ढेर, सिलाई मशीनों के निरंतर गतिशील हो रहे पहियों व कपड़ों पर अनवरत चलने वाली सुइयों से मुक्ति को आजादी मानता है।
- शागिर्द के सवाल को अनुभवी दर्जी ने ध्यानपूर्वक सुना। उसने बताया कि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है।
- कवि के लिए आज़ादी एक अभिव्यक्ति है, जिसका माध्यम शब्द है। शिकारी के लिए तीर आज़ादी का एक साधन है। इस प्रकार कवि जीवन के लिए अनिवार्य साधन को भी आज़ादी मानता है।
- ज्ञान, कर्म और बलिदान के समन्वय से जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाया जा सकता है। दर्जी ने आज़ादी को कर्म से जोड़ते हुए कहा कर्मठ व्यक्ति ही सपने देख सकता है। कर्म करते रहने में ही आज़ादी है। जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है। कर्म ही आज़ादी है और परिश्रम का उचित फल प्राप्त करना भी आज़ादी है।
- उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की परेशानियाँ दूर हो गई।

मुख्य बिंदु:

- कविता शागिर्द की जिज्ञासा से शुरू होती है।
- कविता के माध्यम से आज़ादी की वास्तविकता को समझाया गया है।
- आज़ादी का संबंध उच्छृंखलता, दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख से नहीं, बल्कि श्रम, त्याग और बलिदान से है।
- कविता में 'श्रम और स्वप्न' तथा 'कर्त्तव्य और अधिकार' के संबंधों की चर्चा की गई है।
- यह कविता उन लोगों को अधिकार दिलाने की बात करती है, जो श्रम करने के बावजूद अपने अधिकारों से वंचित हैं।
- श्रम के महत्त्व को जानकर शागिर्द के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं और वह काम में लग जाता है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'नन्हे-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाना' से कवि का क्या आशय है?

(क) भयभीत होकर जीना (ग) इच्छित को प्राप्त करना

(ख) उन्मुक्त और उच्छृंखल होना (घ) दिशाज्ञान प्राप्त करना

2. अंधकार से प्रकाश की ओर उन्मुख होने का आशय है।

(क) बंधन से छुटकारा पाना
(ग) अँधेरे में दीपक जलाना
(ख) अज्ञान से ज्ञान की ओर जाना
(घ) सूर्योदय की दिशा में जाना

3. आजादी का मतलब है

(क) कुछ भी करने की छूट
(ग) उच्छृंखलता और स्वच्छंदता
(ख) अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति
(घ) कर्म से मुक्ति

4. 'जो कपड़े नहीं सिएगा' पंक्ति किसकी ओर संकेत करती है

(क) दर्जी के शागिर्द की ओर
(ग) फटे-पुराने कपड़े सीने वाले की ओर
(ख) कर्तव्य-पालन करने वाले की ओर
(घ) मस्ती में जीने वाले की ओर

5. दर्जी के अनुसार आज़ादी को भोगने का अधिकार किसे होना चाहिए?

(क) जो निरंतर कर्म करता है
(ग) जो देश से प्रेम करता है
(ख) जो देश का नागरिक है
(घ) जो सरकार की नौकरी करता है

6. क्या आज़ादी का संबंध कर्म से है? कैसे? समझाकर लिखिए।

उत्तर -

1. आजादी का दूसरा नाम कर्म है। कर्म ही आज़ादी है और पारिश्रमिक का उचित फल प्राप्त होना ही आजादी है।
2. जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है।
3. रोटी उसे ही मिलती रहनी चाहिए, जो उसके लिए मेहनत करता है। ऐसा न हो कि मेहनत कोई करे और खाए कोई और।

7. आज़ादी कविता में शागिर्द ने सुई में धागा पिरोने का निर्णय क्यों लिया?

उत्तर -उस्ताद ने शागिर्द को समझाया कि आज़ादी को बनाए रखने के लिए श्रम परम आवश्यक है। उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की आज़ादी संबंधी सारी शंकाएँ व परेशानियाँ दूर हो गई। वह सुई में धागा पिरोने लगा क्योंकि उसकी समस्या का समाधान हो गया और उसने पुन: कर्मरत होने का निर्णय ले लिया।

8. आज़ादी कविता के आरम्भ में शागिर्द आज़ादी का क्या अर्थ समझता था?

उत्तर -

1. आरम्भ में शागिर्द घूमने-फिरने, सैर-सपाटे को आज़ादी मानता था।
2. उछल-कूद मचाने, बेफिक्र और खुश रहने को आज़ादी मानता था।
3. वह कर्म से मुक्ति को आज़ादी मानता था।

9. आज़ादी कविता में आज़ादी शब्द का क्या मतलब है?

उत्तर -आज़ादी जीवन की अनिवार्यताओं से है। आज़ादी का अर्थ केवल अधिकारों को भोगना ही नहीं, बल्कि समाज तथा देश के प्रति कर्तव्य निभाना है।

10. निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान और बलिदानी को जीवन।''

उत्तर -कविता का नाम- **आज़ादी**

कवि का नाम- मूल लेखक : **बालचंद्रन चुल्लिक्काड़**

अनुवाद : **असद ज़ैदी**

सरलार्थ: ज्ञान, कर्म और बलिदान के समन्वय से जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाया जा सकता है। अज्ञानी के लिए ज्ञान प्राप्ति ही आज़ादी है। कहा भी जाता है कि ज्ञान हमें मुक्त करता है। ज्ञान को कर्म में बदलना भी ज़रूरी है। ज्ञान को कर्म में बदलने वाले को ही कर्मठ कहा जाता है। कर्मठ को बलिदान, त्याग ही आज़ादी प्रतीत होता है। ज्ञान, कर्म और त्याग को कवि ने अत्यधिक महत्व प्रदान किया है क्योंकि बलिदान करने वाले कभी मरते नहीं, वे सदैव जीवित रहते हैं, वे दूसरों को जीवन देते हैं और उनके द्वारा निरंतर याद किए जाते हैं।

काव्य सौंदर्य:

- इन पंक्तियों में ज्ञान, कर्म और बलिदान के कार्य-कारण संबंध को स्पष्ट किया गया है।
- आज़ादी या मुक्ति का अर्थ उच्छृंखलता, दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख नहीं, बल्कि आज़ादी का संबंध श्रम, त्याग और बलिदान से है।
- भाषा सरल, सहज, खड़ी बोली।
- काव्यांश में अरबी-फ़ारसी शब्दों का प्रयोग हुआ है।
- 'कर्म' और 'कर्मठ' जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग है।
- अनुप्रास अलंकार का प्रयोग।
- अतुकांत, मुक्त छंद अनुदित कविता।

प्रश्न:11. निम्नलिखित काव्यांश का सरलार्थ कीजिए:-

काव्यांश–1

"पर, जो कपड़े नहीं सिएगा,
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोंक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे
बोनेवाला ही काट सकता है,
वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा
सकता है,
यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही
पहन सकता है,"
यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े
सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।"

सरलार्थ:

कविता के इस अंश में दर्जी यानी उस्ताद ने आज़ादी को कर्म से जोड़ा है। कपड़े सीने का उल्लेख करते हुए दर्जी ने कर्म की ओर संकेत किया है। कर्मठ व्यक्ति ही सपने देख सकता है। कहने का आशय यह है कि जो परिश्रम करेगा उसी के सपने पूरे होंगे। सुई की चमकदार नोंक पर आज़ादी टिकी हुई है अर्थात् कर्म करते रहने में ही आज़ादी है। कपड़े सिए जायेंगे, सुई चलती रहेगी यानी कर्म जारी रहेगा, तो आज़ादी बनी रहेगी। आज़ादी को बनाए रखने के लिए कर्म का सर्वाधिक महत्त्व है। उस्ताद ने आज़ादी का संबंध सुई की नोंक से जोड़ा है। उस्ताद का यह मत है कि जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है। कवि उदाहरण देकर कहता है, कड़ी मेहनत करके धूप, बारिश, जाड़ा सहने के बाद किसान के खेत में फसल लहलहाती है। उस फसल को काटने का अधिकार केवल किसान को ही मिलना चाहिए। रोटी उसे ही मिलती रहनी चाहिए, जो उसके लिए मेहनत करता है। ऐसा न हो कि मेहनत कोई करे और खाए कोई और। बोए कोई और काटे कोई और। श्रम का उचित फल मिलना चाहिए। आज़ादी का वास्तविक अर्थ, उसके विविध संदर्भ और श्रम तथा कर्त्तव्य के साथ उसके संबंध को स्पष्ट करते हुए दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा। उस्ताद का फिर से कपड़े सीने में लग जाना, निरंतर कर्म करते रहने का संदेश देता है। उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की परेशानियाँ दूर हुई। वह भी सुई में धागा पिरोने लगा उसकी समस्या का समाधान हो गया और उसने पुन: कर्मरत होने का निर्णय ले लिया। आज़ादी को जीवित रखने के लिए श्रम परम आवश्यक है।

***

पाठ:8 चंद्रगहना से लौटती बेर

(कविता)

कवि -केदारनाथ अग्रवाल

मूलभाव:

इस कविता में ग्रामीण अंचल की प्रकृति का बहुत ही सुंदर और मोहक चित्र खींचा गया है। कवि चंद्रगहना नामक स्थान से लौटते हुए खेत में उगी फ़सलों को देखकर उनके रंग, रूप और गुण का ऐसा मनोहर चित्रण करता है कि वे जीवंत हो उठती हैं। कवि ने प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए विवाह समारोह की कल्पना की है। यहाँ प्रेम, उमंग और उत्साह का वातावरण है। इसी प्रकार कवि ने गाँव के तालाब का चित्र खींचा है। यहाँ तालाब के पानी में चंद्रमा का प्रतिबिंब, पत्थर, घास, बगुला, चिड़िया और मछली हैं। कवि बगुले और मछली को क्रमशः शोषक और शोषित के रूप में देखता है। यह कविता ग्रामीण प्रकृति को संपूर्णता में चित्रित करती है।

मुख्य बिन्दुः

1. ग्रामीण परिवेश से जुड़े प्रकृति-चित्रण को कवि ने बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।
2. पूरी कविता में दो दृश्य दिखाई दे रहे हैं - पहला दृश्य खेत का है, जिसमें चना, अलसी, सरसों सब प्रेम से ओत-प्रोत हैं।
3. दूसरा दृश्य पोखर का है, जिसमें बगुला, चिड़िया, पत्थर आदि हैं। ये सब क्रमशः शोषक, चालाक और हृदयहीन व्यक्तियों के प्रतीक हैं।
4. चने के खेत की मेंड़ पर बैठे कवि ने हरे चने के गुलाबी फूल को खिले हुए होने के कारण मुरैठा बाँधे और पीली सरसों के फूल खिले होने के कारण उसके हाथ पीले होने और विवाह-मंडप आदि को सुंदर रूप में चित्रित किया है।
5. कविता में अलसी के तीन विशेषण दिए हैं- वह हठीली है, वह देह की पतली है और उसकी कमर लचीली है।
6. 'सयानी होना' के तीन अर्थ हैं - एक तो समझदार होना, दूसरा यौवन पा लेना और तीसरा चतुर होना। यहाँ सरसों के विषय में उसे सयानी कह कर कवि ने युवती होने की ओर संकेत किया है और बताया है कि वह विवाह-योग्य हो गई है।
7. फागुन फाग गा रहा है, सरसों सयानी हो गई है, चना मुरैठा बाँधे खड़ा है, पानी पीते पत्थर आदि में मानवीकरण अलंकार है।
8. गाँव के तालाब का भी सुंदर चित्रण है कई वर्षों के प्यासे पानी पीते पत्थर, नीले तल का पोखर, उसमें लहराती हुई घास, मछली, बगुला सभी प्रतीक रूप में प्रयुक्त होकर कविता को नया अर्थ देते हैं।

काव्यांश 1

एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ाकर
कह रही है जो छुए यह
दूँ हृदय का दान उसको।

सरलार्थः

कवि चंद्रगहना से लौटते हुए खेत की मेंड़ पर अकेला बैठा हुआ खेत और उसके आस-पास के दृश्यों को देख रहा है। सबसे पहले उसका ध्यान खेत में उगे हुए चने की ओर जाता है। चने के पौधों का आकार छोटा होता है। चने में गुलाबी रंग के फूल आ गए हैं। कवि को लगता है, यह छोटे-से कद का, बित्ते भर का चना अपने सिर पर गुलाबी पाग(पगड़ी) बाँधे, सजे-सँवरे दूल्हे-सा खड़ा है।

चना और अलसी दोनों एक ही खेत में पास-पास खड़े हैं। अलसी का पौधा दुबला-पतला और लचीला होता है। हवा से हिलता-डुलता रहता है। अलसी तन कर सीधी खड़ी रहती है इसीलिए हठीली भी है। अलसी का फूल नीले रंग का होता है। अलसी को देखकर कवि को लगता है कि यह दुबली-पतली लड़की है, जो मचलती दिख रही है और मानो कह रही है, 'जो मुझे छू लेगा, मैं उसे हृदय दे दूँगी। उससे प्यार करने लगूँगी। उसी की हो जाऊँगी'। हठीली होने के बावजूद वह प्यार के लिए लालायित है।

काव्यांश 2

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,
देखते ही मीन चंचल–
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चट दबा कर चोंच में
नीचे गले के डालता है।
एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फ़ौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबाकर
दूर उड़ती है गगन में।

सरलार्थः

इन पंक्तियों में तालाब के कुछ दृश्य कवि का ध्यान खींचते हैं। जैसे– एक बगुला, जो पानी में टाँगें डुबाए, ध्यानमग्न सोया हुआ-सा खड़ा है। वह सचेत तो है, परंतु देखने वाले को ऐसे लगता है जैसे सो रहा है। पर ज्यों ही उसे कोई चंचल मछली दिखाई पड़ती है वह उसे तत्काल लपक कर गटक लेता है। एक काले माथे वाली चालाक चिड़िया भी अपने सफ़ेद पंख फैला कर तालाब की सतह पर झपट कर पानी के भीतर से एक उजली सफ़ेद मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है। कविता में ढ़ोंगी बगुला ध्यान लगाकर खड़ा है, किन्तु मछली को देखते ही उसे झट पकड़कर चट गटक जाता है।

चिड़िया कुछ चालाक लोगों की ओर संकेत करती है, जो मछली का झपट कर उठा लेती है।

प्रकृति के ये दृश्य समाज के व्यवहार की ओर संकेत करते हैं। समाज में कुछ कपटी, चालाक और धूर्त लोग दूसरों का शोषण करते हैं।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कवि ने चने को गुलाबी मुरैठा बाँधे बैठा हुआ क्यों कहा है?

(क) चना बहुत प्रसन्न है
(ग) चना पकने को है
(ख) चना विवाह के लिए तैयार है
(घ) चने को मिलने जाना है

2. हृदय का दान से क्या अभिप्राय है?

(क) हृदय का इलाज कराना
(ग) भला चाहना
(ख) प्यार करना
(घ) इज्जत देना

3. 'फाग गाता मास फागुन आ गया है' पंक्ति में कौन–सा अलंकार है।

(क) यमक
(ग) मानवीकरण
(ख) उपमा
(घ) रूपक

4. 'प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है'–किसके लिए कहा गया है?

(क) सरसों के लिए
(ग) ग्रामीण परिवेश के लिए
(ख) व्यापारिक भूमि के लिए
(घ) अलसी के लिए

5. तालाब के तल में भूरी घास लहरियाँ क्यों लेती है? क्योंकिः–

(क) तालाब का पानी हिलता है।
(ग) घास घुँघराली है।
(ख) तालाब के नीचे हवा है।
(घ) मछलियाँ घास को हिला देती हैं।

6. चाँद गोल खंभा–सा क्यों लग रहा है?

(क) पानी के हिलने के कारण
(ग) मछलियों के चलने के कारण
(ख) पानी के ठहरे होने के कारण
(घ) बगुलों के भय के कारण

7. बगुला किसका प्रतीक है?

(क) शोषित का
(ख) मजदूर का
(ग) भूखे व्यक्ति का
(घ) शोषक का

8. काले माथे वाली चिड़िया प्रतीक है।

(क) सादे लोगों की
(ख) चालाक लोगों की
(ग) पठित वर्ग की
(घ) श्रमिक वर्ग की

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1: व्यापारिक नगर की अपेक्षा ग्रामीण अंचल को प्रेम के लिए उर्वर क्यों माना गया है?

उत्तर -गाँव का दृश्य कवि के मन को छू लेता है। उसे लगता है कि इस ग्रामीण अंचल में किसी नगर की अपेक्षा अधिक प्यार भरा वातावरण होता है। नगर तो व्यावसायिक हो गए हैं। व्यावसायिक नगरों में प्यार कम उपजता है। ग्रामीण अंचल की भूमि प्रेम-प्यार के लिए अधिक उपजाऊ है। इस निर्गुण अंचल में भी प्रकृति के चप्पे-चप्पे में प्यार दिखाई पड़ रहा है। इसलिए व्यापारिक नगर की अपेक्षा ग्रामीण अंचल को प्रेम के लिए उर्वर माना गया है।

प्रश्न 2: 'एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' का चित्र अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा' का आशय यह है कि तालाब या पोखर के हिलते जल में चाँद का प्रतिबिंब उसकी गहराई का भी बोध कराता है, जबकि शांत जल में वह एक गोला-सा ही लगता है। लहरों वाले तालाब में किरणों के फिसलने से उसमें लंबाई प्रतीत होती है, इसलिए कवि को लगता है कि वह चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा है।

प्रश्न 3: काले माथे वाली चिड़िया किसका प्रतीक है?

उत्तर- काले माथे वाली चिड़िया चालाक लोगों का प्रतीक है। चालाक चिड़िया अपने सफ़ेद पंख फैलाकर तालाब की सतह पर झपट कर पानी के भीतर से एक उजली सफ़ेद मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है।

प्रश्न 4: बगुला समाज के किस वर्ग का प्रतीक है

उत्तर- बगुला समाज के ढोंगी व अति चालाक लोगों का प्रतीक है, जो दिखावा कुछ करते हैं और उनका आचरण कुछ और ही होता है।

प्रश्न 5: कविता के आधार पर चने के सौंदर्य का चित्रण कीजिए और बताइए कि उसे किन-किन रूपों में दर्शाया गया है?

उत्तर- चने के पौधे का आकार छोटा होता है। चने में गुलाबी रंग के फूल आ गए हैं। कवि को लगता है कि यह छोटे-से कद का, बित्ते भर का चना अपने सिर पर गुलाबी पाग (पगड़ी) बाँधे सजे-सँवरे दूल्हे-सा खड़ा है। यहाँ चने के पौधे का मानवीकरण किया है।

प्रश्न 6: सरसों को 'हो गई सबसे सयानी' क्यों कहा गया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- सरसों को 'हो गई सबसे सयानी' इसीलिए कहा गया है क्योंकि वह विवाह-योग्य हो गई है, उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं। 'सयानी होना' के तीन अर्थ हैं– एक तो समझदार होना, दूसरा यौवन पा लेना और तीसरा चतुर होना। सरसों जब परिपक्व होकर फूलती है तो पूरा खेत ही पीला हो जाता है। अत: कवि के अनुसार पीली सरसों सयानी (परिपक्व) होकर ब्याह के मंडप में पधारी है।

प्रश्न 7: हृदयहीन पत्थर किन लोगों का प्रतीक है? क्या आज के समाज से ऐसे उदाहरण दे सकते हैं?

उत्तर- हृदयहीन पत्थर समाज के उन लोगों के प्रतीक हैं जो निष्ठुर हैं, जिनका व्यवहार कठोर है, पत्थर की तरह अडिग है, लेकिन समाज के वे व्यक्ति जिनके हृदय में किसी के प्रति दया एवं प्रेम भाव नहीं है, कवि ने उनकी तुलना हृदयहीन पत्थर से की है।
स्वार्थी/रिश्वतखोर व्यक्ति इन्हीं के उदाहरण हैं।

प्रश्न 8: निम्नलिखित काव्यांश के कवि का नाम एवं कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें:

''और सरसों की न पूछो-
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं,
ब्याह-मंडप में पधारी''

उत्तर- कविता का नाम- **चन्द्रगहना से लौटती बेर**
कवि का नाम- **केदारनाथ अग्रवाल**

सरलार्थ:

'और सरसों की न पूछो' -किसी के निरालेपन की बात करनी होती है तो हम बात ऐसे ही शुरू करते हैं। इसी अंदाज़ में कवि कहता है-'और सरसों की न पूछो !' सरसों अब सयानी हो गई है। यहाँ सरसों के विषय में उसे सयानी कह कर कवि ने युवती (बड़ी होना, परिपक्व होना) होने की ओर संकेत किया है कि वह विवाह-योग्य हो गई है इसीलिए उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं। हाथ पीले करना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ शादी कर लेना है। पूरे दृश्य में कवि को लगता है जैसे स्वयंवर हो रहा है।

काव्य सौंदर्यः

1. पीली सरसों के फूल खिले होने के कारण उसके हाथ पीले होने और विवाह मण्डप आदि को सुन्दर रूप में चित्रित किया है।
2. 'सयानी होना' के तीन अर्थ हैं - एक तो समझदार होना, दूसरा यौवन पा लेना और तीसरा चतुर होना। यहाँ सरसों के विषय में उसे सयानी कह कर कवि ने युवती होने की ओर संकेत किया है और बताया है कि वह विवाह-योग्य हो गई है।
3. 'सयानी होना', 'मण्डप में पधारना' - सरसों का मानवीकरण हुआ है।
4. 'सबसे सयानी' में 'स' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।
5. सयानी होना, हाथ पीले करना - मुहावरों का प्रयोग हुआ है।
6. ग्रामीण परिवेश से जुड़े प्रकृति-चित्रण को कवि ने बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।
7. इस पूरे प्रकरण में एक विवाह के मंडप का रूपक है।
8. छंद मुक्त, अतुकान्त कविता है।
9. खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
10. व्यंजना शब्द शक्ति है।
11. प्रभावशाली प्रस्तुति है।

...

पाठ:9 अख़बार की दुनिया

(गद्य)

सारांश :

अख़बार आज आम आदमी की ज़रूरत बन चुका है। जिस अख़बार को हम पढ़ते हैं, उसकी भी अपनी एक दुनिया है। अख़बारों में समाचार, संपादकीय, फ़ीचर, फ़ोटो, कार्टून, ग्राफ़िक्स, विज्ञापन आदि अनेक चीज़ें छपती हैं। समाचार अख़बार का प्रमुख अंग है। छपने से पहले समाचारों का चयन उनके महत्त्व तथा समाचारपत्र की नीति के आधार पर होता है। समाचारों के भी कई अंग होते हैं मेन हेडिंग, सब हेडिंग, बाई लाइन, समाचार-स्रोत, इंट्रो तथा ब्यौरा आदि। समाचारों पर आधारित टिप्पणी संपादकीय कहलाती है। घटनाओं से संबंधित फ़ोटो उनमें विश्वसनीयता तथा प्रभाव उत्पन्न करते हैं। फ़ीचर का काम सूचना देना, शिक्षा देना तथा मनोरंजन करना है। अनेक विषयों पर लेख भी समाचारपत्रों में प्रकाशित होते हैं। अख़बार का एक उपयोगी अंग साक्षात्कार भी है। व्यंग्य-चित्र (कार्टून) केवल मनोरंजन ही नहीं करते, बल्कि समाज को आईना भी दिखाते हैं। विज्ञापन अख़बार की आय के प्रमुख साधन ही नहीं, अपितु पाठकों के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं। विज्ञापन की चुटीली व रोचक भाषा उसे अत्यंत लोकप्रिय बनाती है। पत्र,
बाज़ार-भाव, मौसम, खेल संबंधी सूचनाएँ भी नियमित रूप से अख़बार में छपती हैं। अब तो इलेक्ट्रॉनिक अख़बार भी आ गया है।

मुख्य बिंदु :

समाचार-पत्र (अख़बार) के अंग:

1. समाचार 2. फ़ोटो 3. लेख 4. पत्र 5. संपादकीय 6. फ़ीचर 7. साक्षात्कार 8. कार्टून
9. विज्ञापन 10. मौसम 11. ग्राफ़िक्स 12. चित्र 13. बाजार भाव आदि

समाचार के प्रकार: (विषय के आधार पर)

1. राजनीतिक समाचार
2. सामाजिक समाचार
3. व्यापार, अर्थ जगत के समाचार
4. खेल जगत के समाचार
5. विविध समाचार (साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, पर्यावरण)

समाचार के प्रकार (स्थान के आधार पर)

1. स्थानीय
2. राष्ट्रीय
3. अंतरराष्ट्रीय

समाचारों की चयन-प्रक्रिया:

- अख़बारों की साख और लोकप्रियता उनके समाचारों के चयन के आधार पर ही टिकी होती है।
- अख़बारों में समाचारों का चयन सामूहिक निर्णय के आधार पर किया जाता है।
- समाचारों का चयन उनके महत्त्व और उपयोगिता के आधार पर किया जाता है।

समाचार के अंग:

1. मेन हेडिंग
2. सब हेडिंग
3. बाई लाइन
4. समाचार स्रोत
5. इन्ट्रो
6. ब्यौरा

मेन हेडिंग:

मेन हेडिंग से घटना के बारे में एक मोटी सूचना तुरंत मिल जाती है।

बाई लाइन:

समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता के नाम को बाइ लाइन कहते हैं।

समाचार स्रोत:

यह समाचार का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है। इससे समाचार की प्रामाणिकता का पता चलता है। इसमें समाचार का ब्यौरा देने से पहले यह बताया जाता है कि समाचार कहाँ से प्राप्त हुआ और किस माध्यम से प्राप्त हुआ।

इन्ट्रो:

इन्ट्रो अंग्रेज़ी के 'इन्ट्रोडक्शन' (परिचय) का संक्षिप्त रूप है। इन्ट्रो को पढ़कर पूरे समाचार की मुख्य जानकारियाँ एक बार में प्राप्त की जा सकती हैं।

ब्यौरा:

इन्ट्रो के बाद समाचार थोड़े विस्तार से दिया जाता है। इसे ही समाचार या घटना का ब्यौरा कहते हैं।

समाचार-प्रस्तुति:

समाचारों का कार्य किसी भी घटना के बारे में लोगों को सूचना देना होता है। अख़बार को किसी का पक्षधर अथवा विरोधी न होकर तटस्थ और निष्पक्ष रहना चाहिए।

संपादकीय:

1) समाचारों अथवा घटनाक्रम पर संपादक के विचारों व टिप्पणी को संपादकीय कहते हैं। इसमें संपादक को अपने विचार व्यक्त करने की पूरी छूट होती है।

2) संपादकीय के लिए हर अख़बार में बीच का एक पूरा पृष्ठ अलग से निर्धारित होता है। इसमें समाचारों पर संपादक की टिप्पणियाँ तो होती ही हैं, साथ ही समाचारों के विभिन्न पहलुओं पर आलोचनात्मक लेख और पाठकों की प्रतिक्रियाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं।

3) संपादकीय टिप्पणियों और लेखों के आधार पर संपादक अथवा अख़बार की विचारधारा का आसानी से पता लगाया जा सकता है।

फ़ोटो:

- समाचार के साथ छपने वाले फ़ोटो के माध्यम से उस घटनाक्रम की प्रामाणिकता का पता चलता है।
- फ़ोटो जहाँ अपने आप में एक समाचार होता है, वहीं वह एक महत्त्वपूर्ण समाचार का पूरक और सहायक भी होता है।
- फ़ोटो के नीचे दी गई सूचना को अख़बार की भाषा में **'कैप्शन'** कहते हैं।

साक्षात्कार:

किसी विषय पर जानकारी लेने अथवा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से उसके बारे में जानने के लिए की गई बातचीत को साक्षात्कार कहते हैं।

- साक्षात्कार यानी किसी व्यक्ति से बातचीत। इसे अंग्रेज़ी में 'इंटरव्यू' कहा जाता है।
- यह एक स्वतंत्र विधा है।
- साक्षात्कार आमने-सामने बैठकर बातचीत के माध्यम से किसी विषय पर जानकारी प्राप्त करने को कहते हैं।
- इससे समाचार सजीव और प्रामाणिक बन जाते हैं।

व्यंग्य-चित्र (कार्टून):

- अख़बारों में मुख्य रूप से दो प्रकार के व्यंग्य-चित्र या कार्टून छपते हैं, एक तो समाचारों पर आधारित और दूसरे शुद्ध मनोरंजन के लिए। कार्टून के माध्यम से किसी घटनाक्रम पर तीख़ी टिप्पणी की जा सकती हैं।
- कई अख़बारों में कार्टून लगातार आते हैं। जैसे आर.के. लक्ष्मण, शंकर आदि के कार्टून।

विज्ञापन:

- किसी भी उत्पाद अथवा योजना की जानकारी देने के उद्देश्य से सरल और रोचक भाषा में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत की गई सूचनाओं को विज्ञापन कहते हैं।
- विज्ञापन अख़बारों की आय का प्रमुख साधन होते हैं।
- विज्ञापन पाठकों को शिक्षित करते हैं।
- विज्ञापन से पाठकों और विज्ञापनदाता दोनों को लाभ पहुँचता है।

विज्ञापन की भाषा:

- विज्ञापन का उद्देश्य होता है– उत्पाद अथवा अपनी योजना की जानकारी लोगों तक पहुँचाना।
- विज्ञापन की भाषा रोचक हो, सरल हो और पढ़ने वाले को प्रभावित करे।

पत्र:

- समाचारों अथवा संपादकीय टिप्पणियों को पढ़ने के बाद पाठक के मन में जो विचार उत्पन्न होते हैं, उन्हें वह अपने पत्रों में व्यक्त करता है।
- पाठकों के पत्रों के माध्यम से उनकी समस्याओं को भी जानने का मौका मिलता है।
- पाठको के पत्र अखबारों के लिए दिशा-निर्देश का कार्य करते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक अख़बार: अख़बार का एक नया रूप

- इलैक्ट्रॉनिक अख़बारों को इन्टरनेट के द्वारा ही पढ़ा जा सकता है।
- इलैक्ट्रॉनिक अख़बार को दुनिया के किसी भी कोने में पढ़ा जा सकता है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1) संपादकीय आधारित होता है-

क) लेखों पर **ख) समाचारों पर** ग) फ़ीचर पर घ) पाठकों के विचारों पर

2) फ़ोटो के नीचे छपी सूचना को अख़बार की भाषा में कहते हैं-

क) इंट्रो ख) सब हेडिंग **ग) कैप्शन** घ) समाचार स्रोत

3) फ़ीचर में किसका होना अनिवार्य होता है?

क) सूचना ख) स्रोत की जानकारी ग) संपादक के विचार घ) फ़ोटो

4) अख़बार में कार्टून छापने का क्या उद्देश्य है?

क) मनोरंजन और तीख़ी टिप्पणी ख) विज्ञापन की सूचना देना करना

ग) शिक्षा प्रदान करना घ) सामाजिक घटना पर राय देना

5) विज्ञापन का उद्देश्य क्या नहीं है?

क) सूचना **ख) भाषा-शिक्षण** ग) व्यवसाय में वृद्धि घ)। प्रचार-प्रसार

6) पाठकों के पत्रों को अख़बार में क्यों शामिल किया जाता है?

क) प्रचार के लिए **ख) पाठकों की भागीदारी के लिए** ग) प्रतियोगिता के लिए घ) समाचार देने के लिए

7) व्यापार-जगत के समाचारों की भाषा में बनावटी शब्दों का प्रयोग–

क) बिल्कुल नहीं होता। **ख अधिक होता है।** ग) कम होता है। घ) कभी कम कभी अधिक होता है।

8) अख़बारों में प्रकाशित किए जाते/की जाती हैं–

क सभी घटनाएँ ख परिचितों के समाचार ग राजनीतिक सूचनाएँ **घ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ**

प्रश्न 1. समाचार में सब हेडिंग (उप-शीर्षक) क्यों दिया जाता है?

उत्तर- समाचार में सब हेडिंग (उप-शीर्षक) दिया जाता है क्योंकि किसी भी समाचार को पढ़ने के बाद पाठक के मन में लगातार कई जिज्ञासाएँ उठती हैं। जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए छोटे-छोटे वाक्यों में सब हेडिंग (उप-शीर्षक) दिए जाते हैं।

प्रश्न 2. समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता को ओर किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर- समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता के नाम को बाइ लाइन कहते हैं।

प्रश्न 3. 'कैप्शन' का संबंध किससे है?

उत्तर- फ़ोटो के नीचे दी गई सूचना को अख़बार की भाषा में **'कैप्शन'** कहते हैं।

प्रश्न 4. किन्हीं चार हिन्दी अख़बारों के नाम लिखिए।

उत्तर- 1. नवभारत टाइम्स 2. जन सत्ता 3. हिन्दुस्तान 4. पंजाब केसरी।

प्रश्न 5. विज्ञापन के आवश्यक गुण क्या है?

उत्तर- विज्ञापन के आवश्यक गुण निम्नलिखित हैं-

- किसी भी उत्पाद अथवा योजना की जानकारी को सरल और रोचक भाषा में प्रस्तुत करना।
- विज्ञापन अख़बारों की आय का प्रमुख साधन होते हैं।
- विज्ञापन पाठकों को शिक्षित करते हैं।
- विज्ञापनों से पाठकों और विज्ञापनदाता दोनों को लाभ पहुँचता है।

प्रश्न 6. पाठकों के पत्रों से अख़बारों को क्या लाभ है?

उत्तर- पाठकों के पत्र अख़बारों के लिए दिशा-निर्देश का कार्य करते हैं। समाचारों, संपादकीय अथवा अन्य सामग्रियों पर पाठकों की प्रतिक्रिया से अख़बारों को जहाँ अपने अंदर सुधार करने का मौका मिलता है, वहीं उत्साह भी बढ़ता है।

प्रश्न 7. अख़बार में मुख्य रूप से किस तरह के समाचार छपते है?

उत्तर-

- राजनीतिक समाचार
- सामाजिक समाचार
- व्यापार, अर्थ जगत के समाचार
- खेल जगत के समाचार
- साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, पर्यावरण, मनोरंजन आदि के समाचार ।

प्रश्न 8. समाचारों की भाषा की क्या विशेषताएं होनी चाहिए?

उत्तर- समाचारों की भाषा की निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए -

- समाचारों की भाषा सरल, सुबोध और तुरंत समझ में आने वाली होनी चाहिए।
- समाचारों की भाषा सूचनापरक होती है, इसमें सहजता, सरलता और प्रवाह का होना आवश्यक होता है।
- समाचारों की भाषा में यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि वह सर्वसाधारण की समझ में आ सके।
- समाचारों की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है।

प्रश्न 9. संपादकीय और फ़ीचर में क्या अंतर होता है– स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- संपादकीय- समाचारों अथवा घटनाक्रम पर संपादक के विचारों को संपादकीय कहते हैं।

फ़ीचर- फ़ीचर बहुत सारी विधाओं का मिला-जुला रूप होता है। इसकी मुख्य विशेषता है- सूचना देना।

प्रश्न-10. अखबार के कितने काम बताए जाते हैं?

उत्तर: अखबार के तीन काम बताए जाते हैं।

1. सूचना देना 2. शिक्षा देना 3. मनोरंजन करना।

***

पाठ:10 पढ़ें कैसे

(गद्य)

सारांश:

पढ़ने के कौशल को सुसंबद्ध रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक है कि पढ़ने का अभ्यास चरणों में किया जाए। पढ़ने की पहली अवस्था है - अक्षरों की पहचान तथा उनसे बने शब्दों को पढ़ने का अभ्यास। इसका दूसरा चरण है उन शब्दों के अर्थ समझना। गतिपूर्वक मौनवाचन करते हुए जब हम उसको पढ़ते हैं, तो उसका आनंद ही अलग है। जो कुछ हम पढ़ रहे हैं उसे समझना भी आवश्यक है। प्रसंगानुसार शब्दों के अर्थ ग्रहण करना ज़रूरी है। कविता, कहानी, लेख, विचार, निबंध आदि को पढ़कर उनका अर्थ समझना पढ़ने के अंतिम चरण है।

मुख्य बिंदु

किसी भी चीज़ को समझते हुए पढ़ना एक कौशल है। **पठन कौशल के कई चरण और स्तर हैं।**

1. पढ़ने का पहला चरण है (अक्षर ज्ञान)– भाषा के अक्षरों की पहचान तथा उनसे बने शब्दों की पहचान।
2. दूसरा चरण (शब्द ज्ञान)– शब्दों के अर्थ जानना।
3. तीसरी चरण (पढ़ने की गति) – गति पूर्वक पढ़ना।
4. चौथा चरण (अर्थ समझना/ समझकर पढ़ना) – पढ़ने की प्रक्रिया में सदा समझना शामिल रहता है। बिना समझे-बूझे पढ़ने का कोई मतलब नहीं होता।

- **पढ़ने के कौशल के अंगों (चरणों) का सही क्रम–**

(i) अक्षरों तथा उनसे बने शब्दों को पहचानना।

(ii) शब्दों के अर्थ जानना।

(iii) पाठ्य सामग्री को तीव्र गति से मन-ही-मन पढ़ना।

(iv) पढ़ने के साथ-साथ उसका अर्थ भी समझते चलना।

(v) कही गई बात पर विचार कर केंद्रीय भाव ग्रहण करना।

अपठित

ऐसी सामग्री जो आपने कभी नहीं पढ़ी, जो आपके लिए बिल्कुल नई है वह अपठित कहलाते है। जब आप किसी नई पठन सामग्री को पढ़ना शुरू करने से तो पहले उस पर एक नज़र ऊपर से नीचे तक डालने से मोटी-मोटी-सी चीज़ें समझ में आ जाती है। जैसे-पठन सामग्री का शीर्षक क्या है, किसके बारे में है, उसके मुख्य बिंदु क्या हैं। यदि कोई चित्र या आँकड़ा या तालिका दी गई है तो उसे ध्यान से देखने के बाद उसे शुरू से अंत तक गंभीरतापूर्वक पढ़ना चाहिए। गद्य पढ़ते समय विचारों के क्रम पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

अपठित कविता

- कविता का पठन और अर्थबोध गद्य-सामग्री के पठन और अर्थबोध से भिन्न होता है। गद्य-सामग्री का पठन द्रुतगति से और मौन रहकर करना होता है, किंतु कविता के वाचन में उचित विराम और लय के साथ सस्वर पाठ करने की आवश्यकता होती है। कविता को सस्वर और उचित लय के साथ पढ़ने से ही आनंद आता है और अर्थ स्पष्ट होता है।
- कविता धीरे-धीरे, लयपूर्वक, सस्वर पढ़नी चाहिए, जिससे कवि के भावों को स्वयं अनुभव कर उसके संदेश को समझ सकें।

पढ़ते समय ध्यान रखने योग्य बातें -

1. पठन सामग्री को द्रुत गति से, मौन रहकर, समझकर पढ़ने की कोशिश करें।
2. कविताओं को सस्वर पढ़िए और उसकी लय तथा झंकार का आनंद उठाइए और भाव ग्रहण करने का प्रयास कीजिए।
3. कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से जानें।
4. मूल पाठ को बार-बार पढ़ें और उसमें समाहित घटनाओं, विचारों आदि को नोट करें। ऐसे शब्दों पर विशेष ध्यान दे जो पाठ के केंद्र-बिंदु से जुड़े हैं।
5. पाठगत प्रश्नों के उत्तर दें। इन उत्तरों को दिए गए उत्तरों से मिलान करें और यदि गलत हों तो पुनः अंश पढ़कर सवालों के जवाब देने का प्रयास करें।
6. पाठांत प्रश्नों के उत्तर लिखकर देखें जिससे लिखने का अभ्यास हो सके और परीक्षा में भी तीव्र गति से लिखकर प्रश्नों के उत्तर दे सकें।
7. जब तक सारे प्रश्नों के उत्तर पूरी तरह समझ में न आ जाएं तब तक उपरोक्त सभी कार्य बार-बार करें। ऐसा करने पर प्रश्नों के उत्तर रटने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी व सारी सामग्री समझ, ज्ञान और अनुभव का अंग बन जाएगी।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अपठित कविता का अर्थ समझने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

(क) लयपूर्वक वाचन

(ख) शब्दकोश की सहायता लेना

(ग) बार-बार पढ़ना

(घ) तथ्यों का चयन

2. पढ़ने का अभ्यास हो जाने पर हम-

(क) एक-एक अक्षर अलग-अलग पढ़ते हैं

(ख) कई अक्षर एक साथ पढ़ते हैं

(ग) कई शब्द प्रवाह के साथ पढ़ते हैं
(घ) कई वाक्यांश एक साथ पढ़ते हैं

3. असली पढ़ना कहलाता है, सामग्री में दिए गए-
(क) शब्दों को समझना
(ख) अक्षरों को पहचानना
(ग) वाक्यांशों को पढ़ना
(घ) दिए गए विचार को समझना

अभ्यास हेतु अपठित काव्यांश

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

''मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
दरवाज़े खिड़कियाँ खुलने लगे गली-गली
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए।
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए
बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके,
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।''

(क) मेघों के आगमन की तुलना किससे की गई है?
(ख) गली-गली के दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने का कारण क्या है?
(ग) 'बाँकी चितवन उठा नद ठिठकी' में कौन-सा अलंकार है?
(घ) गाँव में मेघों के आने की सूचना कौन दे रहा है?
(ङ) गाँव के बड़े बुज़ुर्गों की भूमिका कौन निभा रहे हैं?

अभ्यास हेतु अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

''हमारे गाँव आत्मनिर्भर नहीं हैं। कहीं-कहीं स्वास्थ्य-शिक्षा तो छोड़िए, भोजन-पानी की बुनियादी सुविधाएँ भी नहीं है। इतनी असुविधाओं में जीवनयापन दुष्कर है। इसीलिए लोग गाँव छोड़कर शहरों की ओर आते हैं। वे विवशता में अपना घर छोड़ते है। कोई भी अपनी जड़ें नहीं त्यागना चाहता। जड़ों से कटकर लोगों में भावनात्मक खिन्नता भी आ जाती है। व्यक्तिगत रूप से मेरा मानना है कि हम सभ्य समाज में रहते हैं, इसलिए हमें अपने देश को गाँवों और शहरों में बाँटकर नहीं देखना चाहिए। इसके लिए यह भी जरूरी है कि हमारे जो भी संसाधन हैं, सुविधाएँ या असुविधाएँ हैं, सीमाएँ या उपलब्धियाँ हैं- उनका इस्तेमाल भी बराबरी से हो। यह नहीं कि शहरों में अधिक और गाँवों में कम। शहरों की पब्लिक तो रिपब्लिक के मज़े ले रही है और गाँव के गण अभी गणतंत्र से दूर हैं। गाँव और शहर की यह दूरी पाटने के लिए हमें गाँवों की ओर ध्यान देना होगा।''

(क) गाँवों से शहरों की ओर आने पर प्रमुख कारण क्या है?
(ख) गाँवों और शहरों को बाँटकर न देखने के लिए क्या करना ज़रूरी है?
(ग) 'गाँव के गण अभी गणतंत्र से दूर हैं'– आशय स्पष्ट कीजिए।
(घ) 'कोई भी अपनी जड़ें नहीं त्यागना चाहता'- इस वाक्य में 'जड़ें' से क्या तात्पर्य है?
(ङ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

***

पाठ:11

सार-लेखन

(लेखन)

सार-लेखन का अर्थ एवं उपयोगिता:

- विस्तार से कही गई बात को कम शब्दों में व्यक्त करना ही **सार-लेखन कहलाता है।**
- किसी दी हुई सामग्री को कम शब्दों में व्यक्त करने की कला को **सार-लेखन कहते हैं।**
- सार-लेखन में किसी दूसरे के द्वारा लिखी गई विस्तृत बात को उसका मूल भाव सुरक्षित रखते हुए कम शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।
- सार-लेखन प्राय: मूल सामग्री का **एक-तिहाई** होता है।
- सार लिखने के बाद यह भी अवश्य देख लेना चाहिए कि कोई महत्त्वपूर्ण बिंदु छूट तो नहीं गया और कोई अनावश्यक बात तो नहीं लिखी गई।
- **सार-लेखन की उपयोगिता** जीवन के कई क्षेत्रों में है। अखबारों में पृष्ठ पर उपलब्ध स्थान के अनुसार समाचार-संपादक समाचारों का सार-लेखन करता है। आकाशवाणी और दूरदर्शन में भी समय की पाबंदी होती है, इसलिए सार-लेखन की ज़रूरत पड़ती है। लेखों व पुस्तकों का भी सार-लेखन किया जाता है। कार्यालयों में पत्रों या फ़ाइलों में सिमटे पूरे पत्राचार का सार-लेखन करना पड़ता है। ऐसे और भी कई क्षेत्र हो सकते हैं।
- सार-लेखन में मुहावरों-लोकोक्तियों, कथाओं, अलंकारों, उदाहरणों आदि का प्रयोग नहीं किया जाता।
- सरकारी पत्रों का सार लिखते समय भी मोटे तौर पर सार-लेखन के चरणों का पालन किया जाता है। अंतर केवल इतना है कि इनमें सबसे पहले क्रम-संख्या, अधिकारी के पद-नाम, संबंधित विभाग/मंत्रालय, पत्र-संख्या तथा दिनांक का भी उल्लेख कर दिया जाता है।

सार-लेखन के मुख्य चरण (प्रक्रिया) ये हैं :

- मूल सामग्री को दो-तीन बार ध्यान से पढ़ना
- मूल बिंदु का चयन
- संबंधित बिंदुओं का चयन
- मूल और संबंधित बिंदुओं को क्रम देना
- अनावश्यक सामग्री को छोड़ना और एक-तिहाई आकार में सार-लेखन।

सार-लेखन के रूप:

अलग-अलग क्षेत्रों, विषयों या कामों के लिए, सार-लेखन के कई अलग-अलग रूपों का प्रयोग किया जाता है।

- अधिक शब्दों में लिखी बात को कम शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता समाचार, फ़ैक्स आदि करने में होती है। अनेक शब्दों वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करके, अनावश्यक

शब्दों को छाँट कर तथा वाक्य-विन्यास की शिथिलता को दूर करके कम शब्दों में व्यक्त किया जाता है।

- विस्तृत लेख को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते समय पहले उसके मूल भाव या विचार-बिंदु तथा उसे पुष्ट करने वाले संबंधित बिंदुओं को नोट कर लेते हैं। फिर उसे संक्षेप में व्यक्त कर देते हैं।
- सार-लेखक मूल सामग्री को प्राय: कई बार गौर से पढ़ कर अपनी भाषा में उसका सार प्रस्तुत कर देता है। सार प्रस्तुत करते समय यह प्रयास किया जाता है कि लेखक की मूल भाषा और शैली यथासंभव बची रहे।

भाव-पल्लवन:

- भाव-पल्लवन में मूल सामग्री में विस्तार होता है।
- इसमें मूल भाव को फैलाना या पल्लवित करना होता है।

सूक्ति:

- सूक्ति एक-आध पंक्ति की होती है।
- सूक्ति एक वाक्य की या वाक्यांश वाली भी हो सकती है।
- सूक्ति का उदाहरण - सत्यमेव जयते (सत्य की ही जीत होती है)

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द:

अभिव्यक्ति में कसावट लाने के लिए अनेक शब्दों अथवा वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है।

वाक्यांश		शब्द
1. भले-बुरे का विचार न रखने वाला	-	**अविवेकी**
2. जिसे कोई जीत न सके	-	**अजेय**
3. जिसके समान कोई दूसरा न हो	-	**अद्वितीय**
4. जिसके बिना काम न चल सके	-	**अनिवार्य**
5. जिस पर विश्वास किया जा सके	-	**विश्वसनीय**
6. ईश्वर में विश्वास करने वाला	-	**आस्तिक**
7. जिस मिट्टी में प्रचुर मात्रा में पैदावार होती हो	-	**उपजाऊ**
8. जो काम से जी चुराता हो	-	**कामचोर**
9. उपकार को मानने वाला	-	**कृतज्ञ**
10. उपकार/एहसान को न मानने वाला	-	**कृतघ्न**
11. जो दया का पात्र हो	-	**दयनीय**

12. बहुत दूर तक की बात सोचने वाला - **दूरदर्शी**
13. वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो - **निर्जन**
14. जिस पर कोई विवाद न हो - **निर्विवाद**
15. जिसके आर-पार दिखाई दे सके - **पारदर्शी**
16. किसी लिखी हुई चीज़ की नकल - **प्रतिलिपि**
17. जो कम खर्च में काम चलाता हो - **मितव्ययी**
18. हित या भला चाहने वाला - **हितैषी**
19. बहुत कम जानने वाला - **अल्पज्ञ**
20. दया करने के योग्य - **दयनीय**
21. जिसे लज्जा न आती हो - **निर्लज्ज**
22. जिसे सही-गलत, उचित-अनुचित की पहचान न हो - **अविवेकी**
23. वे हथियार जो किसी को मारने के काम आएं - **मारणास्त्र**
24. बिना किसी कोशिश के - **अनायास**
25. जन्म के साथ ही उत्पन्न होने वाला/वाली - **सहजात**
26. दूसरों के साथ भलाई का व्यवहार करने वाला - **परोपकारी**
27. जिसे देखकर भय होता हो - **भयानक**
28. जिसका विवाह न हुआ हो - **अविवाहित**

अभ्यास हेतु प्रश्नः

निम्नलिखित अंशों का सार लेखन लगभग एक तिहाई शब्दों में लिखिएः

(i) "मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है। पर, उस सुख और उत्सव के इस आनंद में बड़ा अंतर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य-जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिंता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है,, क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं, उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनंद की प्राप्ति करते हैं। यह आनंद जीवन का आनंद है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्यत्व का ख़्याल करते हैं। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिंता छोड़ देते हैं, कर्त्तव्य-भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छंदता आ जाती है। उस रोज़ हमारी दिनचर्या बिलकुल नष्ट हो

जाती है। व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हमलोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनंद पा रहे हैं।''

(ii) आज की भारतीय शिक्षित नारी को अच्छी गृहिणी के रूप में न देख पाना पुरुषों की एकांगी दृष्टि का परिणाम है। विवाह के बाद उसकी बदली हुई मन:स्थिति तथा परिस्थितियों की कठिनाइयों पर धयान नहीं दिया जाता। उसकी रुचियों और भावनाओं की उपेक्षा की जाती है। पुरुष यदि अपने सुख के लिए पत्नी के सुख का धयान रखे, तो वह अच्छी गृहिणी हो सकती है। पत्नी और पति का कर्त्तव्य है कि वे एक दूसरे के कार्य में हाथ बटाएँ और एक-दूसरे की भावनाओं, इच्छाओं और रुचियों का ध्यान रखें। आख़िर नारी भी तो मनुष्य है। उसकी अपनी ज़रूरतें भी हैं और वह भी परिवार में, पड़ोस में तथा समाज में सम्मान पाना चाहती है। यदि नारी त्याग की मूर्ति है, तो पुरुष को बलिदानी होना चाहिए।

प्रश्न 1. 'सार-लेखन' और 'भाव-पल्लवन' में मुख्य अंतर लिखिए।

उत्तर- कभी-कभी किसी बात का विस्तार से वर्णन करने की आवश्यकता होती है। कभी-कभी विस्तार से कही गई बात को अथवा अपनी बात को कम-से-कम शब्दों में व्यक्त करना अनिवार्य होता है। अभिव्यक्ति के ये दोनों ही तरीके बात को कहने के कौशल हैं। छोटी-सी बात को विस्तार से कहना भाव-पल्लवन का क्षेत्र है और विस्तृत बात को कम में कहना सार लेखन है। जब समय का अभाव हो, तो सार रूप में अभिव्यक्ति का महत्त्व बढ़ जाता है।

प्रश्न 2. सरकारी कार्यालयों में सार-लेखन का विशेष महत्त्व क्यों है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर- सरकारी कार्यालयों में सार-लेखन का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वहाँ अनेक सहायक, अधिकारी, विभाग आदि होते हैं। अत: समय बचाने के लिए सहायक पत्रों का सार तैयार करना आवश्यक हो जाता है। फ़ाइल पुरानी हो जाने पर प्राय: पूरी फ़ाइल के महत्त्वपूर्ण बिंदु भी सबसे ऊपर लिख दिए जाते हैं।

प्रश्न 3. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

सार-लेखन के लिए क्या आवश्यक नहीं है–

(क) अनावश्यक सामग्री का त्याग

(ख) मूल बिंदु का चयन

(ग) मुख्य बिंदुओं को क्रम देना

(घ) सूक्तियों का सुंदर उपयोग

***

पाठ:12

इसे जगाओ

(कविता)

कवि: भवानीप्रसाद मिश्र

मूल भाव :

- 'इसे जगाओ' कविता समय पर सजग, सचेत रहने और कार्य करने का संदेश देती है। इस संदेश की अभिव्यक्ति के लिए कवि ने प्रकृति का सहारा लिया है। 'जागने' और 'सोने' का प्रतीक रूप में उपयोग किया है। इन सबसे यह कविता सुंदर एवं भावपूर्ण बन पड़ी है।
- जो लोग सोए हैं अर्थात् सजग एवं सचेत नहीं हैं, उन्हें जगाने के लिए यानी सजग बनाने के लिए कवि सूरज, पवन, पक्षी से बहुत ही आत्मीयतापूर्ण आग्रह करता है। इन तीनों से आग्रह करने का कारण यह है कि ये तीनों ही गतिशीलता और सकर्मकता के प्रतीक हैं। कवि चाहता है कि सभी इनकी तरह बनें।
- कवि ने यह संदेश भी दिया है कि सजग रहने की सार्थकता तभी है, जब समयानुसार सजग हों। समय निकल जाए, तो भागकर उसे पकड़ा नहीं जा सकता। समय निकल जाने पर भागने की अपेक्षा समयानुसार चलना ही बेहतर है।

मुख्य बिंदु :

- सूर्य, पवन और पक्षी प्रकृति के अंग हैं और मनुष्य के साथी भी। प्रकृति अपने नियमित कार्यकलापों के माध्यम से मनुष्य को भी जागकर कार्य करने की प्रेरणा देती है इसीलिए जीवन में सोए हुए प्राणी को जागने की प्रेरणा देने के लिए कवि ने प्रकृति को आधार बनाया है।
- सपने देखना आवश्यक है, क्योंकि इससे बड़े उद्देश्य निर्धारित होते हैं और उन्हें प्राप्त भी किया जाता है। लेकिन, सपनों में खोए रहना निष्क्रियता की ओर संकेत करता है। शेखचिल्ली और मुंगेरीलाल सपनों में खोए रहते थे, इसलिए हँसी के पात्र बने।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'भई, सूरज' में 'भई' संबोधन किस प्रकार का है-

(क) औपचारिक (ख) आदरसूचक

(ग) श्रद्धासूचक (घ) **आत्मीय**

2. इस कविता में किसे जगाने के लिए कहा गया है-

(क) जो थककर सो गया है (ग) जिसे सपने देखना अच्छा लगता है

(ग) जो बैठा-बैठा ऊँघता है (घ) **जो सच से बेख़बर है**

3. कविता में 'क्षिप्र' किसे बताया गया है:

(क) जो घबरा कर भागता है

(ख) जो तेज़ रफ़्तार से चलता है

(ग) **जो अवसर को नहीं चूकता**

(घ) जो क्षण भर को सजग रहता है

4. कवि ने जगाने का अनुरोध सूर्य, पवन और पक्षी से किया है, क्योंकि वे:

(क) प्राकृतिक हैं (ख) **क्रियाशील हैं**

(ग) प्रगतिशील हैं (घ) अनुभवी हैं

प्रश्नोत्तर

प्रश्न:1. 'इसे जगाओ' कविता में किसे जगाने के लिए कहा गया है? और क्यों?

उत्तर -कवि ने भटके हुए, अपने आस-पास के वातावरण से बेख़बर, सपनों में खोए रहने वाले (केवल कल्पना में डूबे हुए), निष्क्रिय व्यक्तियों को जगाने के लिए कहा है, क्योंकि समाज का व्यक्ति भटक जाएगा तो राष्ट्र का भी अहित होगा।

प्रश्न:2. 'इसे जगाओ' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर -'इसे जगाओ' कविता में आदमी को सदैव सजग, जागरूक बने रहने का संदेश दिया गया है। दिशाहीन भटकने की अपेक्षा सोच समझकर प्रयास करने के महत्व को दर्शाया गया है। सपनों की दुनिया से बाहर निकलकर कर्म में लगने के लिए कहा गया है क्योंकि अवसर चूक जाने पर व्यक्ति प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाता है।

प्रश्न:3. 'इसे जगाओ' कविता में कवि ने किस-किस से सोये हुए व्यक्ति को जगाने का आग्रह किया है। और क्यों?

अथवा

'इसे जगाओ' कविता में सूरज, हवा और पक्षी के किन-किन गुणों के कारण उनका उल्लेख किया गया है।

उत्तर -कवि ने सूरज, हवा और पक्षियों से सोये हुए व्यक्ति को जगाने का आग्रह किया है क्योंकि:-

1. सूरज रोज़ उदित और अस्त होता है। वह समस्त हलचल का स्रोत है।
2. हवा निरंतर चलती रहती है और संसार को जीवन प्रदान करती है।
3. पक्षियों का कलरव प्रात:काल से ही जीवन के गीत सुनाता है।

इसलिए सपनों में सोए हुए अथवा समय की गति न पहचानने वाले आदमी को वास्तविकता से परिचित कराने की आवश्यकता के कारण सूरज, हवा और पक्षियों से जगाने का आग्रह किया गया हैं।

प्रश्न:4. 'इसे जगाओ' कविता के आधार पर बताइए कि कवि ने सूरज को मनुष्य को जगाने का काम क्यों दिया है?

उत्तर -सूरज रोज़ उदित और अस्त होता है। वह संसार को जीवन-ऊर्जा प्रदान करता है और प्रकाश देता है। वह समस्त हलचल का स्रोत है। इस तरह सोए हुए आदमी को जगाने और क्रियाशील होने का संदेश देने के लिए सूरज उचित माध्यम है। अत: कवि अटल सत्य एवं प्राकृतिक रूढ़ियों का सहारा लेकर समाज को जगाने का प्रयास करना चाहता है।

प्रश्न:5. 'बेवक्त जागने' का परिणाम क्या होता है?

उत्तर- 'बेवक्त जागने' का अभिप्राय है कि समय पर काम न करना। सोया हुआ बेखबर व्यक्ति घबरा कर हड़बड़ाहट में कुछ करने का प्रयास करेगा तो कुछ नहीं कर पाएगा। परिणामस्वरूप क्रोध व मानसिक तनाव के कारण वह जीवन में पिछड़ता व असफल होता चला जाएगा।

प्रश्न:6. निम्नलिखित काव्यांशों के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें।

1. ''क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है।''

उत्तर- कविता का नाम:- **'इसे जगाओ'**
कवि का नाम:- **भवानीप्रसाद मिश्र**

<u>सरलार्थ:-</u>

क्षिप्र गति अर्थात् तेज़ गति से चलने में फ़र्क होता है। तेज़ गति का अर्थ सही अवसर पर सचेत होना है, सही मौके पर न चूकना है। कवि कहता है कि वही व्यक्ति बुद्धिमान हैं, जो सही अवसर का भरपूर उपयोग करते हैं, वे ही प्रगति करते हैं। सही क्षण में सजग व्यक्ति ही लक्ष्य प्राप्त करता है। अत: हमें सदैव सजग रहना चाहिए।

<u>काव्य-सौंदर्य:-</u>

1. घबराकर भागने और क्षिप्र गति में अंतर बताकर कवि ने उचित समय और अवसर पर सचेत रहने के महत्त्व को बड़ी सरलता से स्पष्ट किया है।
2. आदमी को सदैव सजग, जागरूक व कर्मशील बने रहने का संदेश दिया गया है।
3. सहज, सरल और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है।
4. मुक्त छंद है।
5. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।
6. खड़ी बोली का प्रयोग है।
7. क्षिप्र, सजग आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग है।
8. वार्तालाप (बातचीत की)शैली का सुंदर प्रयोग है।

2. **''ज़रा इस आदमी को हिलाओ,**
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर
सपनों में खोया पड़ा है।''

उत्तर- कविता का नाम:- **'इसे जगाओ'**
कवि का नाम:- **भवानीप्रसाद मिश्र**

सरलार्थ:-

प्रस्तुत काव्यांश में एक सोए हुए आदमी का वर्णन है। मगर यह जो सोया हुआ आदमी है वह नींद में सोया हुआ नहीं है, बल्कि उसके इर्द-गिर्द की दुनिया में क्या कुछ घटित हो रहा है, इससे वह अनजान है। यह आदमी वक़्त को ठीक से नहीं पहचान रहा। वह इस सबसे बेख़बर सपनों में खोया हुआ है। सपनों में खोए रहने का अर्थ है- केवल कल्पना में डूबे रहना, जीवन में निष्क्रिय होना। जो आदमी सपनों में खोया रहता है, वह सपने के सच को पाने के लिए प्रयास करने का समय खो देता है और सपना टूटने पर खुद को वहीं का वहीं खड़ा पाता है। कवि ने ऐसे सोये हुए आदमी को जागरूक बनाने के लिए कहा है।

काव्य-सौंदर्य:-

1. आदमी को जागरूक बने रहने का संदेश दिया गया है।
2. अपने आस-पास के वातावरण से बेख़बर, सपनों में सोये हुए (केवल कल्पना में डूबे हुए) व्यक्ति को सजग किया गया है।
3. काव्यांश में बड़ी सावधानी व खूबसूरती से सहज, सरल व आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है।
4. जीवन में सोये हुए प्राणी को जगाने की प्रेरणा देने के लिए कवि ने प्रकृति को आधार बनाया है।
5. बातचीत की संबोधन शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।
6. भाषा में सादगी है व भावों को अभिव्यक्त करने में पूर्णत: समर्थ है।
7. 'नयी कविता' की विशेषताएँ दृष्टव्य हैं।
8. 'सच से' में 'स' वर्ण की आवृति से अनुप्रास अलंकार है।
9. काव्यांश में मुक्तछंद है।
10. उर्दू, फारसी के शब्दों का प्रयोग- ज़रा, बेख़बर
11. तद्भव शब्दों का प्रयोग- 'सपनों', 'सच', 'सूरज'

***

पाठ:13

सुखी राजकुमार

(कहानी)

लेखक: ऑस्कर वाइल्ड

सारांश:

- सुखी राजकुमार' दरअसल एक प्रतिमा है, जो शहर के बीचों-बीच स्थापित है। सोने से मढ़ी और नीलम तथा लाल जड़ी प्रतिमा के सौंदर्य से लोग अभिभूत हैं ।
- एक दिन एक गौरैया शहर में आती है और उस प्रतिमा के नीचे ठहरने का निश्चय करती है। उसके ऊपर एक बूँद गिरती है, तो उसे पता चलता है कि सुखी राजकुमार रो रहा है।
- राजकुमार उसे बताता है कि जब वह जीवित था, तो उसका जीवन विलासपूर्ण था और वह दुख जैसी चीज से परिचित नहीं था, किंतु अब वह शहर के बीच ऊँचाई पर स्थापित होने के कारण अपने शहर में बसे लोगों के दुखों को देख कर उनके दुख से दुखी था। इस क्रम में वह पहले एक मेहनती स्त्री और उसके बीमार बच्चे का जिक्र करता है तथा गौरैया से अपनी तलवार की मूठ में जड़ा लाल निकालकर उसे दे आने के लिए कहता है।
- गौरैया अपने मिस्त्र देश जाने के कार्यक्रम में मस्त है उसे बच्चों से स्नेह नहीं है, क्योंकि पिछले वसंत में दो बच्चों ने उसे ढेले मारे थे। मगर, राजकुमार को उदास देखकर वह उसकी बात मान लेती है। बच्चे के प्रति उत्पन्न सहानुभूति के वश वह उस पर अपने पंखों से हवा झलती है। रात को जब वह पुन: सपनों के देश जाने को प्रस्तुत होती है, तो राजकुमार उससे एक गरीब तरुण लेखक की मदद हेतु अपनी एक आँख का नीलम दे आने के लिए कहता है। राजकुमार के त्याग से गौरैया करुण हो उठती है।
- अगली बार जब वह नील देश की सुंदरता का बखान करते हुए राजकुमार से विदा माँगती है, तो राजकुमार उससे एक गरीब लड़की की मदद के लिए अपनी दूसरी आँख वाला नीलम दे आने का आग्रह करता है। राजकुमार के इस उत्सर्ग से प्रभावित गौरैया अपना कार्यक्रम रद्द कर देती है।
- राजकुमार अब अंधा है, अत: गौरैया शहर-भर की ख़बरें उसे सुनाती है, विशेषत: गरीब, दुखी और परेशान लोगों की ख़बरें। राजकुमार के कहने पर वह प्रतिमा के स्वर्णपत्र निर्धन लोगों में बाँटती रहती है।
- प्रतिमा अब बिल्कुल मनहूस दिखने लगती है, पर शहर के बच्चों के चेहरों पर गुलाबी आभा आने लगती है। बढ़ती ठंड में गौरैया वहीं प्रतिमा के पैरों पर प्राण त्याग देती है।

- अगले दिन मेयर अपने सभासदों के साथ घूमते हुए उस प्रतिमा को हटाने और अपनी प्रतिमा लगाने का प्रस्ताव करता है। प्रतिमा और गौरैया की लाश को कूड़ेखाने में फेंक दिया जाता है। ईश्वर के आदेश पर देवदूत उन्हें ले जाते हैं और उन्हें स्वर्ग में हमेशा के लिए स्थान दे दिया जाता है।

मुख्य बिन्दु:

- प्रतिमा के सौंदर्य की चर्चा का आधार सोना, नीलम और लाल होना।
- रूप, सुख, वैभव, ऐश्वर्य में ही सौंदर्य की तलाश।
- महल में अपनी मौजमस्ती में डूबे राजकुमार का दुख के बारे में न सोचना।
- अनुभवों का विस्तार होने पर करुणा की भावना उत्पन्न होना।
- भावना को क्रियारूप में परिणत करना–दूसरों के हित में त्याग करना। लाल, नीलम और सोने के पत्रों यानी अपने अंगों और प्रशंसनीय चीजों का बलिदान।
- गौरैया का अपने सपनों और सुख-सुविधाओं की दुनिया से बाहर आना।
- राजकुमार के गुणों और कर्मों से प्रभावित होकर खुद भी उन कामों में लगना।
- राजकुमार के साथ-साथ गौरैया का भी आत्मोत्सर्ग।
- मेयर तथा सभासदों का शहर की सुंदरता के लिए बाहरी रूप-सौंदर्य को ही देखना।
- राजनीतिज्ञों की चापलूसी और स्वार्थपरता।
- ईश्वर की दृष्टि में राजकुमार और गौरैया के बलिदान का महत्त्व।

उपसंहार:

- जब हम अपने से बाहर देखते हैं, तो हमारे अनुभव हमें संवदेनशील बनाते हैं और समाज के हित में सक्रिय करते हैं।
- गौरैया के व्यक्तित्व-परिवर्तन से हमें पता लगता है कि अच्छे लोगों की संगत से व्यक्तित्व उदार और अधिक सामाजिक बनता है।
- समाज में धनी और निर्धन वर्ग की जीवन-स्थितियों में बड़ी विषमता है। धनी वर्ग प्राय: आत्मकेंद्रित हो जाता है।
- कुछ लोगों तक धन, वैभव, और अधिकार सीमित होने के कारण व्यापक मनुष्य-समाज की मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पातीं। इनके प्रति समानुभूति ही सच्ची मनुष्यता है।
- बाह्य सौंदर्य (रूप-सौंदर्य) से आंतरिक सौंदर्य (कर्म-सौंदर्य) अधिक महत्त्वपूर्ण है- वही हमें श्रेष्ठ मनुष्य बनाता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गौरैया ने मिस्त्र देश न जाने का निश्चय कब किया?

या

गौरैया राजकुमार के सान्निध्य में रहने का निर्णय क्यों लेती है?

उत्तर: जब गौरैया राजकुमार के गुणों- दया, करुणा, प्रेम, समानुभूति, त्याग, बलिदान आदि से परिचित होती जाती है, तो वह अपने मिस्त्र देश जाने के कार्यक्रम को छोड़कर उसी के सान्निध्य में (साथ) रहने का निर्णय लेती है।

प्रश्न 2. सुखी राजकुमार की दूसरी मूर्ति लगवाने की बात आई तो मेयर ने क्या इच्छा प्रकट की?

उत्तर: सुखी राजकुमार की दूसरी मूर्ति लगवाने की बात आई तो मेयर ने इच्छा प्रकट की - ''मेरी मूर्ति ठीक रहेगी।'' शहर के मेयर तथा सभासद राजकुमार की मूर्ति को लोहे की भट्टी में गलवाकर उससे अपनी-अपनी मूर्तियाँ बनवाना चाहते हैं।

प्रश्न 3. सुखी राजकुमार कहानी में गौरैया राजकुमार के कुरूप होने की प्रक्रिया में उससे और अधिक प्रेम क्यों करने लगती है?

उत्तर: गौरैया का राजकुमार के प्रति प्रेम, निष्ठा और समर्पण बढ़ता जाता है क्योंकि राजकुमार के रूप-सौंदर्य के कम होने के पीछे उसके कर्म-सौंदर्य का विकसित होना है। राजकुमार का दूसरों के प्रति सहानुभुति व अन्य मानवीय गुणों से अभिभूत होता देख गौरेया मूर्ति के कुरूप हो जाने पर उससे और अधिक प्रेम करने लगती है।

प्रश्न 4. सुखी राजकुमार कहानी के राजकुमार को मूर्ति के रूप में स्थापित होने पर उसे किस बात का एहसास हुआ?

उत्तर:

- जीवित रहते हुए वह भोग-विलास में डूबा रहता है और अपने से बाहर की दुनिया के बारे में अनजान बना रहता है।
- प्रतिमा के रूप में स्थापित होने पर उसे अपने नगर में चारों ओर फैले जनता के दुख, दर्द तथा गरीबी के दर्शन होते हैं ।
- उसमें मानवीय संवेदनाओं का ज्वार आने लगता हैं।
  और अब वह उनकी मदद करके उनके कष्टों को मिटाना चाहता है।

प्रश्न 5. सुखी राजकुमार कहानी में देवदूत ईश्वर के लिए नगर की कौन सी दो मूल्यवान वस्तुएँ ले गए? वे दोनों वस्तुएँ मूल्यवान क्यों मानी गई?

उत्तर: सुखी राजकुमार कहानी में देवदूत ईश्वर के लिए नगर की दो मूल्यवान वस्तुएँ जस्ते का दिल (राजकुमार का दिल) और गौरैया का पार्थिव शरीर ले गए। इससे लेखक यह सन्देश देना चाहता है कि सच्चे, परोपकारी एवं कर्मशील प्राणियों का भले ही समाज सम्मान न करें लेकिन ईश्वर उनके कर्मों का सम्मान करते हुए उन्हें मूल्यवान मानकर उन्हें स्वर्ग में स्थान देता है।

प्रश्न 6. सुखी राजकुमार कहानी में लोहा गलाने वाले मिस्त्री को क्या हैरानी हो रही थी?

उत्तर: सुखी राजकुमार कहानी में लोहा गलाने वाले मिस्त्री को यह हैरानी हो रही थी कि राजकुमार की प्रतिमा का टूटा हुआ जस्ते का दिल भट्टी की तेज आग में भी नहीं पिघल रहा था।

प्रश्न 7. सुखी राजकुमार कहानी के निम्नलिखित पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

1) सुखी राजकुमार 2) गौरैया 3) मेयर

उत्तर: 1) सुखी राजकुमार

- सुखी राजकुमार की प्रतिमा इस कहानी का केंद्र-बिंदु है। कहानी में प्रतिमा के माध्यम से समाज में मानवीय संवेदनाओं के तार-तार हो जाने की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया गया है। समाज में मानवीय संवेदनाओं को ही सर्वोपरि होने का संदेश दिया गया है। इसके लिए वह प्रतिमा को केंद्रीय पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुखी राजकुमार के जीवन-काल का भी जिक्र करता है।
- जीवित रहते हुए राजकुमार भोग-विलास में डूबा रहता है और अपने से बाहर की दुनिया के बारे में अनजान बना रहता है, किंतु प्रतिमा के रूप में उसे अपने नगर में चारों ओर फैले दुख-दर्द के दर्शन होते हैं।
- राजकुमार में मानवीय संवेदनाओं का संचार होता है। व्यापक जनता का दुख उसका अपना दुख बन जाता है और वह अपने वैभव को त्यागकर, अपने अंगों का प्रतिदान करके उनके दुखों को दूर करना चाहता है।
- वह अब अपनी 'सुखी राजकुमार' वाली पहचान से 'पत्थर के भिखारी' वाली पहचान तक पहुँच जाता है। मगर, अब उसे पूरे तौर पर संतोष है और वह वास्तविक रूप में सुखी है।

2) गौरैया

- गौरैया के भीतर दूसरों के प्रति ममता का सोता फूटने का कारण राजकुमार का साथ व व्यवहार है।
- इस कहानी में जब गौरैया से हमारा साक्षात्कार होता है, तो वह हमें नकचढ़ी और अभिमानी मालूम होती है।
- वह मूर्ति के पास उतरती है और संतोष प्रकट करती है कि उसका 'शयनागार सोने का है।' राजकुमार के यह कहने पर कि उसका हृदय जस्ते का है, वह निराश होती है।
- राजकुमार जब उससे आग्रह करता है कि वह उसकी तलवार की मूठ में लगा लाल बीमार बच्चे और उसकी श्रमिक माँ को दे आए, तो व उस पचड़े में नहीं पड़ना चाहती, क्योंकि वह तो अपनी कल्पनाओं की दुनिया में खोई है।
- राजकुमार को उदास देखकर उसे 'दया' आ जाती है, और तरस खाकर उसका काम करने को तैयार हो जाती है।
- बच्चे को बुखार से तड़पते देख उसे भी दुख का अनुभव हुआ और वह बच्चे के प्रति सहानुभूति महसूस करने लगी।
- राजकुमार के पुन: आग्रह करने पर वह राजकुमार की दूसरी आँख उस लड़की को दे आती है, राजकुमार के गुणों से प्रभावित होकर वह अपने सपनों के देश जाने के कार्यक्रम को रद्द कर राजकुमार के साथ रहने का फ़ैसला करती है।
- गौरैया राजकुमार को दुनिया की आश्चर्यजनक वस्तुओं और घटनाओं की कहानियाँ सुनाती है।

- बच्चों से चिढ़ने वाली गौरेया अब उनकी वास्तविक जिंदगी के मर्म को पहचानती है और राजकुमार की मूर्ति के स्वर्ण-पत्र उन बच्चों में बाँटती है। उनके दुख-दर्दों में भागीदारी करती गौरैया, राजकुमार के गुणों से अभिभूत व प्रेम की उदात्त भावना से पूर्ण गौरैया अपने प्राण न्योछावर कर देती है।
- गौरैया के चरित्रांकन में लेखक इस बात को हमारे समक्ष रखता है कि सज्जनों के साथ से व्यक्ति के सोचने-समझने के नजरिए में अंतर आता है और वह भी उन सद्गुणों से युक्त हो जाता है।

3) मेयर

- शहर के मेयर के ऊपर नगर की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी है, परन्तु उन्हें जनता के दुख-दर्द और उनकी गरीबी नहीं दिखती है।
- वह स्वार्थ में अंधा है।
- मेयर की नज़र राजकुमार की जगह अपनी मूर्ति लगवाने पर है।
- उसके सभासद चाटुकार और स्वार्थी हैं जो आज की असंवेदनशील, आत्मकेंद्रित और स्वार्थ-तत्पर शासन-व्यवस्था की ओर संकेत करते हैं।

प्रश्न 8. कहानी के संवादों की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

- 'सुखी राजकुमार' कहानी में कहानीकार वर्णन कम-से-कम करता है और संवादों के माध्यम से कहानी कहता है।
- कहानी संवादों के ज़रिए आगे बढ़ती है। इस कारण कहानी के कथानक में बहुत चुस्ती आ गई है।
- कहानी में एक भी शब्द हमें फ़ालतू नहीं लगता।
- राजकुमार के आरंभिक संवाद से हमें उसके अतीत और वर्तमान का पता कुछ ही वाक्यों में मिल जाता है।
- राजकुमार के चरित्र और गौरैया के चरित्र के विषय में भी उसके संवादों से ही पता लगता है।
- कहानी के अंत में मेयर एवं उसके साथी सभासदों के संवादों से उनकी क्षुद्र मानसिकता और स्वार्थपरता का तथा राजकुमार एवं गौरैया के त्याग और बलिदान की कीमत का अंदाज़ा ईश्वर के संवाद से होता है।
- कहानी में आम लोगों के दुखों को भी संवादों से ही उभारा गया है।
- राजकुमार की परदुखकातरता (दूसरों के दुख से दुखी होने का गुण) व हृदय की कोमलता उसके संवादों में मौजूद है।
- 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवाद छोटे-छोटे, चुस्त-दुरुस्त, सहज, सरल, रोचक और भावानुकूल हैं।
- संवाद कथानक को आगे बढ़ाने का काम करते हैं, पात्रों के चरित्र की विशेषताओं को उजागर करते हैं और कथावस्तु के मुख्य बिंदुओं का उद्घाटन करते हैं। इसके साथ-साथ वातावरण की सृष्टि कर उस पर टिप्पणी भी करते हैं।

प्रश्न 9 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

''प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताई, लेकिन इनसे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है- मनुष्य का दुख-दर्द, दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं! जाओ, मेरे नगर को देखकर बताओ कि वहाँ क्या हो रहा है?'' गौरैया शहर पर उड़ने लगी। अमीर अपने महलों में रंगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाए भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों पर से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे ज़र्द चेहरे लटकाए हुए सूनी निगाहों से देख रहे हैं। एक पुलिया के नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं- ''भागो यहाँ से!'' चौकीदार बोला और वे बारिश में भीगते हुए चल दिए।

क) यह गद्यांश किस पाठ से है? इसके लेखक कौन है?

ख) आश्चर्यजनक है - ''मनुष्य का दुख-दर्द, दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं!'' प्रस्तुत पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए यह वाक्य किसने कहा।

ग) जिस देश के बच्चे बीमारी और भुखमरी से ग्रस्त हों उस देश का भविष्य क्या होगा? अपने विचार लिखिए।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सुखी राजकुमार का हृदय भट्टी में न गलने का अभिप्राय है :

(क) भ्रष्ट अधिकारियों के कारण जस्ते में मिलावट होना

(ख) दान करते हुए राजकुमार की संवेदनाओं का चूक जाना

(ग) गौरैया का साथ पाने के लिए कूड़ेदान में फेंके जाने का यत्न

(घ) संवेदनाओं को स्वार्थ-सिद्धि का सामान न बनने देना

2. गौरैया सुखी राजकुमार के सान्निध्य में क्या सीखती है ?

(क) तरस खाना **(ख) निस्वार्थ प्रेम** (ग) दया करना (घ) आत्म-विश्लेषण

***

पाठ:14

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

(कविता)

कवयित्री- निर्मला पुतुल

मूलभाव:

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' ऐसी कविता है, जिसमें पेड़, नदी, पहाड़, हवा और पृथ्वी को मनुष्य के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य की भाषा में इसे 'मानवीकरण' कहते हैं।

इस कविता में मानवीकरण प्रकृति तथा पृथ्वी के दुख का अहसास कराने के लिए किया गया है।

पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है। अपनी संतुलित जिंदगी के लिए मनुष्य पेड़-पौधों, जल, वायु, जीव-जंतुओं, पर्वत आदि पर निर्भर है, फिर भी ज़्यादा-से-ज़्यादा सुविधाओं के भोग के लालच में वह इनका अंधाधुंध दोहन अर्थात् अनावश्यक उपयोग करता आ रहा है। ऐसा करके वह प्राकृतिक आपदाओं, जैसे- बाढ़, भूकंप, सूखा आदि को न्योता देता है।

पर्यावरण मानव-जीवन के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण के असुंतलित होने से मानव-जीवन पर अनेक रूपों में संकट आता है।

पेड़-पौधों, नदियों, पर्वतों और हवा को नष्ट एवं प्रदूषित होने से बचाना मनुष्य का कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पालन करके ही मानव सहित सभी प्राणियों की रक्षा की जा सकती है और पृथ्वी के सौंदर्य को बचाया जा सकता है।

मुख्य बिंदु:

- कविता में घटते वृक्ष, घटती हरियाली और मानवजीवन पर इसके विनाशकारी प्रभाव के प्रति चिंता व्यक्त की गई है।
- उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण आजकल लोग ज़्यादा-से-ज़्यादा चीजों को भोग लेने के लिए तत्पर हैं, इस स्वार्थी मनोवृत्ति का प्रभाव पेड़ों पर पड़ रहा है।
- पेड़ों का संकट पूरी मनुष्य जाति का संकट है, इसलिए हमें इसे अनुभव करना चाहिए और इसे दूर करने के उपाय भी करने चाहिए।
- नदियाँ धरती की जीवन-रेखा हैं। तरह-तरह के प्रदूषण और कूड़े-गंदगी के कारण वे गंदे नाले में परिवर्तित हो रही हैं।
- किसी भी चीज़ का उपयोग करते समय यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि उस चीज पर दूसरों का भी हक है।
- यह हमारा कर्त्तव्य है कि नदियों को साफ़ रखें, सूखने से बचाएँ। जल के अन्य स्रोतों को बढ़ावा दें। जब भी जल का उपयोग करें, ऐसे लोगों की चिंता भी करें, जिन्हें आज भी पानी सुलभ नहीं है।
- पहाड़ धरती की रक्षा के लिए अनिवार्य हैं, इसलिए इन्हें 'भूधर' कहा जाता है। आज ऊँची-ऊँची इमारतों के निर्माण के लिए पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा है, इससे आने वाले दिनों में धरती पर संकट बढ़ सकता है। हमें इस संकट को समझकर इसे दूर करने के प्रयास करने चाहिएँ।

- कवयित्री ने हवा को घर के पिछवाड़े ख़ून की उल्टियाँ करते दिखाया है। इसका आशय यह है कि हवा के निरंतर प्रदूषित होते जाने के कारण भयंकर रोग बढ़ रहे हैं। कविता में हवा को प्रदूषण से बचाने का आग्रह किया गया है।
- पेड़ों, पहाड़ों, नदियों आदि के कारण पृथ्वी सुंदर और युवा बनी रहती है। यदि ये सब नष्ट होते हैं, तो पृथ्वी बूढ़ी ही लगेगी। इन सबकी रक्षा करके हम पृथ्वी को असमय के बुढ़ापे से बचा सकते हैं, यह हमारा कर्त्तव्य है। ऐसा न करके हम अपने मनुष्य होने की सार्थकता भी सिद्ध नहीं कर पाएँगे।

काव्यांश-1

''क्या तुमने कभी सुनी है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय
से पेड़ों की चीत्कार?
कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हजारों-हजार हाथ?
क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?''

सरलार्थः

कवयित्री कल्पना करती है कि मनुष्य की तरह पेड़ भी भयभीत होते हैं। वे चमकती हुई कुल्हाड़ियों के डर से चीख़ते-चिल्लाते हैं। 'सभ्य समाज' पेड़ों को अपने उपयोग के लिए नष्ट करता है। इन पंक्तियों में घटती हुई हरियाली और मानव-जीवन पर इसके विनाशकारी प्रभाव की चिंता व्यक्त की गई है।
यह प्रकृति-विरोधी रवैया पूरी तरह से स्वार्थ पर आधारित है।

हमें भयभीत पेड़ों की चीत्कार महसूस करनी चाहिए। पेड़ों पर आया संकट मनुष्यता पर घिरा संकट है। कवयित्री ने पेड़ के अंगों में मानव-अंगों की कल्पना की है। यह कविता हमें प्रकृति के दुख से जोड़कर अधिक सजग और उदार मनुष्य बनाती है। पेड़ कुल्हाड़ी की चोट की आशंका से भयभीत होकर बचाव के लिए पुकारने लगता है। पेड़ की काँपती हुई टहनियाँ मानो बचाव के लिए पुकारते उसके हजारों हाथ हैं। मानो वे हमारी ओर उठे हैं कि हम पेड़ को बचाएँ।

पेड़ में जीवन होता है। अतएव किसी पेड़ के कटकर धरती पर गिरने पर उसकी आवाज उसी तरह ठेस पहुँचाएगी, मानो हमारा ही कोई हिस्सा कटकर गिर गया हो।

काव्यांश-2

''सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?
इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?''

सरलार्थः

यह काव्यांश नदियों के दुख को व्यक्त करता है । बड़े-बड़े कारखानों का गंदा पानी व कूड़ा नदियों में डाल दिया जाता है। श्रद्धा तथा धर्म के नाम पर लोग नदियों में ऐसी चीजें बहाते हैं, जिनसे नदियाँ गंदगी से भर जाती हैं। जीवन नदियों, पेड़ों और वनस्पतियों पर सीधे-सीधे निर्भर है, अतः इनकी दुर्दशा पर दुःख होता हैं। कवयित्री इस दुख का बोध शहरी और शिक्षित नागरिकों को कराना चाहती है। यहाँ नदी का मानवीकरण किया गया है। मनुष्य जब किसी गहरी पीड़ा से ग्रस्त होता है और उसके दुख को समझने वाला कोई नहीं होता, तो वह एकांत में सिसक-सिसक कर रोता है। नदी भी ऐसा ही करती है। वह मुँह ढाँपकर रोती है।

नदी के एक किनारे पर कोई स्वार्थी व्यक्ति आजीविका के लिए पाले जाने वाले पशुओं को नहला रहा है और कोई साबुन से अपने मैले कपड़े धोकर जल को गंदा कर रहा है। दूसरे किनारे पर कोई प्यासा पानी पी रहा है और कोई स्त्री किसी देवता को जल चढ़ाकर पूजा कर रही है। कवयित्री ऐसे लोगों से प्रश्न पूछकर उन्हें पानी प्रदूषित व अपवित्र करने के लिए शर्मिंदा करना चाहती है। जो चीज़ें हमें प्रकृति ने दी हैं, उन पर केवल हमारा ही अधिकार नहीं है, आने वाली पीढ़ियों का भी है। हमारा कर्तव्य है कि हम नदियों को साफ़ रखें, उन्हें सूखने से बचाए।

काव्यांश-3

''कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिए बैठे पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक, कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख़?''

सरलार्थः

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' में पहाड़ के मानवीकरण द्वारा पहाड़ की भयंकर यातना को महसूस करने का आग्रह किया गया है। मनुष्य ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने के लिए पत्थर, सीमेंट आदि पाने को पहाड़ में डाइनामाइट लगाकर उसमें विस्फोट करता है। जब पहाड़ विस्फोट से टूटता है, तो ऐसा लगता है, मानो मनुष्य के इस

व्यवहार से उसका सीना दहल गया हो। पहाड़ के सीने पर मनुष्य हथौड़ों आदि से तेज आघात करता है, इससे उसके पत्थर छिटककर दूर गिरते हैं। कविता की इन पंक्तियों में पहाड़ के प्रति मनुष्य के क्रूर व्यवहार की ओर संकेत किया गया है।

काव्यांश-4

''ख़ून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?''

सरलार्थः

ख़ून की उल्टियाँ एक भयंकर रोग का लक्षण होती हैं। वायु-प्रदूषण से खुद वायु ही रोगी हो गई है, इसीलिए कवयित्री ने हवा को ख़ून की उल्टियाँ करते दिखाया है। पिछवाड़े शब्द का अर्थ है, घर के पीछे का हिस्सा। हमारा सारा ध्यान मुख्य द्वार की सजावट और सफ़ाई पर रहता है। पिछवाड़े की हम चिंता नहीं करते। वहाँ कूड़ा फेंकते हैं। इससे गंदगी-बदबू फैलती है। मनुष्य विकास के बड़े-बड़े दावे करता है। बाहर की सफ़ाई भीतर की गंदगी को कम नहीं कर सकती और उसके दुष्परिणामों से हमें बचा नहीं सकती। प्रदूषित हवा गंभीर रोगों का कारण बनती है। इन पंक्तियों में हवा को प्रदूषित होने से बचाने का आग्रह किया गया है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मानवीकरण का अर्थ है–

(क) **जो मानव नहीं, उसे मानव के रूप में कल्पित करना** (ख) दूसरों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख मानना

(ग) पेड़, पहाड़, नदी आदि के प्रति चिंता प्रकट करना (घ) सच्चा मनुष्य बनने की क्रिया

2. पर्यावरण का अर्थ है-

(क) **मनुष्य के लिए अनिवार्य आस-पास की प्राकृतिक स्थिति**

(ख) प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे- भूकंप, बाढ़, सूखा आदि

(ग) वृक्षों, नदियों, पहाड़ों को मनुष्य के रूप में चित्रित करना

(घ) प्रकृति को सूक्ष्मता के साथ देखने की क्षमता

3. कविता में पेड़ों के हज़ारों हज़ार हाथों के हिलने से अभिप्राय है–

(क) खुशी से झूम उठना (ग) तूफ़ान से काँपना

(ख) **रक्षा की गुहार लगाना** (घ) हवा से थिरकना

4 'ख़ून की उल्टियाँ करते अपने घर के पिछवाड़े' पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री–

(क) चंद लोगों के विकास की यातना झेलने वाले वर्ग की पीड़ा का संकेत करती है।

(ख) घर के पिछले भागों को साफ़-सुथरा रखने का आग्रह करती है।

(ग) प्रकृति पर मनुष्य की विजय का उद्घोष करती है।

(घ) (क) और (ग) दोनों

5 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में कौन-सी विशेषता नहीं मिलती?

(क) मानवीकरण (ख) प्रश्न शैली

(ग) दृश्यात्मकता **(घ) ओजस्विता**

6. मानवीकरण नहीं है-

(क) पेड़ों का चीत्कार (ख) नदियों का रोना

(ग) मौन समाधि लिए बैठा पहाड़ **(घ) पेड़ की हिलती टहनियाँ**

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता के अनुसार सन्नाटे में नदियाँ क्या करती है?

उत्तर- बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता के अनुसार सन्नाटे में नदियाँ मुँह ढाँपकर रोती है। नदी की पीड़ा यह है कि वह हमें जीवन देने के लिए अपना जल देती है और हम उसे नष्ट कर रहे हैं। यहाँ पर नदियों के घटते पानी, उनमें बढ़ते प्रदूषण को लेकर दुख प्रकट किया है।

प्रश्न 2 बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता में वर्णित जल प्रदूषण के कारण लिखिए।

उत्तर- 1) स्वार्थी व्यक्ति अपने मवेशी अर्थात् आजीविका के लिए पाले जाने वाले पशुओं को नदियों में नहलाते हैं।

2) मनुष्य द्वारा साबुन से अपने मैले कपड़े धोए जा रहे है इस प्रकार वे दोनों नदी के जल को गंदा कर रहे हैं।

3) बड़े-बड़े कारखानों का गंदा पानी नदियों में गिराया जाता है।

प्रश्न 3 बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता में पृथ्वी को बूढ़ी क्यों कहा गया है?

उत्तर -पृथ्वी पर पेड़ पौधे कम हो रहे हैं, नदियाँ सूख रही हैं, पहाड़ नष्ट हो रहे हैं, पानी गंदा हो रहा है तथा हवा प्रदूषित हो रही है। इस कारण हरियाली, शुद्ध पानी, स्वच्छ हवा और विशाल पर्वतों के बिना धरती बंजर, रूखी तथा रोगी हो रही है। इसीलिए पृथ्वी को बूढ़ी कहा गया है।

प्रश्न 4. मानवीकरण क्या है? बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण का एक उदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -जो मानव नहीं है या जड़ है, उसे मनुष्य के रूप में दिखाना मानवीकरण कहलाता है।

मानवीकरण का एक उदाहरण **-पेड़ों का चीत्कार करना।**

मनुष्य की तरह पेड़ भी भयभीत होते हैं। वे भय से चीख़ते-चिल्लाते भी हैं। वे भी बचाव के लिए पुकारते हैं। जड़ पेड़ों को चेतन मनुष्य की तरह भयभीत होना बताया गया है। अत: पेड़ों (प्रकृति) का तथा पृथ्वी के दुख का एहसास कराने के लिए मानवीकरण किया गया है।

प्रश्न 5. बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता हमें क्या सिखाती है? और कैसे?

उत्तर-

1) हमें दूसरों से समानुभूति रखना सिखाती है। हमें प्रकृति के दुख से जोड़कर अधिक सजग और उदार मनुष्य बनाती है।

2) पेड़-पौधों, नदियों, पर्वतों और हवा को नष्ट एवं प्रदूषित होने से बचाकर पृथ्वी के सौंदर्य को बचाया जा सकता है।

3) मनुष्य चाहे तो धरती को असमय के बुढ़ापे से बचा सकता है अर्थात् हरा-भरा और प्रकृतिक संसाधनों से संपन्न बना सकता है।

4) प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनकर पर्यावरण-रक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है।

प्रश्न 6. 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के आधार पर बताइए कि आप पर्यावरण पर मंडराते खतरे के लिए हम किस सीमा तक उत्तरदायी है? उसे बचाने के लिए हमें कौन सा एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाना चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -पर्यावरण शब्द परि+आवरण से बना है जिसका अर्थ है- हमारे आसपास की प्राकृतिक स्थिति। पर्यावरण प्रकृति का अमूल्य उपहार है।

पर्यावरण पर मंडराते खतरे के **कारण-**

1) ज़्यादा-से-ज़्यादा सुविधाओं के भोग के लालच में मनुष्य प्रकृति का अंधाधुंध दोहन अर्थात् अनावश्यक उपयोग करता जा रहा है।

2) नदियों का प्रदूषित होना व सूखना, वायु प्रदूषण, पेड़ों का काटना, पहाड़ों को नष्ट करना आदि।

3) प्रकृति की आवश्यकता से अधिक उपभोग करने वालों के कारण बुजुर्गों की तरह ही हमारी पृथ्वी की स्थिति हो गयी है।

उपाय:

1) पौधारोपण करके बंजर हुई धरती को फिर से हरा-भरा बना सकते हैं।

2) वर्षा के जल का संरक्षण करके और तालाब-बावड़ियाँ, झील, कुएँ आदि बनाकर या उन्हें बचाकर पानी की कमी को दूर कर सकते हैं।

3) पेड़ों के प्रति संवदेनशील हों और उन्हें कटने से बचाएँ।

4) हवा को प्रदूषित होने से बचाएँ।

5) नदियों को स्वच्छ बनाएँ और उनमें कूड़ा करकट न डालें।

6) पर्वतों को नष्ट होने से बचाएं।

प्रश्न 7. निम्नलिखित काव्यांश किस कविता से लिया गया है? इसके कवि का नाम उल्लेख करते हुए काव्यांश का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

''थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करने वाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?
अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!''

उत्तर- **कवयित्री का नाम** - निर्मला पुतुल
कविता का नाम - 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख'

सरलार्थ

आजकल अधिकतर लोग ज्यादा से ज्यादा सुविधाएँ प्राप्त करने की होड़ में व्यस्त हैं। बुज़ुर्गों ने अपनी संतान को पाल-पोस कर बड़ा किया और अब उनकी संतान के पास इतना भी समय नहीं है कि वह उनकी देखभाल और सेवा कर सके, उनसे बात करके उनका दुख-सुख पूछे। ऐसे में ये बड़े-बूढ़े बहुत उदास, चुप तथा दुखी रहते हैं।

इन बुज़ुर्गों की तरह ही हमारी पृथ्वी की स्थिति हो गयी है। पृथ्वी को यहाँ पर बूढ़ी कहा गया है क्योंकि पेड़-पौधे कम हो रहे हैं, नदियाँ सूख रही हैं, पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा है, पानी गंदा हो रहा है और हवा प्रदूषित हो रही है। नदी, पेड़, हवा आदि इसी पृथ्वी के अंग हैं।

हम देखते हैं कि शरीर का ध्यान न रखने से बुढ़ापे में दाँत गिर जाते हैं, शरीर पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, केश सफ़ेद हो जाते हैं, शरीर रोगी हो जाता है। इसी प्रकार हरियाली, शुद्ध पानी, स्वच्छ हवा, विशाल पर्वतों के बिना धरती भी बंजर, रूखी और रोगी हो जाती है।

मनुष्य चाहे तो धरती को असमय के बुढ़ापे से बचा सकता है अर्थात् हरा-भरा और प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न बना सकता है। मनुष्य से आशा की जाती है कि वह पृथ्वी का दुख समझे।

काव्य सौंदर्य-

- मनुष्य से आशा की जाती है कि वह पृथ्वी का दुख समझे।
- पेड़-पौधों, नदियों, पर्वतों और हवा को नष्ट एवं प्रदूषित होने से बचाना मनुष्य का कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पालन करके ही मानव सहित सभी प्राणियों की रक्षा की जा सकती है।
- प्रदूषण की समस्या को रेखांकित किया गया है।
- भावों के अनुकूल भाषा का प्रयोग है।
- बातचीत की प्रश्न-शैली का प्रयोग है।
- प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
- कविता में दृश्यात्मकता है।
- भाषा में चित्रात्मक शैली का प्रयोग है।
- उर्दू-फ़ारसी शब्द युक्त खड़ी बोली का प्रयोग है।
- मुक्त-छंद व अतुकांत कविता है।

पाठ:15 अंधेर नगरी

(नाटक)

लेखक: भारतेंदु हरिश्चंद्र

सारांश:

'अंधेर नगरी' में एक ऐसे नगर का चित्रण है, जहाँ न्याय-अन्याय में फ़र्क नहीं किया जाता। महंत अपने दो चेलों के साथ जिस नगर में पहुँचता है, वहाँ हर वस्तु का भाव 'टके सेर' है। यह देखकर महंत को हैरानी होती है। वह अपने चेलों को तुरंत नगर छोड़ने की सलाह देता है। लेकिन एक चेला गुरु की बात न मानकर उसी नगर में रह जाता है।

इस अंधेर नगरी के राजा के राज्य में एक बकरी दीवार से दबकर मर जाती है। फ़रियादी राजा के पास न्याय की आशा लेकर पहुँचता है। राजा के हुक्म अनुसार बकरी के मरने के लिए जिम्मेदार के रूप में क्रमशः कल्लू बनिए, कारीगर, चूने वाले, भिश्ती, कसाई, गड़रिए तथा कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है, लेकिन हर व्यक्ति किसी दूसरे को जिम्मेदार बनाकर खुद छूटता जाता है।

अंततः गोबरधनदास को पकड़ लिया जाता है। फाँसी के पहले चेला गुरु को याद करता है। महंत आकर गोबरधनदास से गुप्त बातचीत करता है। फिर गुरु चेले में वाद-विवाद होने लगता है। कारण पूछने पर महंत बताता है कि इस शुभ मुहूर्त में जिसे फाँसी होगी, उसे स्वर्ग मिलेगा। यह सुनकर राजा स्वयं फाँसी पर झूलने के लिए तैयार हो जाता है।

मुख्य बिन्दु:

- **नाटक के तत्त्व**
  - कथावस्तु
  - चरित्र-चित्रण
  - संवाद-योजना
  - अभिनेयता (मंच पर अभिनय किए जाने की क्षमता)
  - परिवेश
  - भाषा-शैली
  - उद्देश्य

- यह एक व्यंग्यात्मक नाटक है।
- इस नाटक का उद्देश्य अंग्रेजी शासन के अंतर्गत भारत की दुर्दशा को चित्रित करना है।
- अंग्रेजों ने अपनी नीतियों से भारत को अंधेर नगरी बना दिया। अंधेर नगरी में न किसी नियम का पालन किया जाता है, न ही कोई जनोन्मुख न्याय-व्यवस्था है।
- इस नाटक के व्यंग्य को स्वाधीन भारत के शासक-वर्ग पर भी लागू किया जा सकता है।
- नगर बाहर से सुंदर तथा अंदर से कुरूप है। ऐसी शासन-व्यवस्था, जहाँ व्यक्ति और वस्तु की कद्र गुणों के आधार पर नहीं होती।
- अपने छोटे-मोटे सुखों के कारण व्यवस्था की मनमानी से आँखें नहीं फेरनी चाहिए।
- जो राज धर्म और नीतियों पर आधारित नहीं होता, वह अपने आप नष्ट हो जाता है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अंधेर नगरी के बारे में क्या सच नहीं है-

क) हर व्यक्ति अपनी बला दूसरे पर टालता है।
ख) राजा के अधिकारी चापलूस और मूर्ख हैं।
ग) गुणों की कोई कद्र नहीं है।
घ) राजा बहुत न्यायप्रिय है।

2. गोबरधनदास को पकड़कर ले जाया गया, क्योंकि–

क) उसने अपने गुरु का कहना नहीं माना
ख) वह भीख माँगकर मिठाई खा रहा था।
ग) किसी-न-किसी को फाँसी लगानी ही थी।
घ) उस मुहूर्त में मरने वाला सीधे स्वर्ग जाता।

3. गोबरधनदास द्वारा अपने गुरु जी को पुकारने का उद्देश्य था–

क) राजा को फाँसी पर चढ़वाना
ख) राजा से प्रजा की रक्षा करवाना
ग) शुभ मुहूर्त का पता लगाना
घ) खुद को फाँसी से बचाना

4. राजा ने स्वयं फाँसी चढ़ने का निर्णय क्यों लिया?

क) अपने को अपराधी मानकर
ख) साधुओं को दंड न देने की भावना से
ग) अपनी गर्दन फंदे के उपयुक्त मानकर
घ) स्वयं मुक्ति पाने की लालसा में

5. महंत ने वह नगर छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?

क) सभी वस्तु टके सेर मिलने के कारण
ख) पुलिस द्वारा रिश्वत लेने के कारण
ग) भावी संकट की आशंका के कारण
घ) गोबरधनदास द्वारा निंदा के कारण

6. घासीराम अफसरों के बारे में व्यंग्य करता है कि वे–

क) निकम्मे होते हैं
ख) चाव से चने खाते हैं
ग) मुफ्त में चने खाते हैं
घ) टैक्स बढ़ा देते हैं

7. 'टके सेर भाजी टके सेर खाजा' में निहित व्यंग्यार्थ है–

क) सभी चीज़ें बहुत सस्ती हैं
ख) एक टके की एक सेर भाजी खाओ
ग) गुणों और मूल्यों की कदर नहीं है
घ) सभी नागरिकों को समान महत्त्व मिले

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'अंधेर नगरी नाटक' में चूरन वाला अपना चूरन बेचते हुए किन लोगों पर व्यंग्य करता है? किन्ही चार के नाम लिखिए ।

उत्तर- 1. महाजन 2. लाला लोग 3. एडिटर जात 4. साहेब लोग 5. पुलिस वाले

प्रश्न 2. 'अंधेर नगरी' नाटक के आधार पर बताइए कि नगर के लोग मोटे क्यों नहीं होते थे ?

उत्तर- राजा के न्याय के डर से नगर के लोग मोटे नहीं होते थे।

प्रश्न 3. अंधेर नगरी के पात्र महंत, गोबरधनदास और राजा का चरित्र-चित्रण कीजिए?

उत्तर- **महंत का चरित्र-चित्रण**

महंत या **गुरु** का चरित्र विवेक का प्रतीक है। वह इस सच का संदेश देता है कि जहाँ व्यक्ति और वस्तु के गुणों की कद्र न हो और हर घटना मूल्यांकन के लिए एक ही पैमाना अपनाया जाता हो, ऐसी व्यवस्था में रहना विपत्ति का कारण बन सकता है।

महंत चरित्र के माध्यम से लेखक बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल करके अपनी स्वाधीनता बचाने और छोटी-मोटी सुविधाओं में न पड़कर अपने स्वाभिमान की रक्षा करने का संदेश देता है।

गोबरधनदास का चरित्र-चित्रण

गोबरधनदास एक ऐसा पात्र है, जो लालच का शिकार हो जाता है। जिसका दुखद फल उसे मिलता है। गोबरधनदास सुख की ख़ातिर गुरु के उपदेश की अवहेलना करता है। वह आम भारतीयों की उस मानसिकता का प्रतिनिधि है, जो अपने छोटे-छोटे सुखों की ख़ातिर व्यवस्था की मनमानी और विवेकहीनता तथा अन्याय की ओर से आँखें मूँद लेता है।

राजा का चरित्र-चित्रण

राजा के बारे में नाटक में बताया गया है कि वह चौपट है। वह भोग-विलास में डूबा रहता है और नशे में धुत्त रहता है। वह आत्मकेंद्रित है और उसे अपने मूल कर्त्तव्य यानी जनता के दुख-सुख की भी चिंता नहीं है। वह अपनी जनता के प्रति संवेदनशील नहीं है। 'अंधेर नगरी' के 'चौपट्ट राजा' के लिए न्याय नहीं, उसका दिखावा महत्त्वपूर्ण है। राजा के सलाहकार वास्तविकता जानते हुए भी राजा की चापलूसी करते हैं।

प्रश्न 4. 'अंधेर नगरी' नाटक का कौन सा पात्र आपको सबसे अधिक पसंद आया और क्यों?

उत्तर- अंधेर नगरी के अनेक पात्रों में महंत महत्त्वपूर्ण है। **महंत** या **गुरु** का चरित्र विवेक का प्रतीक है।

वह इस सच का संदेश देता है कि जहाँ व्यक्ति और वस्तु के गुणों की कद्र न हो और हर घटना के मूल्यांकन के लिए एक ही पैमाना अपनाया जाता हो, ऐसी व्यवस्था में रहना विपत्ति का कारण बन सकता है।

नाटक के अंत में महंत अपने शिष्य गोबरधनदास को बचाने का उपाय करता है। संदेश देता है कि ऐसा राज, जो धर्म और बुद्धि पर आधारित नहीं हो - वह अपने आप ही नष्ट हो जाता है।

महंत के चरित्र के माध्यम से लेखक बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल करके अपनी स्वाधीनता बचाने और छोटी-मोटी सुविधाओं में न पड़कर अपने स्वाभिमान की रक्षा करने का संदेश देता है।

प्रश्न 5. 'अंधेर नगरी' नाटक की संवाद योजना की तीन विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर-

- नाटक में संवादों का विशेष महत्त्व होता है।
- 'अंधेर नगरी' के संवाद पात्रों की विशेषताओं को हमारे सामने स्पष्ट कर देते हैं।
- संवाद सार्थक व प्रभावशाली हैं।
- संवादों से नाटक में रोचकता आई है।
- ये संवाद अभिनेयता में भी सहायक हैं।
- उनमें तुक अथवा काव्यात्मकता है।
- इस नाटक के संवाद संक्षिप्त हैं और व्यंग्य को उभारने में पूरी तरह सफल हुए हैं।

प्रश्न 6- अंधेर नगरी नाटक लिखने के पीछे भारतेंदु हरिश्चंद्र का उद्देश्य क्या था? स्पष्ट कीजिए?

उत्तर-

- 'अंधेर नगरी' एक व्यंग्य नाटक है, जिसमें अन्यायी शासन-व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर किया गया है।
- भारतेन्दु ने अन्यायी राजा की कल्पना के माध्यम से अंग्रेज़ी शासन-व्यवस्था की कमियों पर करारी चोट की गई है।
- ऐसी नगरी जहाँ तानाशाह की सत्ता है, न्याय का आडंबर होता है और जनता का शोषण किया जाता है। वहाँ गुणवान और गुणहीन लोगों में कोई भेद नहीं किया जाता।
- अत: महंत जैसे विवेकी लोग ऐसे नगर को भावी संकट की आशंका के कारण छोड़ जाना ही उपयुक्त मानते हैं।
- नाटक में यह संदेश दिया गया है कि लोभ में पड़कर देशहित को नहीं भूलना चाहिए।

प्रश्न 7- अंधेर नगरी' की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए?

उत्तर-

- 'अंधेर नगरी' की भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ फ़ारसी, अंग्रेजी शब्दों का भी अवसरानुकूल प्रयोग किया गया है।
- जैसा पात्र है, उसी के स्वभाव एवं आचरण के अनुकूल उसकी भाषा है।

- नाटक की भाषा पात्रों की नाटकीयता को भी पूरी तरह से अभिव्यक्त करने में सक्षम है।
- इस नाटक की भाषा-शैली में व्यंग्यात्मक अभिव्यक्तियों का प्रयोग हैं।
- नाटक की भाषा पर ब्रजभाषा का असर है।

प्रश्न 8- क्या 'अंधेर नगरी' रंगमंचीयता (अभिनेयता) की दृष्टि से सफल नाटक है?

उत्तर-

- अभिनेयता का अर्थ है– मंच पर अभिनय किए जाने की क्षमता। नाटक को सफल बनाने के लिए यह अनिवार्य तत्त्व है।
- भारतेन्दु ने इस नाटक में पर्याप्त रंग निर्देश दिए हैं।
- मंचन के लिए 'अंधेर नगरी' को कुछ दृश्यों में बाँटा गया है। पात्र कैसे प्रवेश करेंगे, किस भाव में बोलेंगे आदि को भी जगह-जगह स्पष्ट कर दिया गया है।
- इस नाटक में कोई भी दृश्य या स्थिति ऐसी नहीं है, जिसे मंच पर प्रस्तुत न किया जा सके।
- इस नाटक के प्रस्तुतिकरण के लिए बहुत अधिक साधनों की आवश्यकता नहीं है।
- इन सभी गुणों के कारण 'अंधेर नगरी' बहुत बार मंचित हुआ है।
- अत: रंगमंचीयता (अभिनेयता) की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है।

प्रश्न 9- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

उत्तर- बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने को उनको ले गए, तो फाँसी का फंदा बड़ा हुआ, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज़ किया, इस पर हुकुम हुआ कि एक मोटा आदमी पकड़कर फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मारने के अपराध में किसी-न-किसी को सज़ा होनी ज़रूर है, नहीं तो न्याय न होगा। इसी वास्ते तुमको ले जाते हैं कि कोतवाल के बदले तुमको फाँसी दें।

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) कोतवाल की फाँसी का हुक्म राजा ने क्यों बदल दिया? इससे वहाँ की शासन व्यवस्था के बारे में क्या पता चलता है?

(iii) कोतवाल के बदले किसको फाँसी देने की बात की जा रही है? क्या यह न्यायपूर्ण है?

(iv) इस गद्यांश की भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

पाठ:16 अपना-पराया

(वैज्ञानिक लेख)

लेखक- हरसरन सिंह विश्नोइ

सारांश :

- मानव-शरीर एक किले की तरह है। वह अपने और पराये की यानी अनुकूल और प्रतिकूल की पहचान करना जानता है और प्रतिकूल चीजों को यथासंभव बाहर निकाल देने का यत्न करता है। इस यत्न को शरीर की सामान्य सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाएँ कहा जा सकता है। आँसू, छींक, नाक बहना, उल्टी आना ऐसी ही प्रतिक्रियाएँ हैं, जो रोगाणुओं को ऊतकों तक पहुँचने से रोकती हैं।
- किंतु, कुछ अतिसूक्ष्म विषाणु (वायरस) पतली त्वचा तथा समूची भीतरी परतों को भेदकर भीतर घुस जाते हैं। इनका मुकाबला करने के लिए शरीर की सुरक्षात्मक व्यवस्थाएँ सक्रिय हो उठती हैं।
- संक्रमण (इन्फ़ेक्शन) की स्थिति में रक्त की श्वेत कणिकाएँ रोगाणुओं से युद्ध करती हैं, जिसमें दोनों पक्षों के सदस्य हताहत होते हैं, इसी को मवाद कहते हैं।
- यदि रोगाणु विजयी रहे, तो वे ऊतक तरल और फिर रक्त तक पहुँच जाते हैं। रक्त तक पहुँचने से पहले शरीर में गिल्टियाँ बनने लगती हैं, ये शरीर की सुरक्षा चौकियाँ होती हैं, जिनमें भक्षक कोशिकाएँ होती हैं। मगर विषाणुओं का तो ये भी कुछ नहीं बिगाड़ पातीं। ऐसी स्थिति में शरीर में प्रतिपिंडों (ऐंटीबाडी) का निर्माण होता है। इन प्रतिपिंडों के निर्माण के सिद्धांत पर ही **चेचक, पोलियो, टिटेनेस, टाइफ़ाइड, क्षय रोग, डिफ़्थीरिया, हैजा आदि के टीके (वैक्सीन)** बनाए गए हैं।
- अलग-अलग व्यक्तियों के शरीर के लिए कुछ चीजें माफ़िक नहीं होतीं। इसे उस चीजों से **एलर्जी** कहा जाता है। ये चीजें प्राय: ऐसे प्रोटीन होते हैं, जो उस शरीर के लिए सदैव पराये रहते हैं। कभी-कभी शरीर के भीतर की बागी कोशिकाएँ हद से अधिक बढ़ जाती हैं और कैंसर का रूप ले लेती हैं।

मुख्य बिंदु:

विज्ञान की मूल भावना : कार्य-कारण-संबंध को समझना

- (i) जीव विज्ञान–प्राणियों की शारीरिक संरचना एवं व्यवहार का अध्ययन
  (ii) आयुर्विज्ञान–रोग, रोग के लक्षण, कारण एवं उपचार का अध्ययन
- (i) चेतन पिंड–(क) बाहरी वातावरण से ग्रहण और निस्सृत करना
  (ख) बाहरी वातावरण से अपनी सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील होना
  (ii) जड़ पिंड–चेतन पिंड वाले दोनों गुणों का अभाव

ज्ञानेंद्रियाँ

नाम	अंग	कार्य
(i) स्पर्शेंद्रिय	त्वचा	स्पर्श
(ii) दृश्येंद्रिय	आँख	देखना
(iii) घ्राणेंद्रिय	नाक	सूँघना
(iv) श्रवणेंद्रिय	कान	सुनना
(v) स्वादेंद्रिय	जीभ	स्वाद बताना

ज्ञानेंद्रिय →	संवेदन तंत्रिकाएँ →	मस्तिष्क →	कर्मेंद्रिय
(संपर्क में आई वस्तु का ज्ञान)	(ज्ञानेंद्रियों का संदेश मस्तिष्क तक ले जाना)	(सूचना दर्ज करना, पूर्व सूचनाओं के आधार पर विश्लेषण,	(मस्तिष्क के आदेश का अनुपालन) आदेश देना)

● साँस लेना : वायु का नाक द्वारा भीतर फेफड़ों तक पहुँचना–फेफड़ों द्वारा ऑक्सीजन का अवशोषण–कार्बन डाई ऑक्साइड आदि हानिकर गैसों को वापस बाहर फेंकना

● खाद्य पदार्थों के तत्त्व : प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, वसा, खनिज, लवण

● (i) जीवाणु (बैक्टीरिया)–अत्यंत छोटे सजीव पिंड, जो आँख से नहीं, बल्कि माइक्रोस्कोप से ही देखे जा सकते हैं। (ii) रोगाणु–वे जीवाणु, जो शरीर में रोग फैलाते हैं।

(iii) विषाणु (वाइरस)–विषैले रोगाणु

● अधिकांश जीवाणु तेज़ ताप में जीवित नहीं रह पाते, अतः उबला पानी और पका भोजन प्रायः सुरक्षित होता है।

प्रतिरक्षा की सामान्य प्रक्रिया

(i) नहाने से त्वचा पर मौजूद रोगाणुओं से छुटकारा

(ii) (क) नासिका छिद्र के बालों द्वारा अवरोध

(ख) श्लेष्मा में रोगाणुओं का चिपककर बाहर होना

(ग) छींक

(iii) खाँसी के साथ बलगम में समेटकर रोगाणुओं को बाहर करना

(iv) लार द्वारा रोगाणुओं को नष्ट किया जाना

(v) आमाशय में अम्ल द्वारा नष्ट किया जाना

(vi) पानी में घुलकर मूत्र के रूप में बाहर आना

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1 शरीर में अपनी अनेक सुरक्षा व्यवस्थाएँ हैं, तो बताइए कि छींक आने और नाक से पानी बहने से हमें-

क) हानिकर पदार्थों से मुक्ति मिलने की संभावना होती है ।ख) नाक में तकलीफ़ और जलन होती है।
ग) कहीं बाहर जाने पर अपशकुन होता है । घ) मौसम के बदलने की सूचना मिलती है।

2) टीकों के माध्यम से शरीर में पहुँचाए जाते हैं-

क) एंटीबायटिक **ख) रोगाणुओं के विष** ग) विटामिन
घ) प्रतिपिंड

3) डिप्थीरिया रोग शरीर के किस अंग में होता है :

क) आँख में ख) नाक में ग) कान में **घ) गले में**

4) रक्त की श्वेत कणिकाएँ-

क) रोगाणुओं का भोजन बन जाती हैं ख) रोगाणुओं को ऊतक तरल तक पहुँचाती हैं
ग) रोगाणुओं से लड़ती हैं घ) निष्क्रिय रहती हैं

5) एड्स में-

क) शरीर पर बड़े-बड़े रिसने वाले ज़ख़्म हो जाते हैं। **ख) शरीर की प्रतिरक्षात्मक व्यवस्था कमज़ोर होने लगती है।**
ग) शरीर में प्रतिपिंडों की अधिकता हो जाती है। घ) शरीर की कोशिकाओं में असामान्य वृद्धि हो जाती है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1- पाँच ज्ञानेंद्रियों के नाम लिखें?

उत्तर- पाँच ज्ञानेंद्रियों के नाम - त्वचा, आँख, नाक, कान और जीभ ।

प्रश्न 2- 'श्लेष्मा' किसे कहते हैं और इसका क्या काम होता है ?

उत्तर- नाक से लेकर साँस की नली और फेफड़ों तक एक लसलसा चिपचिपा पदार्थ मौजूद रहता है। विज्ञान की भाषा में इसे श्लेष्मा कहा जाता है।

इस चिपचिपे श्लेष्मा में रोगाणु चिपक जाते हैं, जिन्हें हम नाक साफ करते समय बाहर कर देते हैं अथवा नाक अपने आप हवा के झटके के साथ इसे बाहर फेंक देती है, जिसे छींक आना कहते हैं। खाँसी के साथ बलगम का बाहर आना भी इसी प्रक्रिया का एक हिस्सा है।

प्रश्न 3- 'अपना पराया' पाठ में शरीर रूपी दुर्ग की बाहरी दीवार किसे कहा गया है और क्यों ?

उत्तर- त्वचा, देह रूपी दुर्ग की बाहरी दीवार है। यह दीवार शरीर की मुख्यत: दो प्रकार से रक्षा करती है। प्रथम, यह शरीर की नमी को भाप बनकर उड़ जाने से रोकती है। दूसरे, वायु और वस्त्रादि के स्पर्श से अपने ऊपर आकर जमने वाले असंख्य रोगाणुओं को यह बाहर ही रोके रहती है।

प्रश्न 4- ऐसे रोगों के नाम लिखिए, जिनके टीके उपलब्ध हैं। टीके किस सिद्धांत पर कार्य करते है?

उत्तर- आज अनेक रोगों से बचाव के टीके बन चुके हैं। जैसे - चेचक, पोलियो, टिटेनेस, डिप्थीरिया, हैजा, टाइफ़ाइड,

क्षय रोग आदि। प्रतिपिंड बनने के सिद्धांत पर टीकों का निर्माण किया जाता है। टीके हमारे शरीर में उन रोग से लड़ने के लिए प्रतिपिंड (ऐंटीबाडी) तैयार कर देते हैं।

प्रश्न 5- मुख के भीतर जीभ एक द्वारपाल जैसा कार्य कैसे करती है?

उत्तर- मुख के भीतर जीभ एक द्वारपाल जैसा कार्य करती है। खाने-पीने के प्रत्येक पदार्थ का स्वाद लेकर वह उसे परख लेती है। कड़वे और दु:स्वाद पदार्थ को हमारी जीभ प्राय: भीतर ले जाने से इनकार कर देती है। भोजन के ग्रास में भूल से आया हुआ कोई बाल अथवा कंकड़-पत्थर प्राय: जीभ की पहुँच से बच नहीं पाता।

प्रश्न 6- अधिक मात्रा में पानी पीने की सलाह क्यों दी जाती हैं?

उत्तर- रोगाणुओं को हमारे पेट में मौजूद पानी अपने घेरे में लेकर मूत्र के रूप में बाहर कर देता है। इसीलिए बड़े-बुज़ुर्ग और डॉक्टर हमें ख़ूब पानी पीने की सलाह देते हैं। अधिक मात्रा में साफ पानी पीकर हम अपने शरीर रूपी किले को बिना नुकसान पहुँचाए रोगाणुओं को बाहर का रास्ता दिखा देते हैं।

प्रश्न 7- एड्स के मरीजों के साथ लोग बुरा व्यवहार करते है और लोगों में इस बीमारी के बारे में फैले भम्र को आप कैसे दूर कर सकते हैं। अपने प्रयासों के बारे में लिखो।

उत्तर- एड्स के मरीजों के साथ लोग बुरा व्यवहार करते है। लोगों में इस बीमारी के बारे में फैले भम्र को दूर करने की तथा इसके विषय में सही जानकारी की आवश्यकता है। 'एड्स' ऐसी बीमारी है, जिसमें रोगी के शरीर की प्रतिरोधक-क्षमता धीरे-धीरे समाप्त होती जाती है। एड्स एच0आई0वी0 वायरस के संक्रमण से होता है। यह संक्रमण संक्रमित व्यक्ति के ख़ून या उससें असुरक्षित यौन- संबंधों के ज़रिये दूसरे तक पहुँचता है। हमें एड्स रोगी के प्रति समाज को प्रेम और सहानुभूति के भाव उजागर करने चाहिए।

प्रश्न 9- अपना पराया' पाठ को लिखने के पीछे लेखक का उद्देश्य क्या था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अपना पराया' पाठ को लिखने के पीछे लेखक का उद्देश्य था -

- शरीर-तंत्र की क्षमता और उसके व्यवहार के ढंग को स्पष्ट करना ।
- शरीर में होने वाले कुछ विकारों के वैज्ञानिक कारण की जानकारी देना।
- रोगाणुओं के हमले और उनके बचाव के उपाय बताना।
- रोगों से बचाव में टीकों का महत्त्व बताना।
- एड्स जैसी घातक बीमारियों और उनसे बचाव के उपाय बताना।
- ज्ञानेंद्रियों के द्वारा होने वाले संक्रमणों के बारे में जानकारी व बचाव के लिए उपाय स्पष्ट करना।

प्रश्न 10- अपना पराया' पाठ के आधार पर स्पष्ट करो कि वातावरण में असंख्य रोगाणु होते हैं। ये हमारे शरीर में प्रवेश पाने का प्रयत्न क्यों करते हैं?

उत्तर- रोग के अणु (सूक्ष्म जीवाणु) जो बीमारी का कारण होते हैं, रोगाणु कहलाते है। वातावरण में असंख्य रोगाणु होते हैं। ये हमारे शरीर में प्रवेश पाने का प्रयत्न करते हैं, ताकि इन्हें आश्रय के साथ-साथ भोजन भी मिल सके। शरीर के ऊतकों को खा-खाकर ये पनपते-बढ़ते और प्रजनन करते हैं।

प्रश्न 11- अपना पराया' के आधार पर स्पष्ट करो कि असंख्य रोगाणु हमारे शरीर में किस तरह प्रवेश करते हैं?

उत्तर-

- असंख्य छोटे जीवाणु (बैक्टीरिया) हवा में उपस्थित रहते हैं और हमारी साँस व आहार द्वारा ये शरीर में पहुँचते रहते हैं।
- हमारे भोजन, दूध, पानी आदि में लुक-छिपकर अनेक प्रकार के रोगाणु पहले मुँह में और फिर मुँह से आगे आहार-नली में पहुँच जाते हैं।
- रोगाणु घात लगाए बैठे रहते हैं कि कब कहीं त्वचा कटे या फटे और ये भीतर घुसें।
- नाक में रहने वाले श्लेष्मा के सहारे रोगाणु हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

प्रश्न 12- 'टीके' लगवाना क्यों ज़रूरी है ? ऐसे आठ रोगों के नाम लिखिए, जिनके टीके उपलब्ध हैं।

उत्तर- प्रतिपिंड बनने के सिद्धांत पर टीकों का निर्माण किया जाता है। टीके हमारे शरीर में उस रोग से लड़ने के लिए प्रतिपिंड (ऐंटीबाडी) तैयार कर देते हैं। आज अनेक रोगों से बचाव के टीके बन चुके हैं। बच्चे के जन्म के फ़ौरन बाद से ही हमें उसको टीके अवश्य लगवाने चाहिए।

आज बीसियों प्रकार के टीके बन चुके हैं, जैसे - चेचक, पोलियो, टिटेनेस, ड़िप्थीरिया, हैजा, टाइफाइड, क्षय रोग, कोरोना आदि से बचाव करने वाले टीके।

प्रश्न 13- कुछ खाने-पीने से पहले हाथों को अच्छी तरह क्यों धोना चाहिए ?

उत्तर- कुछ रोगाणु त्वचा पर चिपककर रह जाते हैं, जो नहाते समय साबुन में मौजूद तत्त्वों से मर जाते हैं और पानी के साथ बह जाते हैं। कई बार, साबुन न होने पर हम राख या साफ मिटटी से रगड़कर भी हाथ धोते हैं। अत: इन रोगाणुओं से बचने के लिए हमें कुछ भी खाने-पीने से पहले हाथों को अच्छी तरह से धोना चाहिए।

प्रश्न 14- एलर्जी किसे कहते है?

उत्तर- किसी वस्तु खाद्य-पदार्थ या दवा आदि के प्रति शरीर की अरुचि या अस्वीकार्यता को एलर्जी कहते हैं। एलर्जी के लक्षण हैं-पित्ती उछलना, ददोरे पड़ना, लाल-लाल निशान पड़ना, सूजन हो जाना, दर्द होने लगना, साँस फूलना आदि।

प्रश्न 15- बगल (काँख) या जाँघ में गिलटियाँ क्यों फूल जाती हैं ?

उत्तर- कभी-कभी काँख में या जाँघ में गिलटी फूल जाती है, जो दर्द करती है। यह गिलटी तभी बनती है जब हाथ या पैर में कोई फोड़े-फुँसी जैसा संक्रमण हो। गले की टॉन्सिलें भी ऐसी ही गिलटियाँ हैं, जो गले में संक्रमण के कारण फूल जाती हैं। इस प्रकार की सभी गिलटियाँ मानो हमारे शरीर की सुरक्षा-सेना की चौकियाँ हैं। इनके भीतर विशेष प्रकार की भक्षक-कोशिकाएँ होती हैं, जो रक्त की ओर बढ़ते हुए रोगाणुओं को नष्ट करती हैं।

***

पाठ:17 बीती विभावरी जाग री

(कविता)

कवि : जयशंकर प्रसाद

मूल भाव:

- जयशंकर प्रसाद के काव्य-संग्रह 'लहर' से लिए गए इस गीत में प्रकृति के प्रात:कालीन सौंदर्य को अत्यंत मोहक रूपक में प्रस्तुत किया है।
- रात बीतने पर तारे डूब जाते हैं, आसमान में लालिमा छा जाती है, पक्षियों की चहचहाहट और फूलों की न सुनाई पड़ने वाली सरसराहट होती है, शीतल मंद समीर बहने लगती है- कवि ने इनका अत्यंत सुंदर तथा मानवीकृत वर्णन किया है।
- कविता में प्रकृति की इस प्रात:कालीन गतिशीलता का वर्णन एक सखी दूसरी सखी के सामने कर रही है। इस वर्णन के पीछे सखी को भी जागने, सक्रिय होने का संदेश दिया गया है।
- कविता में प्रकृति-चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के लिए उद्बोधन किया गया है।
- यह कविता जिन दिनों लिखी गई, उन दिनों भारत में अंग्रेज़ों का राज था आज़ादी के लिए संघर्ष चल रहा था। राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ-साथ कवि-लेखक- भी जन-जागरण के प्रयास कर रहे थे।
- कवि ने देशवासियों को भी चेतनायुक्त होने का आह्वान किया है।
- कवि ने आह्वान किया है कि सभी सामर्थ्य होते हुए भी सोए रहने का क्या मतलब, जबकि सारे संसार में हलचल हो रही है? तो फिर सोओ मत, जागो।

मुख्य बिन्दु:

- एक स्त्री द्वारा अपनी सखी को संबोधन।
- प्रात:काल का मनोहारी चित्रण।
- प्रात:वेला की हलचल का विवरण, जैसे– पक्षियों के समूह का बोलना, पेड़-पौधों का डोलना, लताओं में लगे फूलों का खिलने लगना।
- प्रकृति में गतिशीलता है, पर सखी सो रही है। उसके सोने पर आश्चर्य प्रकट करना और जागने का आह्वान।
- स्वाधीनता के लिए सक्रिय होने का संकेत।
- मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास व यमक अलंकारों का प्रयोग।
- संस्कृतनिष्ठ, तत्समप्रधान और समासयुक्त भाषा।

प्रश्न 1. इस कविता में 'जाग री' किसके लिए आया है? कवि उसे क्यों जगाना चाहता है?

उत्तर: इस कविता में 'जाग री' शब्द सखी के लिए प्रयोग किया गया है। एक सखी दूसरी से कहती है कि हे सखी उठ, अब रात बीत चुकी है। आकाश का रंग बदल रहा है और तारों की झिलमिलाहट भी हल्की होते-होते लुप्त होती जा रही है। इसलिए कवि उसे जगाना चाहता है।

प्रश्न 2. भोर के समय तारों के डूबने और पक्षियों के कलरव को लेकर कवि ने क्या कल्पना की है?

उत्तर: भोर के समय उषा रूपी स्त्री आकाश-रूपी पनघट में तारे रूपी घड़े को डुबो रही है। पानी में डुबो कर घड़ा भरते समय जो 'कुल-कुल' की आवाज़ होती है, वह खग-कुल अर्थात् पक्षी-समूह के कलरव से व्यक्त हो रही है।

प्रश्न 3. नायिका और प्रकृति में कवि क्या देखता है? उसकी सौंदर्य-दृष्टि आपको कितना प्रभावित करती है?

उत्तर: इस पूरे गीत में प्रकृति और सखी (नायिका) की परस्पर स्थिति का अंकन है और सखी को प्रकृति के अनुकूल सक्रिय होने की प्रेरणा दी गई है। प्रस्तुत गीत में प्रकृति से प्रेरणा लेने के लिए उद्बोधन किया गया है, लेकिन उद्बोधन के साथ-साथ प्रकृति और स्त्री के सौंदर्य का संबंध चित्रित है। प्रात:कालीन मानवीय गतिविधियों के आधार पर सुबह होने के दृश्य का चित्रण सराहनीय है।

प्रश्न 4. 'आँखों में भरे विहाग री' का विश्लेषण करते हुए इसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: सखी प्रात:काल होने की सूचना देते हुए कहती है कि सुबह हो गई है पर तू अपने केशों में सुगंधित वायु को समेटे तथा आँखों में रात की खुमारी (राग विहाग की खुमारी) लिए अभी तक सोई हुई है। तू अपनी अलसाई आँखें लिए अभी तक निद्रामग्न है। अगर तू उठे, तो प्रकृति का सौंदर्य मानवीय उमंग और उल्लास से और अधिक निखर उठे।

'विहाग' एक राग का नाम है, जो रात्रि में गाया जाता है। 'आँखों में भरे विहाग री' से तात्पर्य है–आँखों में रात की (आलस्य से भरी हुई) खुमारी लिए हुए।

प्रश्न 5. प्रस्तुत कविता राष्ट्रीय संदर्भ में क्या संकेत करती है? इसके राष्ट्रीय पक्ष को प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: यह कविता जिन दिनों लिखी गई, उन दिनों भारत में अंग्रेज़ों का राज था और आज़ादी के लिए संघर्ष चल रहा था। कवि-लेखक-रचनाकार भी जन-जागरण के प्रयास कर रहे थे। वे आज़ादी बचाए रखने के लिए संघर्ष करने का संदेश देते हैं। इस कविता में भी हमें यह संकेत दिखाई पड़ता है। अंतिम पंक्तियों में अधरों में अमंद राग और केशों में बंद मलयज से इन्हीं बातों का संकेत मिलता है। कवि ने आह्वान किया है कि सभी सामर्थ्य होते हुए भी सोए रहने का क्या मतलब, जबकि सारे संसार में हलचल हो रही है। तो फिर सोओ मत, जागो। भारतवासियों में राष्ट्र के प्रति जागृति लाने का संदेश प्रस्तुत कविता में निहित है।

प्रश्न 6. बीती विभावरी 'जाग री' का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: बीती विभावरी जाग री कविता में सुबह होते ही तारों के आकाश में डूबने, पक्षियों के चहचहाने, मंद-मंद पवन के बहने, लताओं में पुष्पों की रसयुक्तता को बताने के लिए मानवीकरण का उपयोग किया

गया है। प्रकृति के ये क्रियाकलाप हमें अंधकार से प्रकाश, निष्क्रियता से सक्रियता, सन्नाटे से स्वर, स्थिरता से गति और रिक्तता से रसमयता की ओर जाने का संदेश देते हैं।

प्रश्न 7. निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें।

''बीती विभावरी जाग री।
अंबर-पनघट में डुबो रही–
तारा-घट ऊषा-नागरी।
खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई–
मधु-मुकुल नवल रस गागरी।''

उत्तर: कविता का नाम- बीती विभावरी जाग री
कवि का नाम - जयशंकर प्रसाद

सरलार्थ:

एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी उठ, अब रात बीत चुकी है और उषा रूपी स्त्री आकाश-रूपी पनघट में तारे रूपी घड़े को डुबो रही है। अर्थात् आकाश से रात की कालिमा दूर हो गई है और आसमानी रंग

दिखने लगा है। यहाँ आकाश की कल्पना पानी भरने के घाट पनघट के रूप में की गई है। आकाश का रंग बदल रहा है और तारों की झिलमिलाहट भी हल्की होते-होते लुप्त होती जा रही है।

प्रात:काल हो गया है, इस तथ्य पर बल देते हुए सखी कहती है कि पक्षियों के कलरव (चहचहाने) का स्वर सुनाई दे रहा है। सुबह होते ही पक्षी चहचहाने लग जाते हैं, मंद-मंद हवा बहने लगती है और उससे पेड़-पौधों, फूलों में हलचल पैदा हो जाती है और कोंपल के आँचल में थिरकन हो रही है, अर्थात् धीमी-धीमी हवा से कोंपलें थिरकने लगी हैं।

यह लता भी अपने अधखिले फूल रूपी गगरी में नया रस भर लाई है। कली से फूल बनने की प्रक्रिया में अधखिले फूल की आकृति कलश यानी गगरी जैसी होती है और बीच में ताज़ा रस से पूर्ण पराग होता है। अत: यहाँ अधखिले फूल और रस से भरी गगरी की समानता के आधार पर सुंदर रूपक बन पड़ा है।

काव्य सौंदर्य:

- छायावादी शैली
- कविता में प्रकृति-चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के लिए उद्बोधन किया गया है।
- इस कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।
- प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
- प्रात:कालीन मानवीय गतिविधियों के आधार पर सुबह होने के दृश्य का चित्रण सराहनीय है।
- 'अंबर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा-नागरी' (रूपक अलंकार)
- 'खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा' (अनुप्रास और यमक अलंकार)

- 'मधु-मुकुल नवल रस-गागरी' (अनुप्रास और रूपक अलंकार)
- तत्सम शब्द प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग है।
- माधुर्य गुण
- कोमलकांत पदावली

प्रश्न 8. निम्नलिखित काव्यांश के कवि व कविता का नाम बताते हुए काव्य सौंदर्य स्पष्ट करें।

''अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए,
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री!''

उत्तरः कविता का नाम- बीती विभावरी जाग री
कवि का नाम - जयशंकर प्रसाद

सरलार्थः

प्रात:काल होने की सूचना देने के साथ-साथ सखी को संबोधित करते हुए कहा गया है कि हे सखी! सुबह हो गई है और सारा संसार अपने क्रिया-व्यापारों में लगा हुआ है, पर तू अपने होठों में कभी मंद न पड़ने वाला राग लिए हुए और अपने केशों में सुगंधित वायु को समेटे तथा आँखों में रात की खुमारी (राग विहाग की खुमारी) लिए अभी तक सोई हुई है। अगर तू उठे, तो प्रकृति का सौंदर्य मानवीय उमंग और उल्लास से और अधिक निखर उठे।

काव्य सौंदर्यः

- 'विहाग' एक राग का नाम है, जो रात्रि में गाया जाता है।
- इस पूरे गीत में प्रकृति और सखी (या आली) की परस्पर स्थिति का अंकन है।
- काव्यांश में अद्‌भुत संगीतात्मकता है, इसलिए इसे गाया जा सकता है।
- प्रकृति की तरह सक्रिय बनने की प्रेरणा है।
- अधरों में अमंद राग और केशों में बंद मलयज पंक्ति द्वारा भारतवासियों में जागृति लाने का संदेश निहित है।
- छायावादी शैली
- इस कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है।
- प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
- प्रात:कालीन मानवीय गतिविधियों के आधार पर सुबह होने के दृश्य का चित्रण सराहनीय है।
- माधुर्य गुण
- कोमलकांत पदावली
- मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास अलंकार।

***

पाठ:18 नाख़ून क्यों बढ़ते हैं?

(ललित निबंध)

लेखक: हजारी प्रसाद द्विवेदी

सारांश:

- नाख़ून का बढ़ना एक सहज स्वाभाविक शारीरिक प्रक्रिया है। आदिम मनुष्य पशुओं की तरह आत्मरक्षा के लिए नाख़ूनों का प्रयोग करता था।
- धीरे-धीरे आत्मरक्षा में प्रयुक्त इस हथियार का स्थान कई प्रकार के अन्य हथियारों ने ले लिया, जैसे पत्थर, हड्डी से बने हथियार, लोहे के हथियार, बंदूकें, बम एवं अनेक प्रकार के आधुनिकतम आणविक तथा नाभिकीय हथियार।
- इन हथियारों ने आत्मरक्षा से आक्रमण तक की यात्रा की। फलस्वरूप चारों ओर युद्ध तथा आतंक का वातावरण बन गया।
- मनुष्य की पशुता अधिक हावी हो गई। यद्यपि मनुष्य ने नाख़ूनों की कलात्मक सजावट कर अपने सौंदर्य-बोध का परिचय दिया, परंतु उसकी पशुता कम नहीं हुई अर्थात् नाख़ूनों का बढ़ना रुका नहीं।
- प्राणी विज्ञानियों के अनुसार मनुष्य की पूँछ के झड़ने की तरह उसके नाख़ूनों का बढ़ना भी बंद हो जाए, परंतु अभी स्थिति यथावत् है। भारतीय विचारधारा के अनुसार मनुष्य की बढ़ती पाशविकता पर विजय पाने के लिए संयम और अनुशासन ही कारगर उपाय हैं।
- हमारे यहाँ स्वनिर्मित बंधनों को ही श्रेष्ठ माना गया है, इसीलिए अंग्रेजी का 'इनडिपेन्डेंस' शब्द 'अनधीनता' न बनकर हमारे यहाँ 'स्वाधीनता' या 'स्वतंत्रता' ही रहा। हमारी संस्कृति और इतिहास अत्यंत समृद्ध है। अत: किसी भी विचारधारा का अनुकरण करते समय हमें नए व पुराने में से उपयुक्त व उपयोगी का चयन करना होगा।
- मनुष्य की पशुता को नियंत्रित करने के लिए महात्मा बुद्ध ने दया व करुणा का मार्ग दिखाया, तो गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का। गांधी जी ने सफलता (बाहर) की अपेक्षा सार्थकता (भीतरी) पर बल दिया।
- मानव-जाति के कल्याण के लिए व्यक्तिगत सफलता का मोह छोड़कर सबके हितचिंतन की चरितार्थता में ही सार्थकता है। इसी से हम नाख़ूनों के बढ़ने पर अर्थात् मनुष्य की पाशविकता पर रोक लगा सकते हैं।
- नाखून का बढ़ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढ़ने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है, अपना आदर्श है। बृहत्तर जीवन में अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ने देना मनुष्य की पशुता की निशानी है और उनकी बाढ़ को रोकना मनुष्यत्व का तकाज़ा है।

- मनुष्य में जो घृणा है, जो अनायास बिना सिखाए आ जाती है, वह पशुत्व की द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है।
- अभ्यास और तप से प्राप्त वस्तुएँ मनुष्य की महिमा को सूचित करती हैं।

मुख्य बिंदु

- नाख़ून का बढ़ना पशुता की निशानी है और काटना मनुष्यता की।
- अस्त्र-शस्त्र के निर्माण की होड़ मनुष्य का ऐसा आचरण है, जिसके मूल में पाशविक वृत्ति है।
- अनुशासन और संयम से पशुता को दबाया जा सकता है।
- संयम रखना एवं दूसरों के दुख-सुख के प्रति संवेदनशील होना ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है।
- बुद्ध और गांधी जी ने विश्व को करुणा, प्रेम और शांति का संदेश दिया; इन्हीं के आधार पर मनुष्यता सार्थक हो सकती है।
- नए और पुराने में से मानवता के पक्ष में उपयोगी एवं लाभदायक का चयन किया जाना चाहिए।
- सफलता एवं सार्थकता में से सार्थकता अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि उससे दूसरों का भी हित होता है।
- विश्व-शांति और मानवमात्र का कल्याण मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. अस्त्र-शस्त्रों के बढ़ते हुए प्रयोग ने आम आदमी के जीवन को प्रभावित किया है- इस संबंध में अपने विचार लगभग सौ शब्दों में लिखिए।

उत्तर: द्विवेदी जी ने कहा है कि विश्व की शांति के लिए आवश्यक है कि अस्त्र-शस्त्रों के बढ़ावे को रोका जाए, क्योंकि अगर अस्त्र होंगे तो लड़ाई भी अवश्य होगी। मानवता की विजय के लिए अस्त्र-शस्त्र के निर्माण को रोकना होगा अन्यथा सम्पूर्ण मानवता अपाहिज़ हो जाएगी।

नफरत का ज़हर सभी का विनाश करता है। इसलिए संयम रखते हुए हमें नफरत पर काबू पाना है। दूसरों के विचारों, धर्मों, रीति-रिवाजों आदि का हमें सम्मान करना चाहिए। भावी पीढ़ी के लिए यह जानना आवश्यक है कि दूसरों से छीनी हुई वस्तुएँ कभी स्थायी नहीं होती। अपनी मेहनत के बल से हमारी उपलब्धियों का पता चलता है। मेहनत व तपस्या से ही वरदान मिलता है। इसलिए अस्त्र-शस्त्रों को त्यागकर मानव जाति के हित के लिए काम करें। क्योंकि दूसरों से छीनना, लूटना पशुता की निशानी है।

प्रश्न 2. पाठ से उदाहरण देते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी की भाषा-शैली पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

- द्विवेदी जी की भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता भी मिलती है।
- दूसरी ओर आम बोलचाल के शब्दों के प्रयोग से उन्होंने विषय को सरल, सहज एवं स्पष्ट बना दिया है।

- उनकी भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों के भी सुंदर प्रयोग हुए हैं।
- अनेक स्थानों पर छोटे-छोटे प्रश्न पूछकर हमारी जिज्ञासा और उत्सुकता को निरंतर बनाए रखते है।
- इन निबंध की शैली बहुत सहज, अनौपचारिक और आत्मीय है।

प्रश्न 3. गाँधी जी किस प्रकार के सुखों को मानव-जाति के लिए श्रेष्ठ मानते थे?

उत्तर: महात्मा गाँधी कहते थे कि हमें बाहरी सुखों कि अपेक्षा आंतरिक सुखों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। उनका कहना था कि मनुष्य को अपनी आत्मा में झाँकना चाहिए व झूठ और दिखावे से दूर रहना चाहिए। क्रोध, ईर्ष्या, जलन आदि भावों को मन से दूर रखना चाहिए। सुख शांति व संतोष के लिए परिश्रम करना चाहिए।

प्रश्न 4. लाखों वर्ष पूर्व नाखून मनुष्य के लिए क्या थे?

उत्तर: लाखों वर्ष पूर्व नाखून मनुष्य के लिए उपयोगी हथियार थे। जब मनुष्य वनमानुष था तब उसे अपनी जीवन-रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे।

प्रश्न 5. पशुता से क्या आशय है?

उत्तर: पशुता से आशय बुरी प्रवृत्तियाँ हैं। पशुता अपने आप न तो घटती है, न मिटती है। आदमी को इसके लिए स्वयं ही कोशिश करनी पड़ती है और अपनी संतान को भी इन बुराइयों पर विजय पाने के लिए प्रशिक्षण देना पड़ता है।

प्रश्न 6. पाठ में लेखक मरे हुए बच्चे को गोद में दबाए रखने वाली बंदरिया का उदाहरण देने का क्या उद्देश्य है?

उत्तर: द्विवेदी जी ने बंदरिया का उदाहरण दिया है, कि बंदरिया अपने बच्चे के मर जाने के बाद भी उसे छाती से चिपकाए रहती है। परंतु उसकी यह अंधी ममता मनुष्य का आदर्श नहीं बन सकती। न हमें किसी का अंधानुकरण करना है, न अपनी चीज़ों की भलाई-बुराई के प्रति आँखें मूंदनी हैं।
वैज्ञानिक सोच से उनका निरीक्षण-परीक्षण कर उन्हें अपनाना चाहिए। अगर हमारी भारतीय संस्कृति की कुछ बातें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही होती हैं तो हमें उन्हें उदारतापूर्वक व सम्मानपूर्वक अपनाना चाहिए।

प्रश्न 7. लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने किस महापुरूष की विचारधारा का उल्लेख किया है?

उत्तर: लेखक ने महात्मा बुद्ध व गाँधी जी की विचारधारा का उल्लेख किया है कि दूसरों के दुख को अपना दुख समझकर उसके प्रति समानुभूति रखना ही मानव मात्र का धर्म है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है आहार-निद्रा आदि पशु-सुलभ स्वभाव उसके ठीक वैसे ही हैं, जैसे अन्य प्राणियों के। लेकिन वह फिर भी पशु से भिन्न है। उसमे संयम है, दूसरे के सुख-दुःख के प्रति

संवेदना है, श्रद्धा है, तप है, त्याग है। ये स्वभाव के उद्भावित बंधन हैं। इसीलिए मनुष्य झगड़े-टन्टे को अपना आदर्श नहीं मानता, गुस्से में आकर चढ़ दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है एवं वचन, मन एवं शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है। यह किसी भी जाति या वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है, यह मनुष्य मात्र का धर्म है। 'महाभारत' में इसीलिए निर्वैर भाव, सत्य और अक्रोध को सब वर्णों का सामान्य धर्म कहा है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ख) मनुष्य किस प्रकार के व्यवहार को आदर्श की श्रेणी में नहीं स्वीकारता?

(ग) कैसे कहा जा सकता है कि मनुष्य निरंतर पशुवत् व्यवहार की ओर अग्रसर होता हुआ अधर्म के मार्ग पर पहुँच गया है?

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कुछ लाख वर्ष पूर्व नाखून मनुष्य के लिए क्या थे?

)क(**उपयोगी हथियार**)ख(सौंदर्य के प्रतीक

)ग(मनुष्यता की पहचान)घ(अनावश्यक अंग

2. 'स्वाधीनता' शब्द का अर्थ है-

)क(अनधीनता)ख(उच्छृंखलता

)ग(**अपनी अधीनता**)घ(मुक्ति

3. पशुता से आशय है-

)क(पशु की विशेषता)ख(पशु का व्यवहार

)ग(पशु के प्रति दृष्टिकोण)घ(**बुरी प्रवृत्तियाँ**

4. लेखक निराश क्यों होता है?

)क(नाखून बढ़ने के कारण)ख(नाखून काटने के कारण

)ग(**मनुष्य द्वारा पशुता को जीत न पाने के कारण**)घ(नाखूनों के हथियार न रह जाने के कारण

5. सहजात वृत्तियाँ क्या होती हैं?

)क(औपचारिक रूप से सीखी हुई प्रवृत्तियाँ)ख(नकल करके प्राप्त की गई प्रवृत्तियाँ

)ग(जन्म के साथ उत्पन्न होने वाली प्रवृत्तियाँ)घ(समाज में साथ रहने से आने वाली प्रवृत्तियाँ

6. नए-पुराने में से बेहतर को चुनने के लिए क्या करना पड़ता है?

)क(**जाँच-परख**)ख(देख-रेख

)ग(माप-तौल)घ(काट-छाँट

7. 'मरे हुए बच्चे को गोद में दबाए रखने वाली बंदरिया' का उदाहरण देने का उद्देश्य है?

)क(मोह-ममता को बनाए रखना)ख(परंपराओं का पालन करना

)ग(**रूढ़ियों का मोह त्यागना**)घ(नए को शंका की दृष्टि से देखना

8. मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है?

)क(आहार (ख(निद्रा

)ग(**संयम** (घ(भय

9. महात्मा गांधी ने किस बात पर अधिक बल दिया?

)क(उन्मुक्तता पर)ख(बड़े उद्योगों पर

)ग(भौतिकता पर)घ(**आत्मतोष पर**

10. शस्त्रों की बढ़त को रोकना क्यों आवश्यक है?

)क(देश-हित के लिए)ख(महत्त्वाकांक्षा के लिए

)ग(**मानव-कल्याण के लिए**)घ(आत्मकल्याण के लिए

***

पाठ:19 शतरंज के खिलाड़ी

(कहानी)

लेखक: प्रेमचंद

सारांश :

यह कहानी वातावरण केंद्रित है, जिसमें मीर और मिरज़ा आदि पात्रों के आचरण के माध्यम से तत्कालीन लखनऊ की परिस्थितियों की ओर संकेत किया गया है। उन परिस्थितियों में सामान्य नागरिक हो या शासक-वर्ग सभी भोगविलास में डूबे हैं। शासकों एवं अमीरों की अकर्मण्यता तथा दायित्व-विमुखता ने सामान्य जनता को भी अपनी गिरफ़्त में ले रखा है और मनोरंजन ने समाज का राजनीतिक अध:पतन कर दिया है। देश के कर्णधारों को इस प्रकार भोग-विलास में डूबे हुए दिखाकर प्रेमचंद गुलामी के कारणों की अभिव्यक्ति करते हैं। साथ ही, दायित्व-निर्वाह तथा कर्त्तव्यपरायणता के महत्त्व की ओर हमारा ध्यान ले जाते हैं।

मुख्य बिंदु:

कथावस्तु

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में कहानीकार पराधीन भारत के एक प्रमुख सत्ता-केंद्र लखनऊ के सामाजिक-राजनीतिक वातावरण के बारे में बताता है। शासक-वर्ग से लेकर आम जनता विलासिता यानी

अय्याशी में डूबी है। छोटे-बड़े सभी नाच-गाने व मनोरंजन-नशे आदि में मस्त हैं। शासन-व्यवस्था से जुड़े अधिकारी, साहित्यकार, कलाकार और व्यापारी-उद्यमी विलास-सामग्री के उपभोग, प्रचार और निर्माण में जुटे हैं। यह अय्याशी का जीवन आम जनता को भी लुभाकर उनको अकर्मण्य बना देता है। उनके तर्क होते थे कि शतरंज, ताश, गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है।

प्रेमचंद यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का ज़िम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर भोग-विलास में डूबा जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता। मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली कहानी के प्रमुख पात्र हैं जिनके माध्यम से प्रेमचंद ने एक वर्ग की प्रवृत्तियों की ओर संकेत किया है जो अंतत: आत्मघाती होती हैं।

प्रजा से कर के रूप में वसूला गया धन लखनऊ के नवाबों और दरबारियों की झूठी शानो-शौकत और उनकी विलासिता में खर्च कर दिया जाता था। तत्कालीन नवाबों को अपनी

गरीब जनता की कोई फ़िक्र नहीं थी। इसी बात का फायदा अंग्रेजों को मिला। नवाब वाजिदअली शाह को अंग्रेज़ कैद कर लेते हैं। उनके रहमों-करम पर पलने वाले मीर और मिरज़ा उनके शोक में डूबने के बजाय उनका उपहास उड़ाते हैं। इस कहानी में लखनऊ की अंग्रेजों के हाथों ऐसी पराजय का जिक्र किया गया है, जिसमें न कोई मार-काट थी, न एक बूँद खून गिरा था। यह अहिंसा न थी बल्कि घोर कायरपन था जिसका परिणाम राज्य की प्रजा को

भुगतना पड़ा। वास्तव में शासक-वर्ग में जो जोश और उबाल होना चाहिए था वह था ही नहीं। प्रेमचंद ने कहानी के माध्यम से हमारे देश के गुलाम होने की प्रक्रिया और उसके कारणों की ओर संकेत किया है।

देशकाल और वातावरण

इस कहानी में 1857 के आस-पास के समय का वर्णन है। 'शतरंज के खिलाड़ी' एक वातावरण प्रधान कहानी है। इस कहानी में जितनी भी घटनाएँ है, वे अवध राज्य की हैं। यह आंदोलन सफल न हो पाया और भारत अंग्रेजों का पूरी तरह से गुलाम हो गया। इस कहानी में भारत के राज्यों में से एक अवध के पतन की प्रक्रिया का चित्रण है।

हमारे देश में जैसे-जैसे अंग्रेज़ों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे यहाँ के शासक संघर्ष का रास्ता छोड़कर, समर्पण का रास्ता अपनाकर व्यक्तिगत राग-रंग में डूब रहे थे।

'शंतरंज के खिलाड़ी' में एक स्थान पर लखनऊ में बढ़ी आती गोरों की फ़ौज का वर्णन है। फ़ौज का कहीं कोई विरोध नहीं होता। यह ऐसा वातावरण है जिसमें न नवाबों को जनता की चिंता है, न पराजय की न जनता को किसी की चिंता है। सब एक-दूसरे से अलग, टूटे हैं। संघर्ष के लिए गुलामी से बचने के लिए सामूहिक-एकता की जरूरत होती है, जो उस समय के वातावरण में नहीं थी, जिस समय के वातावरण पर यह कहानी लिखी गई है।

स्वाधीनता को बचाने के लिए सामूहिकता, संघर्ष और एकता आवश्यक है। मिरज़ा और मीर मौत के डर के कारण संघर्ष से बच रहे थे। क्या वे बच पाए? नहीं। व्यक्तिगत स्वार्थ का रास्ता मौत से बचा नहीं सकता। इससे अच्छा तो तब होता जब उनके जैसे लोग एकजुट होकर अंग्रेज़ों की फौज का सामना करते। तब यदि देश गुलाम भी हो जाता और वे मारे भी जाते तो उनकी मौत पर जनता रोती, शतरंज के मोहरे नहीं। इसके ज़िम्मेदार मीर और मिरज़ा जैसे लोग है जिनकी बुरी आदतों के कारण ऐसी स्थिति आई।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'शतरंज के खिलाड़ी' के माध्यम से दिखाया गया है-

(क) अंग्रेज शासकों का दमन **(ख) भारतीय शासकों का पतन**

(ग) शतरंज के खेल का महत्व (घ) हारने वाले खिलाड़ी का द्वेष

2. वाजिदअली शाह के बंदी बनाए जाने का मिरज़ा और मीर को कोई मलाल नहीं था क्योंकि-

(क) वे उससे ईर्ष्या करते थे (ख) वे अंग्रेज़ों के समर्थक थे।

(ग) शतरंज का बादशाह अधिक महत्वपूर्ण था (घ) उन्हें अंग्रेज़ी फ़ौज से डर लगता था।

3. 'मगर आपने उन्हें सिर चढ़ा रखा है, यह मुनासिब नहीं है। इस वाक्य में प्रयुक्त मुहावरे का अर्थ है-

(क) बहुत लाड़-प्यार से बिगाड़ देना। (ख) सिर पर उठा लेना।

(ग) दिमाग खराब करना। (घ) हा! में हा! मिलाना।

4. 'शतरंज के खिलाड़ी' का उद्देश्य है -

(क) शतरंज के खेल के प्रति विरक्ति प्रकट करना (ख) मीर और मिरज़ा के प्रति नाराजगी प्रकट करना

(ग) गुलामी के कारणों के प्रति सचेत करना (घ) व्यक्तिगत स्वार्थों का चित्रण करना

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 शतरंज के खिलाड़ी कहानी के उद्देश्य / संप्रेष्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

- प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मिरज़ा और मीर जैसे ज़िम्मेदार लोग, व्यक्तिगत भोग-विलास व शतरंज आदि की बुरी लत छोड़कर यदि अपना दिमाग देश के बचाव में लगाते तो गुलामी से बचा जा सकता था।

- कहानीकार यह बताना चाहते हैं कि जिस देश का ज़िम्मेदार वर्ग लापरवाह होकर भोग-विलास में डूब जाता है, उस देश को गुलाम होने से कोई नहीं बचा सकता।
- प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा यह संदेश दिया है कि सुख-सुविधाओं में डूबे, संघर्ष से बचते रहने वाले, परस्पर भिन्न बने रहने वाले, व्यक्तिगत राग के शिकार लोग ही व्यक्ति और देश दोनों को डुबो देते हैं।
- प्रेमचंद ने यह कहानी लिखकर अपने समय की जनता और नेतृत्वशील वर्ग को आलस्य तथा विलास त्यागने तथा एकजुट होकर संघर्ष करने का संदेश दिया है।

प्रश्न 2 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के आधार पर बताइए कि मुहल्लेवाले, घर के नौकर-चाकर तक शतरंज के खेल को मनहूस क्यों कहते थे?

उत्तर - घरवालों, मुहल्लेवाले, घर के नौकर-चाकर सभी नित्य यह कहा करते थे कि यह बड़ा मनहूस खेल है, क्योंकि यह खेल घर को तबाह कर देता है। खुदा न करे, किसी को इसकी आदत पड़े क्योंकि इसकी आदत से आदमी किसी काम का नहीं रहता, वह न घर का रहता है न घाट का। यह एक बुरा रोग है। यहाँ तक कि मिरज़ा की बेगम को इससे इतना द्वेष था कि अवसर खोज-खोज कर पति को लताड़ती थीं।

प्रश्न 3 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के आधार पर बताइए कि किस कारण लखनऊ अंग्रेजों के कब्जे में चला गया?

उत्तर -1) नवाबों की अकर्मण्यता, कायरता व विलासिता के कारण लखनऊ अंग्रेज़ों के कब्जे में चला गया।

2) लखनऊ में जैसे-जैसे अंग्रेज़ों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था वैसे-वैसे यहाँ के शासक संघर्ष का रास्ता छोड़कर, समर्पण का रास्ता अपनाकर व्यक्तिगत राग-रंग में डूबे रहते थे।

3) स्वाधीनता को बचाने के लिए सामूहिकता, संघर्ष और एकता की जरूरत होती है। जो उस समय के वातावरण में कहीं दिखलाई नहीं पड़ती।

4) मिरज़ा और मीर जैसे लोगों के व्यक्तिगत, स्वार्थ, मौत के डर से संघर्ष से बचना व उनकी बुरी आदतों के कारण लखनऊ अंग्रेजों के कब्जें में चला गया।

प्रश्न 4 'शतरंज के खिलाड़ी' मिरज़ा और मीर का दुखद अंत क्यों हुआ?

उत्तर - 'शतरंज के खिलाड़ी' में मिरज़ा और मीर जनता व समाज की उपेक्षा करके भोग-विलास, शतरंज की बुरी लत में ही व्यस्त रहते हैं। वे मौत के डर के कारण संघर्ष से बच रहे

थे। व्यक्तिगत स्वार्थ का रास्ता मौत से बचा नहीं सकता। इसलिए अपनी झूठी शानो-शौकत, कायरता व विलासिता जैसी बुरी आदतों के कारण मिरज़ा और मीर का दुखद अंत हुआ।

प्रश्न 5 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी की भाषा शैली पर प्रकाश डालते हुए उसका तत्कालीन समाज से तालमेल बताइए।

उत्तर –

- इस कहानी की भाषा में बहुत सारे अरबी-फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया गया है क्योंकि कहानी की पृष्ठभूमि और वातावरण में लखनऊ है। तब लखनऊ में अधिकांश लोग उर्दूभाषी थे तथा राज-काज की भाषा भी फ़ारसी थी।
- हिंदी भाषा के हिंदुस्तानी रूप (हिंदी और अरबी-फ़ारसी के लोक प्रचलित शब्दों से बनी) का उपयोग किया गया है।
- इसकी भाषा शैली से कहानी में सजीवता एवं रोचकता का समावेश है तथा कहीं से बनावटीपन या कृत्रिमता नहीं झलकती है।
- कहानी की भाषा पात्रानुकूल और भावानुकूल है ।
- कई स्थानों पर व्यंग्यात्मक भाषा का भी इस्तेमाल किया गया है।
- बोलचाल की भाषा में तत्सम, तद्भव, क्षेत्रीय और अनेक भाषाओं के शब्द हैं। उसमें मुहावरों, लोकोक्तियों और दो वस्तुओं की समानता बताने के लिए विभिन्न उपमाओं का भी प्रयोग हैं।

प्रश्न 7 मिरज़ा साहब और मीर के चरित्र की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर –

कहानी के मुख्य पात्र हैं- मिरज़ा साहब और मीर साहब। इन दोनों के व्यक्तित्व में अनेक समानताएँ हैं, क्योंकि ये एक ही वर्ग के हैं। प्रेमचंद ने इन दोनों की समान प्रवृत्तियों के आधार पर तत्कालीन वातावरण को चित्रित करने का प्रयास किया है।

मिरज़ा के व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

- मिरज़ा साहब का पूरा नाम मिरज़ा सज्जाद अली था। वे लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह के एक जागीरदार थे।
- उन्हें शतरंज खेलने की बुरी लत थी। वे बेहद आलसी और कामचोर इंसान थे।
- उनके आस-पास के लोग, नौकर-चाकर उनकी बुराई करते रहते हैं।

- मिरज़ा साहब शतरंज के खेल में इतने डूब जाते कि घर की चिंता करना भी छोड़ देते। इसलिए उनकी बेगम भी उनसे परेशान रहती थी और हमेशा मिरज़ा साहब को लताड़ती रहती थी।
- बाप-दादाओं को मिली जागीरों के कारण उन्हें आजीविका की कोई चिंता नहीं थी। इसी पैतृक संपत्ति ने इन्हें कामचोर, विलासी, कायर और डरपोक बना दिया था। इसलिए मिरज़ा बेगम से, बादशाही फौजों से, व अंग्रेज़ी सेना से डरते थे।
- मिरजा परिवार की तरह लखनऊ की भी चिंता नहीं करते। उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं कि लखनऊ के बादशाह को बंदी बना लिया गया है।
- वे सुख-विलास के बिना रह नहीं सकते हैं। उनकी इस आदत ने उन्हें कायर बना दिया है।
- मिरज़ा देश की हार देख सकते थे, शतरंज की हार नहीं। उन्हें देश के गुलाम होने पर भी क्रोध नहीं
  आता।
- उनका विलासी जीवन झूठी शानो-शौकत के बल पर चलता है जिसके मूल में उनकी कायरता है।

मीर के व्यक्तित्व की विशेषताएँ :

- मीर साहब का पूरा नाम मीर रौशन अली है। इनके पास भी मिरज़ा साहब की तरह पैतृक जागीरदारी है उन्हें जीविका चलाने की कोई चिंता नहीं है। हमेशा शतरंज खेलना तथा पान, हुक्का, चिलम जैसे मादक पदार्थों का सेवन करना इनकी आदत है। इनकी इस आदत ने इनके स्वाभिमान को नष्ट कर दिया है।
- मिरज़ा साहब की पत्नी इनसे बेहद नफरत करती हैं फिर भी उन्होंने मिरज़ा साहब के घर जाना नहीं छोड़ा।
- मीर साहब बहुत डरपोक और कायर इंसान हैं। मिरज़ा की बेगम के गुस्से के डर से वे भाग जाते हैं।
- बादशाही फौज के अफसर द्वारा इनका नाम पूछने से इनके होश उड़ जाते हैं।
- घर के दरवाज़े बंद करके नौकर को बोलते हैं कि उन्हें कह दो कि वह घर में नहीं हैं। झूठ बोलना भी इनकी आदत है।
- शतरंज खेलने में बेईमानी भी करते हैं। यही बेईमानी और झूठी अकड़ मिरज़ा की तरह उनकी भी मृत्यु का कारण बनती है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
शाम हो गई। खंडहर में चमगादड़ों ने चीखना शुरू किया। अबाबीलें आ-आ कर अपने-अपने घोंसलों में चिमटीं। पर दोनों खिलाड़ी डटे हुए थे, मानो दो ख़ून के प्यासे सूरमा आपस में लड़ रहे हों। मिरज़ा दो-तीन बाज़ियाँ लगातार हार चुके थे; इस चौथी बाज़ी का रंग भी अच्छा न था। वो बार-बार जीतने का दृढ़ निश्चय कर सँभलकर खेलते थे, लेकिन एक-न-एक चाल ऐसी बेढब आ पड़ती थी, जिससे बाज़ी खराब हो जाती थी। हर बार हार के साथ प्रतिकार की भावना और भी उग्र होती थी। उधर मीर साहब मारे उमंग के गज़लें गाते थे, चुटकियाँ लेते थे, मानो कोई गुप्त धन पा गए हों।

(iv) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(v) मिरज़ा के मन में प्रतिकार की भावना उग्र क्यों होती जा रही थी?
(vi) इस गद्यांश की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।

पाठः 20 उनको प्रणाम!

(कविता)

कविः नागार्जुन

मूल भावः

इस कविता में कवि ने उन लोगों के प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट किया है, जिन्होंने अपने जीवन में साहस वीरता, उत्साह, परिश्रम, निष्ठा और ईमानदारी के साथ संघर्ष तो किया, लेकिन संसाधनों के अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके।

कविता की दृष्टि में सफलता-असफलता से अधिक महत्त्व किसी उद्देश्य के लिए किए गए प्रयासों का है। इस भाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने योद्धाओं, नाविकों, पर्वतारोहियों, क्रांतिकारियों आदि के उदाहरण दिए हैं। इन क्षेत्रों में कामयाबी पाने वाले लोगों के नाम दुनिया जानती है, लेकिन इन कामों को शुरू करने वाले और आगे बढ़ाने वाले लाखों ऐसे लोग थे, जो गुमनाम रह गए। कवि ऐसे लोगों को आदर और सम्मान देते हुए उन्हें बार-बार प्रणाम करता है।

मुख्य बिंदुः

- जीवन में सफलता का ही नहीं, संघर्ष का भी महत्त्व है ऐसा मानते हुए कवि उन लोगों के प्रति आदर प्रकट करता है, जिन्होंने जीवन के अनेक क्षेत्रों में उत्साह से कार्य किया, लेकिन असफल रह गए।
- जीवन में कभी-कभी ऐसे मौके भी आते हैं, जब उद्देश्य-प्राप्ति के लिए अपेक्षित साधनों की कमी हो जाती है।
- कुछ लोग केवल उत्साह के बल पर बड़े-से-बड़े उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैं।
- बलिदान करने वाले लोग वे ही नहीं हैं, जिन्हें हम याद रखते हैं, बहुत से बलिदानी ऐसे भी हैं, जिन्हें दुनिया भूल गई है।
- अनेक साहसी और दृढ़व्रती लोगों की दृढ़ता का अंत भीषण यातनाओं ने कर दिया। इन लोगों ने कभी अपने लाभ और साहस का विज्ञापन नहीं किया दुनिया चाहे इन्हें असफल माने, कवि इन्हें प्रणाम करता है।

काव्यांश 1

"जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम।
कुछ कुंठित औ कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट
जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;
रण की समाप्ति के पहले ही
जो वीर रिक्त तूणीर हुए!
- उनको प्रणाम!"

सरलार्थ –

कवि ऐसे वीरों के बारे में बात कर रहा है जो युद्ध के मैदान में पूरी तैयारी और उत्साह के साथ गए थे। जिनके पास अभिमंत्रित तीर थे यानी ऐसे तीर थे जो लक्ष्य को भेदने में पूरी तरह सक्षम थे। मगर जब युद्ध हुआ तो किन्हीं कारणों से उनके तीर लक्ष्य को भेदने में नाकाम हो गए अर्थात् अपना कार्य ठीक से नहीं कर सके, अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके। जो युद्ध के मैदान में गए तो लड़ने के लिए थे, लेकिन लड़ाई समाप्त होने से पहले ही उनके तरकस खाली हो गए। कवि का उद्देश्य युद्ध के मैदान में तीर और तरकस के बारे में बात करना नहीं है। वह इनके माध्यम से लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्षरत लोगों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है, जो साधनहीन होने के कारण असफल हो गए पर जिन्होंने अपने हौसले और हिम्मत में कमी नहीं आने दी। कवि हमारे भीतर उनके प्रति आदर का भाव पैदा करना चाहता है।

काव्यांश 2

"जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि-पार;
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार!
– उनको प्रणाम!"

सरलार्थ –

कवि ऐसे लोगों की बात कर रहा है, जो छोटी नौका लेकर समुद्र को पार करने चले थे, लेकिन उनकी मनोकामना पूरी नहीं हो सकी और वे समुद्र में ही समा गए। यहाँ कवि ऐसे लोगों के साहस और प्रयत्नों का आदर करते हुए उन्हें प्रणाम करता है। ऐसे लोग जो साधनों के सीमित होने के बावजूद बड़े-से-बड़ा काम करने की ठान लेते हैं, भले ही अंत में वे लक्ष्य को प्राप्त न कर पाए। ऐसे लोगों में इतना साहस और ऐसी लगन होती है कि वे अपने प्राणों तक की चिंता नहीं करते।

काव्यांश 3

"जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
– उनको प्रणाम! "

सरलार्थ –

कवि उन लोगों को प्रणाम करने की इच्छा व्यक्त करता है, जो गए तो थे बर्फ़ीले शिखरों पर चढ़ने के लिए, परंतु बर्फ़ खिसक जाने या ऐसी ही किसी विपत्ति के कारण बर्फ़ के नीचे ही दब गए। कवि असफलता के पीछे छिपे प्रयत्नों को भी देखता है। उसके लिए लक्ष्य-प्राप्ति के लिए किए गए प्रयासों का महत्व सफलता से कम नहीं, अधिक है। ऐसे लोगों को कवि इसीलिए बार-बार प्रणाम करता है।

काव्यांश 4

"कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल!
- उनको प्रणाम! "

सरलार्थ -

कवि उन लोगों के प्रति भी नतमस्तक है, जो साहस से भरे हुए थे और जिनका संकल्प अटूट था, बल्कि यूँ कहिए कि जो स्वयं साहस और संकल्प की साक्षात प्रतिमा थे। ऐसे लोगों को जेल में डाल दिया गया और वह भी निश्चित दिनों, महीनों, वर्षों के लिए नहीं, बल्कि अनंत काल के लिए यानी जीवन भर के लिए। वे लोग आज़ादी को पाने के लिए दीवाने थे। उन्होंने तमाम दुनियादारी को भूलकर आज़ादी पाने को ही अपना परम लक्ष्य मान लिया था। परन्तु आज हम उन्हें भूल गए है। कवि ऐसे लोगों को प्रणाम करता है।

काव्यांश 5

"दृढ़ व्रत औ दुर्दम साहस के
जो उदाहरण थे मूर्ति-मत;
पर निरवधि बंदी जीवन ने
जिनकी धुन का कर दिया अंत!
- उनको प्रणाम! "

सरलार्थ -

कविता की इन पंक्तियों में ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है, जिनकी सेवाओं की तुलना किसी से नहीं की जा सकती तथा जिन्होंने निस्स्वार्थ, समर्पित भाव से समाज और राष्ट्र की सेवा की। इन लोगों ने अपने कार्यों का कभी प्रचार नहीं किया। कई लोग ऐसे होते हैं जो काम कम करते हैं, पर अपना प्रचार बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं। ऐसे लोगों को दुनिया जानने लगती है। पर ऐसे भी लोग होते हैं, जो बहुत काम करने पर भी आत्मप्रचार से दूर रहते हैं। कवि ऐसे लोगों को आदर के साथ प्रणाम करता है। वह इन अनाम लोगों की सेवाओं को महत्वपूर्ण मानता है।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'रिक्त तूणीर होने' का अभिप्राय है -

(क) अनुभवहीनता (ख) कुंठित होना
(ग) विफल होना **(घ) साधन की कमी**

2. 'छोटी-सी नैया' का कविता में आशय है-

(क) नाव का छोटा आकार **(ख) संसाधनों की कमी**
(ग) कम उत्साह (घ) इच्छा न होना

3 कवि सफलता से अधिक महत्व किसे देता है?

(क) बाधाओं को **(ख) प्रयत्नों को**

(ग) असफलता को (घ) प्रसिद्धि को

4 यह दुनिया किन्हें भूल गई है ?

(क) प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को (ख) स्वतंत्रता आंदोलन को दबाने वालों को

(ग) फाँसी पर चढ़े अनाम लोगों को (घ) कुछ दिन पहले की घटनाओं का

5 सपने देखना कब सार्थक है?

(क) जब वे सच हो सकें (ख) जब उनका प्रचार किया जा सके

(ग) **जब उनके लिए प्रयास किए जाए** (घ) जब उनका अनुकरण किया जा सके

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 निम्नलिखित काव्यांश किस कविता से लिया गया है? इसके कवि का नाम उल्लेख करते हुए काव्यांश का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

"जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
- उनको प्रणाम!"

उत्तर: यह काव्यांश **उनको प्रणाम** कविता से लिया गया है।
इसके कवि **नागार्जुन** है।

काव्य सौंदर्य:

- जीवन में सफलता से अधिक महत्व प्रयत्न और संघर्ष का है।
- जिन लोगों ने जोश-खरोश के साथ संघर्ष किया उनका भी बड़ा योगदान है, ऐसे लोगों को कवि बार-बार प्रणाम करता है।
- 'रह-रह' और 'नव-नव' में पुनरूक्ति प्रकाश व 'ले' 'ली' में 'ल' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अंलकार है।
- तत्सम शब्दों का प्रयोग - नव, हिम, समाधि, प्रणाम
- सहज, सरल, खड़ी बोली का प्रयोग है।
- भावों के अनुकूल भाषा का उपयोग हुआ है।
- प्रवाहमयी व प्रभावशाली भाषा का प्रयोग है।
- 'उनको प्रणाम' द्वारा संघर्षी लोगों के लिए आदर सम्मान प्रकट हुआ है।

- 'हिम-समाधि' सामासिक पद है।
- कवि का शब्द चुनाव सशक्त व सार्थक है।

प्रश्न 2 कविता का मूल भाव क्या है?

उत्तर कविता का मूल भाव यह है कि जीवन में सफलता का ही नहीं, संघर्ष का भी महत्त्व है। कवि उन सार्थक व संघर्षशील लोगों के प्रति आदर प्रकट करता है, जिन्होंने जीवन के अनेक क्षेत्रों में जीवन-भर उत्साह से संघर्ष किया, लेकिन साधनों के अभाव व प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण असफल रह गए। कवि ऐसे गुमनाम लोगों को आदर और सम्मान देते हुए उन्हें बार-बार प्रणाम करता है, क्योंकि उनकी संघर्ष की 'नींव की ईंटों' पर ही सफलता रूपी इमारत टिकी है।

प्रश्न 3 'उनको प्रणाम' कविता में कवि सफलता से अधिक किसे महत्त्व देता है?

उत्तर उनको प्रणाम' कविता में कवि सफलता से अधिक महत्व उद्देश्य के लिए किए गए प्रयासों को देता है।

प्रश्न 4 कवि कविता के हर पद के अंत में 'उनको प्रणाम' क्यों कहता है?

उत्तर कवि उन लोगों को बार-बार प्रणाम करता है जिन्होंने दिन-रात देश और समाज के लिए परिश्रम और संघर्ष तो बहुत किया, लेकिन जो साधनों के अभाव व प्रतिकूल परिस्थितियों के कारणों से अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके।

आमतौर पर सफल होने वालों का सम्मान किया जाता है लेकिन कवि ऐसे संघर्षशील लोगों के संघर्ष के प्रति आदर व सम्मान का भाव प्रकट करते हुए उन्हें प्रणाम करता है जो सफल नहीं हो सके। ऐसे सार्थक लोगों के संघर्ष रूपी 'नींव की ईंटों' पर ही सफलता रूपी इमारत टिकी होती है।

प्रश्न 5 कवि किन लोगों के प्रति आदर का भाव प्रकट करता है/किन लोगों को प्रणाम करता है?

उत्तर इस कविता में कवि ने उन क्रांतिकारी वीरों के प्रति आदर और सम्मान का भाव प्रकट किया है, जिन्होंने अपने जीवन में साहस, वीरता, उत्साह, परिश्रम, निष्ठा और पूरी ईमानदारी के साथ निस्वार्थ संघर्ष तो किया, लेकिन संसाधनों के अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। कवि ऐसे संघर्षशील व उपेक्षित लोगों को बार-बार प्रणाम करता है जिन्होंने पूरे साहस के साथ अपने लक्ष्य को पाने की कोशिश की लेकिन असफल होने के कारण इतिहास में खो गए।

पाठः 21 पत्र कैसे लिखें

(लेखन)

पत्र-लेखन के प्रकार

क) अनौपचारिक पत्र

ख) औपचारिक पत्र

पत्रों के प्रकार/ पत्र-लेखन के प्रकार

- **अनौपचारिक पत्र(व्यक्तिगत पत्र)**

(i) बधाई पत्र (iii)निमंत्रण पत्र (v)संवेदना पत्र

(ii) शुभकामना पत्र (iv)धन्यवाद पत्र (vi) ऐसे ही अन्य पत्र

- **औपचारिक पत्र**

(i) व्यावसायिक पत्र

बैंक मैनेजर आदि को या इनके द्वारा ,पुस्तक विक्रेता)परस्पर (

(ii) आवेदन पत्र (अधिकारी को)

(iii) कार्यालयी पत्र (संस्था आदि द्वारा परस्पर या किसी व्यक्ति को ,कार्यालय)

1) **अनौपचारिक पत्र(व्यक्तिगत पत्र)**

मित्रों को पत्र, परिवार के सदस्यों को तथा अपने किसी परिचित को लिखे गए पत्र **अनौपचारिक पत्र** हैं। इस तरह के पत्र लिखने वाले और पत्र पाने वाले के नज़दीकी या घनिष्ठ संबंध होता है।

इस तरह के पत्रों को **व्यक्तिगत पत्र** भी कहते हैं। इस प्रकार के पत्रों को बधाई-पत्र, धन्यवाद-पत्र, शुभकामना-पत्र, निमंत्रण-पत्र और संवेदना-पत्र में बाँटा जा सकता है।

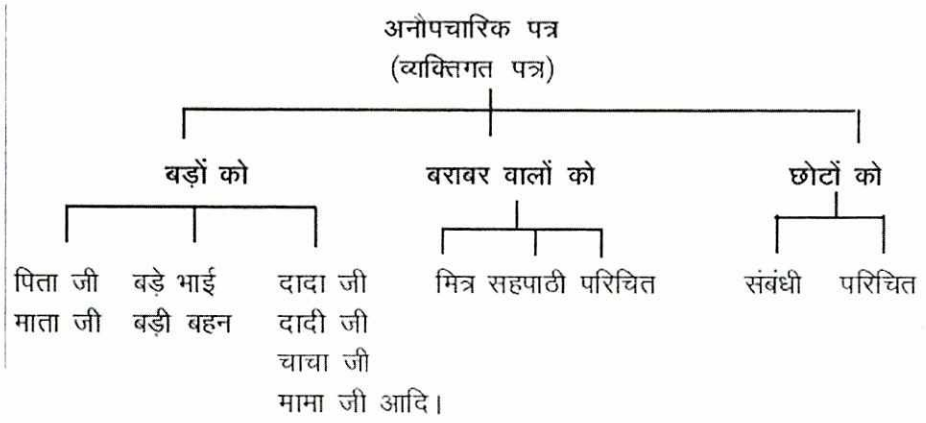

2. **औपचारिक पत्र**

जब दो लोगों के बीच व्यक्तिगत संबंध नहीं होते, कोई निजी जान-पहचान नहीं होती, तो ऐसे संबंधों को औपचारिक कहा जाता है। पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक-विक्रेता को पत्र, बैंक-मैनेजर को पत्र, स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र आदि औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं।

ये औपचारिक पत्र या तो कार्यालय के काम-काज से संबंधित होते हैं या व्यावसायिक होते हैं।

दुकानदारों, प्रकाशकों तथा कंपनियों को लिखे जाने वाले पत्र **व्यावसायिक पत्र** कहलाते हैं।

जो पत्र किसी एक कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय को भेजे जाते हैं, उन्हें **कार्यालयी पत्र** कहते हैं।

पत्र के अंग

1 पता और तिथि: प्रारंभ
2 संबोधन तथा अभिवादन
3 पत्र की विषयवस्तु
4 समापन

समापन शब्द

अध्यापक को	–	आपका आज्ञाकारी शिष्य	निमंत्रण-पत्र में	–	दर्शनाभिलाषी
माता-पिता को	–	आपका बेटा/बेटी	औपचारिक पत्रों में	–	भवदीय/आपका
मित्र को	–	तुम्हारा/तुम्हारा मित्र	आवेदन पत्र में	–	भवदीय/प्रार्थी/विनीत/निवेदक
छोटों को	–	शुभचिंतक/शुभेच्छु आदि			

नई सूचना-तकनीकी और पत्र

1) 'ई-पत्र' या 'ई-मेल' कंप्यूटर के माध्यम से होने वाले पत्र-व्यवहार को कहा जाता है।
2) **फ़ैक्स** एक प्रकार का दूर मुद्रण है। यह प्रक्रिया टेलीफोन-प्रणाली से जुड़ी होती है और सैटेलाइट की सहायता से पलक झपकते ही दूसरी फ़ैक्स मशीन पर कागज़ की प्रति प्राप्त हो जाती है।
3) आजकल छोटे-छोटे से संदेश लिखकर मोबाइल फोन द्वारा संदेश भेज देते हैं। इन्हें एस.एम. एस. कहते हैं। एस.एम.एस.(SMS) का अर्थ है- (लघु संदेश सेवा)।
4) तकनीकी और संचार क्रांति आ जाने के कारण कंप्यूटर इन्टरनेट द्वारा ई-पत्र भेजे जाते हैं।

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

1. कौन-सा विकल्प औपचारिक पत्र है-

(क) संवेदना-पत्र (ख) बधाई-पत्र

(ग) आवेदन-पत्र (घ) निमंत्रण-पत्र

2. पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक-विक्रेता को लिखा गया पत्र किस प्रकार का होगा?

(क) व्यक्तिगत पत्र (ख) अनौपचारिक पत्र

(ग) **व्यावसायिक पत्र** (घ) प्रार्थना पत्र

3 आपके द्वारा बैंक के मैनेजर को लिखा जाने वाला पत्र किस प्रकार का होता है?

(क) **औपचारिक** (ख) व्यावसायिक

(ग) अनौपचारिक (घ) कार्यालयी

4 आपके द्वारा माताजी को लिखा जाने वाला पत्र किस प्रकार का होता है?

(क) औपचारिक (ख) कार्यालयी

(ग) **व्यक्तिगत** (घ) प्रार्थना-पत्र

5 अपने से बड़ों को पत्र लिखते समय पत्र की समाप्ति पर क्या लिखा जाना चाहिए?

(क) **आपका आज्ञाकारी** (ख) आपका अभिन्न

(ग) आपका शुभचिंतक (घ) सदैव तुम्हारा

6 अपने ही शहर में पत्र लिखते समय क्या लिखना आवश्यक है?

(क) **दिनांक** (ख) स्थान

(ग) दिनांक, स्थान दोनों (घ) अपना पूरा पता।

प्रश्न: 1. अनौपचारिक पत्र के किन्हीं दो संबोधनों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : प्रिय/पूजनीय/आदरणीय, आदि।

प्रश्न: 2. औपचारिक पत्रों में संक्षिप्तता क्यों आवश्यक है?

उत्तर : औपचारिक पत्रों में संक्षिप्तता इसलिए आवश्यक है क्योंकि आज के युग में विस्तृत विवरण पढ़ने की फुर्सत किसी अधिकारी या व्यवसायी को नहीं होती।

प्रश्न: 3. औपचारिक पत्र किसे कहा जाता है?

उत्तर- जब दो लोगों के बीच व्यक्तिगत संबंध नहीं होते, कोई निजी जान-पहचान नहीं होती, तो ऐसे संबंधों को औपचारिक कहा जाता है। इन लोगों को लिखे गए पत्र **औपचारिक पत्र** होते हैं। किसी सूचना, समस्या

या अन्य किसी मुद्दे को लेकर ये पत्र लिखे जाते हैं और सिर्फ उसी विषय पर बात की जाती हैं। ये औपचारिक पत्र या तो कार्यालय के काम-काज से संबंधित होते हैं या व्यावसायिक होते हैं।

प्रश्न: 4. पत्र में पते और तिथि लिखने का क्या महत्व होता है?

उत्तर- पत्र में पते और तिथि लिखने का महत्व यह है कि पते और तिथि के बिना संस्थान को यह पता नहीं चलेगा कि आप कहाँ रहते हैं और कब आपने पत्र लिखा।

उदाहरण के लिए - अगर पता नहीं होगा तो आपको पुस्तकें कैसे भेजी जाएँगी और यह भी नहीं जान पाएँगे कि किस दिन तक आपको पुस्तकें नहीं मिल पाईं थीं।

प्रश्न: 5. अनौपचारिक पत्र के किन्हीं दो संबोधनों का उल्लेख कीजिए, जिनका प्रयोग आप अपने से बड़े लोगों के लिए करते है?

उत्तर- 'पूज्य', 'पूजनीय', 'आदरणीय', 'श्रद्धेय' आदि का प्रयोग अपने से बड़े उन लोगों के लिए किया जाता है, जिन्हें आप आदर देना चाहते हैं। जैसे : पूज्य गुरु जी, पूजनीय माता जी, आदरणीय चाचा जी, श्रद्धेय गुरुवर।

परिक्षार्थियों के लिए अभ्यासार्थ पत्र

1) अपने मित्र को कारोना महामारी से बचाव के बारे में सुझाव देते हुए पत्र लिखें।

2) कवि नगर, गाज़ियाबाद के थानाध्यक्ष को पत्र लिखकर अपनी स्कूटर की चोरी की घटना का संक्षिप्त विवरण देते हुए सूचना दीजिए।

3) नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर सूचित कीजिए कि आपके मुहल्ले में कूड़े के ढेर और बंद नालियों की तरफ किसी भी सफाई कर्मचारी का ध्यान नहीं हैं।

4) सचिव पराग टेक्सटाइल लिमिटेड, इंदौर को लिपिक पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए।

5) सेक्टर-पाँच, 164 चंडीगढ़ में रहने वाली गुरजीत कौर की ओर से विद्युत अधिकारी को पत्र लिखकर बताइए कि बिजली की कमी के कारण मुहल्ले के लोगों को कितने कष्ट में दिन बिताने पड़ रहे हैं।

6) अख़बार के संपादक को पत्र लिखकर बताइए कि आपके शहर में गुंडागर्दी कितनी बढ़ गई है।

पाठः 22 निबंध कैसे लिखें

(लेखन)

निबंध क्या है? निबंध लिखने की आवश्यकताः

जब किसी बात या घटना को सही क्रम देकर एक से अधिक अनुच्छेदों में लिखा जाता है, तब वह निबंध कहलाता है।

निबंध से तात्पर्य उस रचना से है, जिसे अच्छी तरह से बाँधा जाता है या जिसमें विचारों अथवा घटनाओं को सही क्रम देकर, गूँथ कर लिखा जाता है।

आप किसी भी वस्तु, घटना, विचार अथवा भाव पर निबंध लिखा जा सकता हैं। विस्तार से क्रमबद्ध लिखने का तरीका ही निबंध का जन्मदाता है।

निबंध में हम किसी विषय पर अपने विचार क्रम से और व्यवस्थित ढंग से इस प्रकार लिखते हैं कि पढ़ने वाला हमारी बात को समझ सके और उससे प्रभावित हो सके।

निबंध में क्रमबद्धता होनी चाहिए, वाक्य छोटे तथा प्रभावशाली होने चाहिए।

निबंध के प्रकारः

निबंध के कुछ प्रमुख प्रकारः

1 वर्णनात्मक

2 विचारात्मक

3 भावात्मक।

1. वर्णनात्मक निबंध में किसी वस्तु, घटना, प्रदेश आदि का वर्णन किया जाता है। उदाहरण के लिए, होली, दीपावली, यात्रा, दर्शनीय स्थल या किसी खेल आदि विषय पर निबंध।

2. विचारात्मक निबंध लिखने के लिए चिंतन-मनन की अधिक आवश्यकता होती है। इनमें बुद्धि-तत्त्व प्रधान होता है। ये प्रायः किसी व्यक्तिगत, सामाजिक या राजनीतिक समस्या पर लिखे जाते हैं। जैसेः 'दूरदर्शन का जीवन पर प्रभाव', 'दहेज-प्रथा', 'प्रजातंत्र' आदि।

3. भावात्मक निबंध या भाव-प्रधान निबंध में विषय के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है। इनमें कल्पना की प्रधानता रहती है व तर्क की बहुत अधिक गुंजाइश नहीं होती। उदाहरण के लिए, 'मित्रता', 'बुढ़ापा', 'यदि मैं अध्यापक होता' आदि।

विषय-वस्तु के आधार पर निबंध:

1 सामाजिक निबंध
2 सांस्कृतिक निबंध
3 देश-प्रेम/राष्ट्रीय चेतना परक निबंध
4 विज्ञान, तकनीक एवं प्रौद्योगिकी परक निबंध
5 व्यायाम एवं खेल संबंधी निबंध
6 राजनीतिक निबंध
7 सूक्तिपरक निबंध, आदि

निबंध के अंग:

निबंध के तीन प्रमुख अंग होते हैं :

1 भूमिका
2 विषय-वस्तु
3 उपसंहार

भूमिका को प्रस्तावना भी कहते हैं। इसमें निबंध के विषय को स्पष्ट किया जाता है। भूमिका रोचक होगी, तभी पाठक निबंध पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे।

विषय-वस्तु निबंध का मुख्य भाग है। इसमें विषय का परिचय दिया जाता है, उसका रूप स्पष्ट किया जाता है। विषय का एक ही केंद्रीय भाव होता है, उसका विस्तार करने की आवश्यकता होती है।

उपसंहार-लेखन:

उपसंहार में पूरे निबंध का निचोड़ और निष्कर्ष होता है। यदि उपसंहार अच्छा हो, तो पढ़ने वाले पर उसका प्रभाव अच्छा पड़ता है। निबंध का निष्कर्ष और समाधान उपसंहार में दिया जाता है। प्रभावी उपसंहार लिखने की सफलता की एकमात्र कसौटी यह है कि उसके बाद निबंध अधूरा-सा न लगे।

अभ्यास हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण निबंध:

(अध्यापक की सहायता से तैयारी करें)

- कोविड -19 महामारी: कोरोना वायरस से सुरक्षा और बचाव
- दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप
- मनोरंजन के बदलते साधन
- मोबाइल फोन का बढ़ता चलन: लाभ और हानि
- प्रदूषण की समस्या व समाधान
- मेरा प्रिय त्योहार
- श्रम का महत्त्व

- नारी-शक्ति /आधुनिक नारी
- भ्रष्टाचार: समस्या व समाधान
- बढ़ती महंगाई: कारण, समस्या और समाधान
- यदि मैं कृषि मंत्री होता/ भारतीय कृषक की समस्याएं व समाधान
- सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा/ मेरा प्यारा देश
- साक्षरता: एक वरदान
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

अध्यापकों हेतु (विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी के लिए) **आवश्यक निर्देश:**

1. सभी हिन्दी अध्यापकों से अपेक्षित है कि हिन्दी पाठ्य पुस्तक 1 के पृष्ठ संख्या 159 पर दिए गए ''नमूने का प्रश्नपत्र'' व **अंक योजना** को सभी छात्रों से साझा करें व प्रश्न प्रारूप समझाएं और कक्षा में इसके सभी प्रश्नों को अवश्य हल करवाएं।

2. सभी छात्रों के पास ''नमूने के प्रश्नपत्र'' व पिछले वर्षों के प्रश्नपत्र उपलब्ध हों ताकि प्रश्नपत्र के नमूने व अंक योजना से वे भली-भाँति परिचित होकर अभ्यास कर सकें।

3. **छात्रों को निबंध लेखन, पत्र लेखन, सार लेखन, पठित काव्यांश, अपठित काव्यांश, पठित गद्यांश व अपठित गद्यांश संबंधित प्रश्नों का पर्याप्त अभ्यास करवाया जाए, क्योंकि ये सातों प्रश्न छात्र को परीक्षा पास करने व अच्छे अंक दिलाने के लिए अति महत्त्वपूर्ण हैं।**

4. इस सामग्री के साथ दिए गए व्याकरण भाग व आदर्श प्रश्न-पत्र का भी छात्रों को अभ्यास कराएं।

5. प्रत्येक पाठ के साथ उस पाठ से संबंधित परीक्षापयोगी लघु प्रश्न, बहुविकल्पीय प्रश्न, काव्य-सौंदर्य संबंधी व अन्य प्रश्न उत्तर सहित दिए गए है। इन सभी प्रश्नों का अभ्यास छात्रों को करवाया जाए व दो से तीन पाठों को मिलाकर साप्ताहिक लघु कक्षा परीक्षा आयोजित की जाएं।

6. इस सहायक साम्रगी के साथ में दिए गए आदर्श प्रश्न-पत्रों का कक्षा में पर्याप्त अभ्यास करवाएं व कक्षा परीक्षा लें।

7. उपरोक्त सहायक सामग्री प्रश्नपत्र के लिए अंतिम व पूर्ण नहीं है, अत: अध्यापकों से अनुरोध है कि वे स्वविवेक से छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम व विषय की पूर्ण जानकारी देकर पर्याप्त अभ्यास कराएं।

व्याकरण भाग

वाक्य:

वाक्य के दो भेद होते हैं- सरल वाक्य और जटिल वाक्य:

सरल वाक्य - सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है।

जैसे- (i) मोहन जाता है, (ii) राम का बेटा मोहन जाता है, (iii) राम का बेटा मोहन स्कूल जाता है।

जटिल वाक्य दो तरह के होते हैं:

एक संयुक्त वाक्य और दूसरे मिश्र वाक्य।

संयुक्त वाक्य - संयुक्त वाक्य दो समानांतर वाक्यों से बना होता है तथा वह समुच्चयबोधक अव्ययों- और, तथा, एवं, किंतु, परंतु आदि से जुड़ा होता है,

जैसे- (i) पिता जी घर आए और चाचा जी चले गए। (ii) मैं बाजार गया और जलेबी लाया।

मिश्र वाक्य - मिश्र वाक्य भी दो या दो से अधिक वाक्यों से बना होता है, लेकिन उसमें एक उप वाक्य प्रधान होता है तथा दूसरा आश्रित उप वाक्य होता है,

जैसे: (i) माँ ने कहा कि सोहन नहीं आएगा।

(ii) जहाँ भी तुम जाओगे, मैं वहीं आ जाऊँगा।

प्रश्न. 1 वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए:

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. **तेरे को** प्रधानाचार्य ने बुलाया है।	तुम्हें प्रधानाचार्य ने बुलाया है।
2. उसका नाम **मेरे को** मालूम नहीं है।	उसका नाम मुझे मालूम नहीं है।
3. कल **तुम्हारा गुरू** जी **मिला था।**	कल तुम्हारे गुरू जी मिले थे।
4. **दिल्ली सरला का भाई** गया था।	सरला का भाई दिल्ली गया था।
5. **उन सबों** ने काम नहीं किया।	उन सब ने काम नहीं किया।

प्रश्न. 2 सरल वाक्य में बदलिए:

संयुक्त वाक्य		सरल वाक्य
1. साहिल हंसा और बोला।	-	साहिल हंसकर बोला।
2. वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।	-	अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।
3. राम आया और आते ही खेलने लगा।	-	राम आते ही खेलने लगा।

मिश्रित वाक्य		सरल वाक्य
4. उसने वह खाना खाया जो उसके भाई का था।	–	उसने अपने भाई का खाना खाया।
5. जो लोग भारतीय होते हैं वे संस्कारी होते हैं।	–	भारतीय लोग संस्कारी होते हैं।

समानार्थी या पर्यायवाची शब्द

1. फूल	पुष्प, सुमन, कुसुम
2. पानी	जल, वारि, अंबु
3. कपड़ा	पट, वस्त्र, चीर
4. पेड़	तरू, विटप, वृक्ष
5. आग	पावक, अग्नि, अनल
6. बेटा	सुत, तनय, पुत्र
7. आकाश	नभ, गगन, आसमान
8. सूरज	दिनकर, सूर्य, दिवाकर
9. पक्षी	खग, विहग, पंछी
10. हवा	पवन, समीर, वायु
11. विष्णु	हरि, लक्ष्मीपति, नारायण
12. शिव	महेश, शंकर, महादेव
13. स्त्री	नारी, महिला, औरत
14. मार्ग	पथ, रास्ता, मग
15. जलज	अरविंद, कमल, पंकज
16. भवन	इमारत, सदन, घर
17. पृथ्वी	वसुधा, भूमि, धरती
18. बेल	लता, बल्लरी, बेली
19. समुद्र	सागर, रत्नाकर, जलधि
20. नदी	सरिता, तटिनी, तरंगिनी

शब्द निर्माण:

शब्द निर्माण का कार्य उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास के माध्यम से किया जाता है।

1. **उपसर्ग उन्हें कहते हैं** जो शब्द के पहले लगते हैं और अर्थ को बदल देते हैं
   जैसे: 'हार' शब्द के पहले 'उप' लगकर उपहार बन जाता हैं 'हार' शब्द में प्र (प्रहार), आ (आहार), वि (विहार) आदि।

2. शब्द निर्माण का दूसरा आधार है **प्रत्यय**–
   प्रत्यय शब्द के पीछे लगता है और अर्थ में परिवर्तन कर देता है।
   जैसे मूर्ख + ता – मूर्खता,
   वर्ष + इक – वार्षिक।

3. तीसरा आधार है **संधि**–

दो वर्णो के मेल को संधि कहा जाता है जैसे सूर्योदय, इत्यादि, विद्यालय, चंद्रोदय।

इनका विच्छेद – सूर्य + उदय, इति + आदि, विद्या + आलय, चंद्र + उदय।

4. चौथा आधार है **समास**–

दो शब्दों के मेल को समास कहते हैं, जैसे रसोईघर, पीतांबर, माता-पिता, रेलगाड़ी। इनका विग्रह होगा– रसोई के लिए घर, पीला है अंबर जिसका, माता और पिता, रेल पर चलने वाली गाड़ी।

प्रश्न. 1 निम्नलिखित उपसर्गों से दो-दो शब्द बनाओः

उप	–	उपकार, उपहार, उपनाम
वि	–	वियोग, विकार, विकट
अभि	–	अभियोग, अभिमान, अभिशाप
अन	–	अनजान, अनभिज्ञ, अनमोल
सम्	–	संयोग, संयम, संतोष
अनु	–	अनुशासन, अनुमान, अनुभव
प्र	–	प्रयास, प्रभाव, प्रयोजन
प्रति	–	प्रतिशोध, प्रतिकार, प्रतिवर्ष
परा	–	पराभव, पराजय, परामर्श
सु	–	सुपुत्र, सुलेख, सुकवि

प्रश्न. 2 निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय छांटिएः

शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
माननीय	मान	अनीय
सजावट	सज	आवट
घबराहट	घबरा	आहट
पालनहार	पालन	हार
मासिक	मास	इक
धारदार	धार	दार
चायवाला	चाय	वाला
मानसिकता	मानसिक	ता
बुराई	बुरा	आई
दोस्ती	दोस्त	ई
भारतीय	भारत	ईय
बलवान	बल	वान
धनहीन	धन	हीन
साप्ताहिक	सप्ताह	इक
ऐतिहासिक	इतिहास	इक

प्रश्न. 3 सन्धि-विच्छेद कीजिए:

शब्द	सन्धि-विच्छेद		
दुर्गेश	दुर्ग +ईश	स्वाधीन	स्व+आधीन
वातावरण	वात+आवरण	जगन्नाथ	जगत्+नाथ
हिमालय	हिम+आलय	सर्वोदय	सर्व+उदय
मरणासन्न	मरण+आसन्न	सदुपयोग	सत्+उपयोग
वाचनालय	वाचन+आलय	स्वागत	सु+आगत
रेखांकित	रेखा+अंकित	महात्मा	महा+आत्मा
नरेश	नर+ईश	सूर्योदय	सूर्य+उदय
नवोदय	नव+उदय	विद्यालय	विद्या+आलय
पुस्तकालय	पुस्तक+आलय	अत्यंत	अति+अंत

प्रश्न. 4 समस्त पद का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए:

समस्त पद	विग्रह	समास का नाम
सुख-दुख	सुख और दुख	द्वन्द्व समास
रात-दिन	रात और दिन	द्वन्द्व समास
दूध-भात	दूध और भात	द्वन्द्व समास
कृष्णार्जुन	कृष्ण और अर्जुन	द्वन्द्व समास
दाँए-बाँए	दाँए और बाँए	द्वन्द्व समास
दही-बड़ा	दही और बड़ा	द्वन्द्व समास
जलवायु	जल और वायु	द्वन्द्व समास
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	तत्पुरूष समास
विद्यालय	विद्या के लिए आलय	तत्पुरूष समास
रसोईघर	रसोई के लिए घर	तत्पुरूष समास
देश-प्रेम	देश से प्रेम	तत्पुरूष समास
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह	द्विगु समास
पंचवटी	पाँच वटों(वृक्षों)का समूह	द्विगु समास
सप्ताह	सात दिनों का समूह	द्विगु समास
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव	बहुब्रीहि समास
चतुर्भुज	चार भुजाओं वाली आकृति या विष्णु भगवान का एक नाम	बहुब्रीहि समास
रत्नाकर	जो रत्नों से परिपूर्ण हो	बहुब्रीहि समास
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास
नीलकमल	नीला है जो कमल	कर्मधारय समास

अलंकार

1. अनुप्रास अलंकार

जहाँ पास-पास आने वाले शब्दों में एक ही वर्ण का बार-बार दुहराव (आवृत्ति) हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

'निंदक नियरे' में 'न' वर्ण की आवृति से **अनुप्रास अलंकार** है।

'खैर, खून, खाँसी, खुशी' में 'ख' वर्ण का दुहराव है। अत: **अनुप्रास अलंकार** है।

2. रूपक अलंकार

उपमेय पर जब उपमान का आरोप कर दिया जाए तो रूपक अलंकार होता है। इस स्थिति में उपमान और उपमेय एकरूप हो जाते हैं। जैसे- ''पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं।''

3. यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द का एक से अधिक बार प्रयोग हो और हर बार अलग अर्थ हो वहाँ **यमक अलंकार** होता है। ''खग-कुल कुल-कुल सा ड़ोल रहा'' ' में 'कुल' शब्द का अर्थ है- समूह या परिवार और 'कुल-कुल' का अर्थ है- कलरव। इसलिए यहाँ **यमक अलंकार** है।

4. अन्योक्ति अलंकार

साधारण तौर पर एक बात कही जाए, पर उसका अर्थ बिल्कुल भिन्न या अप्रत्यक्ष निकलता हो, वहाँ **अन्योक्ति अलंकार** होता है।

- उपमेय की उपमान से तुलना - उपमा अलंकार

  पीपर पात सरिस मन डोला- (पीपल के पत्ते **की तरह** मन डोला)
- उपमेय में उपमान की संभावना - उत्प्रेक्षा अलंकार

  नील परिधान बीच सुकुमार खिल रहा मृदुल अधखुला अंग

  खिला **हो ज्यों** बिजली का फूल मेघ वन बीच गुलाबी रंग
- उपमेय में उपमान का आरोप

  (उपमेय और उपमान का भेद समाप्त होना)- रूपक अलंकार

  अंबर-पनघट में डुबो रही **तारा-घट ऊषा-नागरी।**

स्रोत् के आधार पर शब्द के भेद -

स्रोत् के आधार पर शब्द के चार भेद हैं - **तत्सम, तद्भव, देशज और आगत**

तत्सम - जो शब्द संस्कृत भाषा से ज्यों के त्यों लिए जाते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं।

जैसे- गंभीर, दायित्व, स्वच्छ, संतुष्टि, प्रफुल्लता, उत्साहपूर्ण, वातावरण, निस्संदेह, काल्पनिक, अनुमान, नृत्य, मनोमालिन्य, आत्मा, समाधि, प्राणी, स्वाधीन, आदि।

तद्भव - संस्कृत भाषा के वे शब्द, जिनका हिंदी भाषा में आकर स्वरूप बदल जाता है, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

जैसे आँखें, पुराना, भाई, बहन, खेत, घर, आँसू आदि। ये क्रमशः अक्षि, प्राचीन, भ्राता, भगिनी, क्षेत्र, गृह, अश्रु के परिवर्तित रूप हैं।

कुछ अन्य उदाहरण- राजा, रात, रानी, घोड़ा, आदि।

देशज - वे शब्द, जो लोक में उत्पन्न और प्रयुक्त होते हैं देशज कहलाते हैं।

जैसे- मलकाना, जून, चकइठ, खटना, शहर, पुलई, बँसखट, तीता आदि।

क्षेत्रीय (देशज) शब्द- उबटन, चौसर, निगोड़ी, चिलम, हुक्का,

आगत शब्द- वे शब्द, जो अन्य भाषाओं उर्दू, अंग्रेज़ी आदि से आए होते हैं, आगत शब्द कहलाते हैं।

जैसे- हिदायतें, फ़रमाइश, तकलीफ, गोया, तनख़्वाह, शान-शौकत, बरदाश्त, अफ़सोस, सुपुर्द टाइट, बस स्टेशन, साइकिल, जागीर, बिसात, ज़लील, मैयत, वली, दस्तरख़ान, मनहूस, बेगम, हकीम, नाजुक, मिजाज, फ़ौज, जालिम, नसीब, नवाब, खुदा, बादशाह, खानदान, वज़ीर, आदि।

मुहावरे

प्रश्न. 1 निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग करें।

1. **कानों पर जूँ न रेंगना** - किसी बात का असर न होना।

वाक्य प्रयोग: महंत के लाख मना करने पर भी गोबरधनदास के कान में जूँ न रेंगी।

2. **सिर धुनना**- शोक प्रकट करना/दुखी होना/शोक मनाना।

वाक्य प्रयोग: खंडहर की टूटी हुई मेहराबें और धूल-धूसरित मीनारें इन लाशों को देखती और सिर धुनती थीं।

3. **दाँतों तले ऊँगली दबाना**- आश्चर्यचकित हो जाना।

वाक्य प्रयोग: शिवाजी के शौर्य को देखकर शत्रु सैनिक दाँतों तले ऊँगली दबाने लगते थे।

4. **दिन-रात एक करना**- बहुत परिश्रम करना/किसी काम में जुटे रहना

वाक्य प्रयोग: सुखी राजकुमार ने अपनी प्रजा के दुखों को दूर करने के लिए दिन-रात एक कर दिया।

5. **सिर हथेली पर रखना**- जान की परवाह न करना।

वाक्य-प्रयोग: भारतीय सैनिक सिर हथेली पर रखकर युद्ध करते हैं।

6. **कब्र में पाँव लटका होना**- मृत्यु के निकट होना।

वाक्य प्रयोग: उनके पाँव कब्र में लटके हैं, पर मोह माया के पीछे दौड़ना नहीं छोड़ते।

7. **खून के आँसू रोना-** बहुत तकलीफ़ में होना।
वाक्य प्रयोग: जो व्यक्ति समय का महत्व नहीं समझता उसे खून के आँसू रोने पड़ते हैं।

8. **लोहा लेना- युद्ध करना।**
वाक्य प्रयोग: क्रन्तिकारियों ने अंग्रेजी सरकार से अंत तक लोहा लिया।

9. **कमर कसना- तैयार होना**
वाक्य प्रयोग: उत्तराखण्ड़ में प्राकृतिक आपदा की सूचना मिलते ही भारतीय सेना के जवानों ने कमर कस ली।

10. **दाँत खट्टे करना- दुश्मन को परास्त करना**
वाक्य प्रयोग: भारतीय सेना ने कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना के दाँत खट्टे कर दिए।

अभ्यास हेतु अन्य परीक्षा उपयोगी उदाहरण

1) ताड़ जाना- इरादा भाँप जाना।
2) दीन-दुनिया की फिक्र न होना- किसी बात की चिंता न होना।
3) तू-तू-मैं-मैं होना- झगड़ा होना।
4) कान का कच्चा होना- सुनी हुई बात पर बिना सोचे-समझे यकीन करना।
5) ऐड़ी-चोटी का जोर लगाना- बहुत परिश्रम करना।
6) आँखें गड़ाना- लगातार देखना।
7) दाल न गलना- कार्य पूर्ण न होना।
8) आँख का तारा होना- अत्यधिक प्रिय होना।
9) नाक कटाना- बेइज्जती करवाना।
10) आकाश-पाताल एक करना- पूरा ज़ोर लगाना।

विराम-चिन्ह

विराम-चिन्ह: लिखने में रूकावट या विराम के स्थान को जिन चिन्हों द्वारा प्रकट किया जाता है, उन्हें विराम-चिन्ह कहते हैं। इनके अनुचित प्रयोग से अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है।

- पूर्ण विराम चिन्ह (।): वाक्य के अन्त में इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।
- अल्प विराम चिन्ह (,):वाक्य में जहाँ बहुत ही कम ठहराव होता है वहाँ इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।
- प्रश्न वाचक चिन्ह (?): जब किसी वाक्य में प्रश्नात्मक भाव हो उस वाक्य के अन्त में इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

- विस्मयादिबोधक चिन्ह(!): आश्चर्य, करूणा, घृणा, भय आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए विस्मयादिबोधक चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।
- उद्धरण चिन्ह ("-")/ ('-'): ये दो तरह के होते हैं।

  किसी लेख, कविता, पुस्तक इत्यादि का शीर्षक लिखने में **इकहरे उद्धरण ('-')** चिन्ह का प्रयोग होता है।

  जब किसी कथन को जैसे का तैसा उद्धृत करना होता है तब **दोहरे उद्धरण ("-")** चिन्ह होता है।

प्रश्नः निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम चिन्हों का प्रयोग करें:

1. रमेश सुरेश महेश और वीरेन्द्र घूमने गये। (अल्प विराम)
   रमेश, सुरेश, महेश और वीरेन्द्र घूमने गये।
2. वीरेन्द्र तुम यहीं ठहरो। (अल्प विराम)
   वीरेन्द्र, तुम यहीं ठहरो।
3. यह पुस्तक अच्छी है (पूर्ण विराम)
   यह पुस्तक अच्छी है।
4. बालक लिखता है (पूर्ण विराम)
   बालक लिखता है।
5. क्या आप दिल्ली के निवासी है (प्रश्न वाचक)
   क्या आप दिल्ली के निवासी है?
6. तुम्हारा क्या नाम है (प्रश्न वाचक)
   तुम्हारा क्या नाम है?
7. हे भगवान वह अनुत्तीर्ण हो गया (विस्मयादिबोधक चिन्ह)
   हे भगवान! वह अनुत्तीर्ण हो गया।
8. अरे तुम इतने बड़े हो गये। (विस्मयादिबोधक)
   अरे! तुम इतने बड़े हो गये।
9. नेताजी ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा। (उद्धरण चिन्ह)
   नेताजी ने कहा, "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"
10. लाल बहादुर शास्त्री ने कहा, जय जवान जय किसान। (उद्धरण चिन्ह)
    लाल बहादुर शास्त्री ने कहा, "जय जवान जय किसान।"

अभ्यास हेतु प्रश्न-पत्र - 1 (हल सहित)

HINDI

(हिन्दी)

(201)

समय: 3 घंटे **पूर्णांक: 100**

निर्देश :

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

2. प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : **1 x 5 = 5**

(1) 'इसे जगाओ' कविता में सूरज, पवन और पंछी को 'भई' कहा गया है, यह संबोधन है:

(क) आत्मीय (ख) श्रद्धासूचक (ग) औपचारिक (घ) आदरसूचक

(2) 'आह्वान' कविता में 'दीपक' भाग्य है, 'तेल' क्या है?

(क) विधाता (ख) प्रेम (ग) कर्म (घ) शांति

(3) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में विवाह के रूपक में प्रकति किसकी भूमिका निभा रही है?

(क) दुल्हन की (ख) मा की (ग) सहेली की (घ) प्रेमिका की

(4) कबीरदास ने घर में बढते धन की तुलना किससे की है?

(क) पानी में घिरी नाव से (ख) अँजुरी में भरे पानी से

(ग) अनेक प्रकार की बुराइयों से (घ) नाव में भरते पानी स

(5) 'बीती विभावरी जाग री', कविता में 'नागरी' किसे कहा गया है?

(क) भँवरों को (ख) भोर को (ग) सुंदर स्त्री को (घ) मालिन का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम एक वाक्य में लिखिए : **1 x 6 = 6**

(1) 'आज़ादी' कविता के अंत में शागिर्द द्वारा सुई में धागा पिरोने लगना क्या सूचित करता है?

(2) कबीर ने निंदक को निकट रखने का परामर्श क्यों दिया है?

(3) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में हवा को किस रोग से ग्रस्त दिखाया गया है?

(4) 'उनको प्रणाम' कविता में किन लोगों के प्रति श्रद्धा का भाव है?

(5) वृंद के अनुसार चतुर और ज्ञानी बनने के लिए क्या आवश्यक है?

(6) 'खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा...' में कौन-सा अलंकार है।

3. निम्नलिखित काव्यांश किस पाठ से लिया गया है, इसके कवि के नाम का उल्लेख हुए करते काव्यांश का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। 5

आओ, मिल सब देश-बांधव हार बनकर देश के,

साधक बनें सब प्रेम से सुख-शांतिमय उद्देश्य के।

क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!

बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो?

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।

अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए : 2 X 3=6

(क) 'उनको प्रणाम' कविता में असफल लोगों के प्रति अभिव्यक्त दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण कीजिए।

(ख) 'बीती विभावरी जाग री' कविता में कवि किसे और क्यों जगाना चाहता है?

(ग) कबीर ने गुरु की तुलना कुम्हार से क्यों की है?

(घ) 'इसे जगाओ' कविता में कवि ने सोए हुए आदमी को जगाने का आग्रह किस-किस से किया है और क्यों?

5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए :
3

' बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में बूढ़ी पृथ्वी का दुख चित्रित किया गया है। इस दुख को दूर करने के लिए क्या-क्या उपाय हो सकते हैं?

अथवा

'आज़ादी' कविता के आधार पर आज़ादी और कर्म के संबंध का स्पष्टीकरण कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए: 1 X 6=6

(1) 'सुखी राजकुमार' कहानी में गोरैया ने मिस्र जाने का विचार त्याग दिया, क्योंकि

(क) वह नगर की निर्धन जनता की सहायता करना चाहती थी।

(ख) वह परोपकारी राजकुमार को असहाय नहीं छोड़ना चाहती थी।

(ग) उसका अपने साथियों के पास पहुँचने का समय बीत चुका था।

(घ) वह अत्यधिक अशक्त और बीमार हो चुकी थी।

(2) कौन-सा तत्त्व नाटक को अन्य गद्य विधाओं से अलग करता है?

(क) संवाद (ख) कथानक (ग) भाषा-शैली (घ) अभिनेयता

(3) 'रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी' - 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में यह किसके बारे में कहा गया है?

(क) बेगम (ख) मीर साहब (ग) मिरजा (घ) शतरंज

(4) 'गिल्लू' पाठ में किन दो विधाओं का संयोग है?

(क) रेखाचित्र और संस्मरण (ख) संस्मरण और रिपोतांज

(ग) रेखाचित्र और रिपोर्ताज (घ) रेखाचित्र और जीवनी

(5) पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक-विक्रेता को लिखा गया पत्र किस प्रकार का होगा?

(क) व्यक्तिगत पत्र (ख) अनौपचारिक पत्र

(ग) व्यावसायिक पत्र (घ) प्रार्थना पत्र

(6) 'ऐसा न हो कि यह बेवकूफ़ इस बात पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे'– 'अंधेर नगरी' नाटक में यह कथन है–

(क) महंत का (ख) मंत्री का

(ग) गोबरधनदास का (घ) कोतवाल का

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में लिखिए: 1 X 7=7

(1) 'मास्ट हेड' किसे कहते हैं?

(2) अनौपचारिक पत्र के किन्हीं दो संबोधनों का उल्लेख कीजिए।

(3) 'सुखी राजकुमार' कहानी में गोरैया राजकुमार को छोड़कर क्यों नहीं जाती?

(4) किस खास तरह के प्रोटीन के माफ़िक न आने से होने वाले रोग को क्या कहते हैं?

(5) मदर टेरेसा का जन्म किस देश में हुआ था?

(6) गिल्लू ने गर्मियों में लेखिका के पास रहने का क्या तरीका निकाला?

(7) किशोर ने बहादुर की पिटाइ क्यों की?

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 1+2+2=5

मनुष्य को सुख कैसे मिलेगा? बड़े-बड़े नेता कहते हैं, वस्तुओं की कमी है, और मशीन बढ़ाओ और उत्पादन बढ़ाओ और धन की वृद्धि करो, और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाओ। एक बूढ़ा था। उसने कहा था- बाहर नहीं, भीतर की ओर देखो। हिंसा को मन से दूर करो, मिथ्या को हटाओ, क्रोध और द्वेष को दूर करो, लोक के लिए कष्ट सहो, आराम की बात मत सोचो, प्रेम की बात सोचो, आत्म-तोषण की बात सोचो, काम कने की बात सोचो। उसने कहा- प्रेम ही बड़ी चीज़ है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृंखलता पशु की वृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई, आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति हो हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँ- बूढ़े कितनी गहराई में बैठकर मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता लगाया था।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम बताइए।

(ख) गद्यांश का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) आज के परिवेश में बढ़ती हिंसा को रोकने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं? 60 शब्दों में लिखिए।

अथवा

वाजिदअली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा हुआ था। छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोइं नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफ़ीम की पिनक ही में मज़े लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन-विभाग में, साहित्यिक क्षेत्र में, सामाजिक अवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धंधों में, आहार-व्यवहार में सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी। राज कर्मचारी विषय-वासना में, कविगण प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कलाबत्तू और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमे, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोज़गार करने में लिप्त थे। सभी की आँखों में विलासिता का मद छाया हुआ था। संसार में क्या हो रहा है, इसकी किसी को खबर न थी।

(क) यह गद्यांश किस पाठ से है? इसके लेखक कौन हैं?

(ख) उपर्युक्त गद्यांश की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) गद्यांश में वाजिदअली शाह के समय में समाज के पतन के कारणों की ओर संकेत किया गया है। आज के समय में सामाजिक पतन के कारणों का उल्लेख कीजिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 20-20 शब्दों में लिखिए : 2 X 4=8

(क) 'अपना-पराया' पाठ के आधार पर बताइए कि एलर्जी किसे कहते हैं? इसके दो लक्षण भी लिखिए।

(ख) 'अंधेर नगरी' नाटक में अंग्रेज़ों के कुशासन पर व्यंग्य किया गया है- दो उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

(ग) प्राचीन काल में नाखून बढ़ाना उचित था और आज काटना- ऐसा क्यों हैं? 'नाखून क्यों बढ़ते पाठ के आधार पर लिखिए।

(घ) सार-लेखन का आशय स्पष्ट करते हुए सार-लेखन की प्रक्रिया के प्रारंभिक दो चरणों का उल्लेख कीजिए।

(ङ) मीर और मिरज़ा ने गोमती के किनारे शतरंज खेलने का निर्णय क्यों लिया?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में लिखिए : 3 X 3=9

(क) 'भारत की ये बाहदुर बेटियाँ' पाठ के आधार पर कल्पना चावला के व्यक्तित्व की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(ख) समाचारों के चयन में बरती जाने वाली किन्हीं तीन सावधानियों पर प्रकाश डालिए।
(ग) 'मूर्ति और मनुष्य' कहानी में गौरैया के व्यवहार मं आए परिवर्तन के कारणों पर एक टिप्पणी लिखिए।
(घ) 'बहादुर' कहानी के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार की किन्हीं तीन प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के

आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली

दरवाज़े खिड़कियाँ खुलने लगे गली-गली

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए।

आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए

बाँकी चितवन उठा नदी ठिठकी, घूँघट सरके,

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(क) मेघों के आगमन की तुलना किससे की गई है?

(ख) गली-गली के दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने का कारण क्या है?

(ग) 'बाँकी चितवन उठा नद ठिठकी' में कौन-सा अलंकार है?

(घ) गाँव में मेघों के आने की सूचना कौन दे रहा है?

(ङ) गाँव के बड़े बुजुर्गों की भूमिका कौन निभा रहे हैं?

12. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

हमारे गाँव आत्मनिर्भर नहीं हैं। कहीं-कहीं स्वास्थ्य-शिक्षा तो छोड़िए, भोजन-पानी की बुनियादी सुविधाएँ भी नहीं है। इतनी असुविधाओं में जीवनयापन दुष्कर है। इसीलिए लोग गाँव छोड़कर शहरों की ओर आते हैं। वे विवशता में अपना घर छोड़ते ह। कोई भी अपनी जड़ें नहीं त्यागना चाहता। जड़ों से कटकर लोगों में भावनात्मक खिन्नता भी आ जाती है। व्यक्तिगत रूप से मेरा मानना है कि हम सभ्य समाज में रहते हैं, इसलिए हमें अपने देश को गाँवों और शहरों में बाँटकर नहीं देखना चाहिए। इसके लिए यह भी जरूरी है कि हमारे जो भी संसाधन हैं, सुविधाएँ या असुविधाएँ हैं, सीमाएँ या उपलब्धियाँ हैं- उनका इस्तेमाल भी बराबरी से हो। यह नहीं कि शहरों में अधिक और गाँवों में कम। शहरों की पब्लिक तो रिपब्लिक के मज़े ले रही है और गाँव के गण अभी गणतंत्र से दूर हैं। गाँव और शहर की यह दूरी पाटने के लिए हमें गाँवों की ओर ध्यान देना होगा।

(1) गाँवों से शहरों की ओर आने पर प्रमुख कारण क्या है?

(2) गाँवों और शहरों को बाँटकर न देखने के लिए क्या करना ज़रूरी है?

(3) 'गाँव के गण अभी गणतंत्र से दूर हैं'– आशय स्पष्ट कीजिए।

(4) 'कोई भी अपनी जड़ें नहीं त्यागना चाहता'- इस वाक्य में 'जड़ें' से क्या तात्पर्य है?

(5) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

13. निदेशानुसार उत्तर दीजिए : **1 X 10=10**

(1) संधि-विच्छेद कीजिए : जन्मोत्सव, स्वाधीन

(2) विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए : देशभक्ति अथवा रात दिन

(3) 'अनु' उपसर्ग से दो शब्द बनाइए।

(4) वह गोरों की फौज थी जो लखनऊ पर अधिकार जमाने आई थी। (सरल वाक्य में बदलिए)

(5) चार का गजर बज ही रहा था कि फौज की वापसी की आहट मिली। (रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए)

(6) अरे तुम इतने बड़े हो गए (यथास्थान उपयुक्त विराम चिह्न लगाइए)

(7) दाँत खट्टे करना, नाक कटाना, (किसी एक मुहावरे का वाक्य-प्रयोग कीजिए)

(8) दुर्जन लोग किसी का भला नहीं करते। (वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए)

(9) मदन, गोपाल और गीता जा रही है। (वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए)

(10) 'इक' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।

14. निम्नलिखित गद्यांश का सार लगभग एक तिहाई शब्दों में लिखिए : **5**

मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है। पर, उस सुख और उत्सव के इस आनंद में बड़ा अंतर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य-जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिंता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है,, क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं, उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनंद की प्राप्ति करते हैं। यह आनंद जीवन का आनंद है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्यत्व का ख़्याल करते हैं। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिंता छोड़ देते हैं, कर्त्तव्य-भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छंदता आ जाती है। उस रोज़ हमारी दिनचर्या बिलकुल नष्ट हो जाती है। व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हमलोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनंद पा रहे हैं।

15. टी.वी. पर बढ़ती हिंसा और अश्लीलता के विरोध में अपने विचार व्यक्त करते हुए 'दैनिक हिन्दुस्तान' के संपादक के नाम एक पत्र लिखिए।

अथवा

आप ग्रीष्मावकाश में नैनीताल के पर्यटन पर जाना चाहते हैं। निदेशक, पर्यटन विभाग, नैनीताल को पत्र लिखकर नैनीताल और आसपास के दर्शनीय स्थलों तथा आवास और भोजन आदि की व्यवस्था के बारे में जानकारी प्रदान करने का अनुरोध कीजिए।

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए:
10

(क) सब पढ़ें सब बढ़ें
(ख) समाचार पत्र
(ग) क्या नहीं कर सकती नारी!
(घ) मोबाइल फ़ोन : लाभ और हानिया

प्रश्नपत्र अंक योजना

1.	उत्तर	अंक
(1)	(क)	1
(2)	(ग)	1
(3)	(ख)	1
(4)	(ग)	1
(5)	(ग)	1

2.

1) अपने काम पर लग जाना 1
2) उसकी निंदा सुनकर हम अपनी बुराइयाँ दूर कर सकेंगे। 1
3) तपेदिक या टी.बी. से 1
4) पूरा प्रयास करने पर भी जो सफलता प्राप्त नहीं कर पाए 1
5) अभ्यास करना 1
6) यमक, अनुप्रास (किसी एक का उल्लेख) 1

3. आओ, मिलें ..... सुमनों की कहो?

कविता : आह्वान

1/2

कवि : मैथिलीशरण गुप्त 1/2

काव्य-सौंदर्य : विविध प्रकार के फूलों के हार के रूप में विभिन्न जाति-संप्रदाय के लोगों की कल्पना। भिन्नता एकता में बाधा नहीं। सुख और शांति के लिए मिलकर प्रयासरत होने पर बल। धर्मों के अलग होने के बावजूद राष्ट्र के रूप में एकता का आह्वान। सरल भाषा। दृष्टांत का सुंदर उपयोग। प्रश्न के माध्यम से संदेश देना।

3 अभिव्यक्ति

1

अथवा

पावस देखि ..... पूछत कौन।

पाठ : दोहे

कवि : रहीम

काव्य-सौंदर्य : बरसात के मौसम में कोयल के मौन साध लेने और मेंढ़क के टर्राने लगने के दृष्टांत के माध्यम से ज्ञानी व्यक्ति के व्यक्तित्व का उल्लेख। मूर्खों के शोर मचाने पर विद्वान चुप हो जाता है, क्योंकि शोर-शराबे में ज्ञान की बातें खो जाती हैं। वह उपयुक्त समय की प्रतीक्षा में चुप होता है, ज्ञान की व्यर्थता महसूस करके नहीं।

दोहा छंद, ब्रजभाषा, सरल अभिव्यक्ति, दृष्टांत अभिव्यक्ति

4.

क. – उनके प्रति आदर भावना (1+1)=2

– उनके योगदान को याद करना (1+1)=2

ख. – युवती को, क्योंकि सुबह हो चुकी है। (1+1)=2

ग. कुम्हार जिस प्रकार घड़ा बनाने में सहारा भी देता है और थपकी भी, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य का व्यक्तित्व संवारने में सहारा भी दता है और डाँट-डपट भी करता है। (1+1)=2

घ. – सूरज, पवन, पंछी से – ये प्रात:काल होने के और गति-प्रगति के सूचक हैं। (1+1)=2

5. पेड़ों, पहाड़ों, नदियों को मनुष्य द्वारा नष्ट किया जाना और हवा प्रदूषित करना,

उपाय- पेड़ों की रक्षा, पहाड़ों को बचाना, नदियों की रक्षा करना प्रद्षण में कमी, पौधारोपण, जल स्रोतों की खोज।

समग्र के आधार पर) 3

अथवा

– आजादी कर्म या श्रम की विरोधी नहीं

– कर्म करने वालों का अधिकार है- सुख भोगना

– जो श्रम नहीं करते वे आजादी के अधिकारी नहीं

– आजादी का अर्थ उच्छृंखला या स्वार्थ नहों बल्कि कर्त्तव्यपालन (समग्र के आधार पर)

6.

	उत्तर	अंक
1)	(ख)	1
2)	(घ)	1
3)	(ख)	1
4)	(क)	1
5)	(ग)	1
6)	(ख)	1

7.

(1) मुख पृष्ठ पर ऊपर अखबार की पहचान के लिए दिया जाने वाला उसका नाम 1

(2) प्रिय/पूजनीय/आदरणीय/मेरे प्यारे ..... कोई दो 1/2+1/2=1

(3) वह परोपकारी राजकुमार को असहाय अवस्था में नहीं छोड़ना चाहती। 1

(4) एलर्जी 1

(5) जर्मनी 1

(6) सुराही पर लेट जाना 1

(7) साइकिल को प्राथमिकता पर साफ न करने के कारण 1

8. (क) नाखून क्यों बढ़ते हैं, हजारीप्रसाद द्विवेदी

(ख) मनुष्य के सुख के कारणों की खोज करते हुए लेखक दो तरह के दृष्टिकोणों की पहचान करता है– मशीनें लगाकर उत्पादन बढ़ाना यानी बाहरी ताकत बढ़ाना और प्रेम, जो बडो चीज है, क्योंकि वह हमारे मन में रहता है।

महात्मा गांधी अहिंसा के समर्थक थे, पशुता के विरोधी थे। उनकी हत्या की गई यानी पाशविक प्रवृत्ति ही हावी हुई। 2

(ग) उपाय- असमानता, उपभोक्तावाद और अपरिचय आदि को दूर करके– (समग्र के आधार पर) 2

अथवा

(क) शतरंज के खिलाड़ी, प्रेमचंद 1/2 +1/2

(ख) कथा कहने की शैली, विपरीतार्थक और समान अर्थ वाले शब्द-युग्मों का प्रभावी उपयोग, तत्सम शब्दावली का प्राधान्य, कम शब्दों में व्यापक परिवेश का चित्रण। (समग्र के आधार पर) 2

(ग) अधिक-से-अधिक सुविधाओं को प्राप्त करने की होड़, संयम एवं संतोष का अभाव, असमानता, बेरोज़गारी, राजनीतिक दृष्टिकोण में जनहित की चिंता नहीं, अपरिचय आदि। (समग्र के आधार पर) 2

9. क. किसी वस्तु का माफ़िक न आना 1

छींकें आना, आँख-नाक से पानी बहना, कोई और परेशानी होना। (1+1)=2

ख. नगर का दूर से ही सुंदर दिखाई पड़ना; हाकिम, कर्मचारी, महाजन, व्यापारी, एडिटर, साहबों, पुलिसवालों का उल्लेख करते हुए व्यवस्था पर व्यंग्य मानो राजा विदेश में रहते हैं कहानी के माध्यम से अव्यवस्था पर व्यंग्य। (समग्र के आधार पर) कोई दो उदाहरण देते हुए उल्लेख। (1+1)=2

ग. प्राचीन काल के नाखून हथियार के रूप में प्रयुक्त होते थे, आज वे पशुता की निशानी है। (1+1)=2

घ. किसी कथन/छपी सामग्री के मूलभाव को संक्षेप में कहना

– मूलभाव का चयन 1/2+1/2

– संबंधित बिंदुओं का चयन (1+1)=2

ङ – घर में खेलना बेगम को पसंद नहीं था, नवाब दबाए तलबी से बचने के कारण, (1+1)=2
गोमती के किनारे एकांत था।

10.

क. कल्पना चावला के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

– दृढ़ इच्छाशक्ति (1+1+1)=3
– आदम्य साहस और आत्मविश्वास

– कर्त्तव्यनिष्ठा

ख. समाचार चयन की 3 सावधानियाँ (1+1+1)=3

– संवाददाता अपने विवेक के आधार पर

– प्रमुख संवाददाता द्वारा छँटनी

– संपादक के परामर्श से निर्णय

ग. – पहले आत्मसीमित, संसार के दुख-दद से अपरिचित

– आत्मविस्तार

– दूसरों के दुख-दर्द से परिचय

– कारण: सुखी राजकुमार का सपंर्क 3

घ. – दिखावा

– उपभोक्तावादी

– वर्गभेद की भावना (1+1+1)=3

11. (1) शहर से गाँव आए 'पाहुन' से 1

(2) हवा का चलना/पाहुन को देखने की उत्सुकता 1

(3) मानवीकरण 1

(4) नाचती-गाती बयार 1

(5) पेड़ 1

12. (1) गाँवों में बुनियादी सुविधाओं का अभाव 1

(2) संसाधनों, सुविधाओं, उपलब्धियों का इस्तेमाल गाँव और शहर दोनों में समान हो। 1

(3) गणतंत्र में 'गण' अर्थात आम आदमी महत्त्वपूर्ण है किंतु गाँव के आम आदमी को कोई नहीं पूछता, वे गणतंत्र की सुविधाओं से दूर हैं। 1

(4) जन्मस्थान, वह स्थान जहाँ उसके पुरखे/पूर्वज जन्मे और रहे। 1

(5) गाँव और शहर/हमारे गाँव/कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक। 1

13. (1) जन्म+उत्सव, स्व+अधीन 1/2+1/2=1

(2) देश के लिए भक्ति- तत्पुरुष

अथवा

रात और दिन - द्वंद्व 1/2+1/2=1

(3) अनुभव, अनुकरण (कोई दो शब्द) 1/2+1/2=1

(4) गोरों की वह फौज लखनऊ में अधिकार जमाने आई थी। 1

(5) मिश्रवाक्य 1

(6) अरे, तुम इतने बड़े हो गए! 1/2+1/2=1

(7) मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करने वाले वाक्य 1

(8) दुर्जन किसी का भला नहीं करते। 1

(9) मदन, गोपाल और गीता जा रहे हैं। 1

(10) सामाजिक, ऐतिहासिक, नैतिक, धार्मिक आदि जैसे किन्हीं दो का उल्लेख 1/2+1/2=1

14. सार लेखन

मूल-बिंदुओं का उल्लेख 2

एक तिहाई शब्दों में सार 2

भाषा-शुद्धता 1

15. पत्र लेखन

- पत्र की औपाचारिकताएं 2

- प्रश्नानुसार विषयवस्तु 2

- प्रस्तुति और भाषा 1

16. निबंध लेखन

- प्रारंभ/भूमिका 2

- विषयवस्तु 4

- प्रस्तुति 2

- भाषा-कौशल 2

अभ्यास हेतु प्रश्न-पत्र - 2

HINDI

(हिन्दी)

(201)

समय: 3 घंटे पूर्णांक: 100

निर्देश :

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

2. प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : 1 x 5 = 5

(1) कविता में मुख्य रूप से किसके सौंदर्य का वर्णन है?

(क) प्रेयसी के

(ख) पक्षी के

(ग) प्रकृति के

(घ) पनघट के

(2) जो भाग्य के भरोसे रहता है उसे क्या कहते हैं?

(क) भाग्यहीन

(ख) भाग्यवादी

(ग) भाग्यवान

(घ) भाग्यशाली

(3) कवि सफलता से अधिक महत्व किसे देता है?

(क) बाधाओं को

(ख) प्रयत्नों को

(ग) असफलता को

(घ) प्रसिद्धि को

(4) अच्छा गुरु-

(क) स्वभाव को निर्मल बनाता है

(ख) घर में धन बढ़वाता है

(ग) रास्ते में फूल बोता है

(घ) कमियों को दूर करता है

(5) कविता में 'क्षिप्र' किसे बताया गया है ?

(क) जो घबरा कर भागता है

(ख) जो तेज़ रफ़्तार से चलता है

(ग) जो अवसर को नहीं चूकता

(घ) जो क्षण भर को सजग रहता ह

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिए। 1 x6 = 6

(क) हृदयहीन पत्थर किन लोगों का प्रतीक है?

(ख) कविता के हर पद के अंत में कवि 'उनको प्रणाम' क्यों कहता है?

(ग) 'इसे जगाओ' कविता में कवि सोए हुए को जगाने का अनुरोध क्यों करता है ?

(घ) 'अब दादुर बक्ता भए' से कवि का क्या आशय है?

(ड़) दर्जी के अनुसार आज़ादी को भोगने का अधिकार किसे होना चाहिए?

(च) आह्वान कविता में एकता को गले का हार किस अर्थ में कहा है?

3. निम्नलिखित काव्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके कवि के नाम का उल्लेख करते हुए काव्यांश का काव्य- सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । 5

ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदै सोइ।।

अथवा

बीती विभावरी जाग री।
अंबर-पनघट में डुबो रही
तारा-घट ऊषा-नागरी।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए : 2x3=6

(क) क्या आज़ादी का संबंध कर्म से है? कैसे?

(ख) 'पाठ पौरुष का पढ़ो' कथन से कवि का क्या आशय है?

(ग) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता में मानवीकरण किस प्रकार किया गया है- उल्लेख कीजिए।

(घ) 'उनको प्रणाम' शीर्षक की सार्थकता का क्या महत्व है?

5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए: 3

'इसे जगाओ' कविता में क्या कवि यह कहना चाहता है कि आदमी सपने न देखे? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

अथवा

भाग्यवादी किसे कहते हैं? क्या मनुष्य को भाग्य के सहारे ही आगे बढना चाहिए?

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। 1x6=6

1. 'काम यों कि मशीन मात माने' का आशय है-

(क) सभी उपकरण चलाने का

(ख) शीघ्रता से काम कर लेना

(ग) मशीनों को बुरा मानना

(घ) मशीनों से भी तेज़ काम करना

2. फोचर में किसका होना अनिवार्य होता है?

(क) सूचना

(ख) स्रोत की जानकारी

(ग) संपादक के विचार

(घ) फोटो

3. नवाब वाजिद अली शाह के बंदी बनाए जाने की घटना पर लखनऊ वासियों के व्यवहार को लेखक कहता है-

(क) अहिंसा की भावना (ख) कर्तव्यनिष्ठा

(ग) प्रतिकार का धैर्य (घ) कायरता

4. डिप्थीरिया रोग शरीर के किस अंग में होता है?

(क) आँख में (ग) कान में

(ख) नाक में (घ) गले में

5. गौरैया सुखी राजकुमार के सान्निध्य में क्या सीखती है ?

(क) तरस खाना (ख) निस्वार्थ प्रेम

(ग) दया करना (घ) आत्म-विश्लेषण

6. मनुष्य पशु से किस बात में भिन्न है?

(क) आहार

(ख) निद्रा

(ग) संयम

(घ) भय

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15- 20 शब्दों में दीजिए। **1x7=7**

(क) नगर के लोग राजकुमार की प्रतिमा की तारीफ़ क्यों करते थे?

(ख) पशुता से क्या आशय है?

(ग) 'देह उनकी कोई पैंतालीस बसंत देखी' के माध्यम से लेखक क्या बताना चाहता है?

(घ) संपादकीय किस पर आधारित होता है?

(ङ) बचेंद्री का पर्वतारोही बनने का संकल्प किस बात से मज़बूत हुआ?

(च) सहजात वत्तियाँ क्या होती हैं?

(छ) टीकों के माध्यम से शरीर में क्या पहुँचाए जाते हैं?

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1+2+2=5

दिन भर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था। पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जाग कर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

(1) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।

(2) गद्यांश का मूलभाव स्पष्ट करके लिखिए।

(3) लेखिका की पशु पक्षियों से गहरी करूणा व समानुभूति थी। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

इधर देश की राजनीतिक दशा भयंकर होती जा रही थी। कम्पनी की फ़ौजें लखनऊ की तरफ बढ़ी चली आती थीं। शहर में हलचल मची हुई थी। लोग बाल-बच्चों को लेकर देहातों में भाग रहे थे। पर, हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी ज़रा भी फिक्र न थी। वे घर से आते, तो गलियों में होकर। डर था कि कहीं किसी बादशाही मुलाजिम की निगाह न पड़ जाय, जो बेकार में पकड़े जाए!। हज़ारों रुपये सालाना की जागीर मुफ्त ही हजम करना चाहते थे।

(क) यह गद्यांश किस पाठ से है? इसके लेखक का नाम लिखिए ।

(ख) लखनऊ शहर में इस अफ़रा तफ़री के माहौल का क्या कारण था?

(ग) 'पर, हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी ज़रा भी फिक्र न थी।' इस पंक्ति में कौन से दो खिलाड़ियों का वर्णन है व उन्हें किस बात का डर है?

9 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 20-20 शब्दों में लिखिए : 2x4 =8

(क) जब बहादुर को अपने घर की याद आती थी तो वह क्या करता था ?

(ख) विज्ञापन के आवश्यक गुण क्या हैं?

(ग) मदर मार्गरेट का जादू किसे कहा गया है?

(घ) निबंध के प्रमुख अंग कौन-कौन से है?

(ड़) सार लेखन से आप क्या समझते है?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए : 3x3=9

(क) 'टीके' लगवाना क्यों ज़रूरी है ? ऐसे चार रोगों के नाम लिखिए, जिनके टीके उपलब्ध हैं।

(ख) 'अंधेर नगरी' नाटक में आपको कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?

(ग) मिरजा और मीर के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

(घ) गिल्लू की कौन-सी बात आपको अच्छी लगी और क्यों?

11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1x5=5

फूलों से नित हँसना सीखो, भौरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित, सीखो शीश झुकाना।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो, सबको गले लगाना।
दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो जीवों की सच्ची सेवा करना।
जलधारा से सीखो आगे, जीवन-पथ पर बढ़ना।

और धुएँ से सीखो हरदम, ऊँचे ही पर चढ़ना।
सत्पुरुषों के जीवन से सीखो चरित्र निज गढ़ना।
अपने गुरु से सीखो बच्चो, उनम विद्या पढ़ना।

1. वृक्ष की झुकी हुई डालियाँ हमें क्या सिखाती हैं?
2. दीपक किसका प्रतीक है?
3. अंधेरा किसका प्रतीक है?

4. वृक्ष की झुकी हुई डालियाँ, हमें क्या संदेश देती हैं?
5. जलधार हमें क्या संदेश देती है?

12. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1x5=5

भारत जैसा सुंदर और महान देश दूसरा कौन-सा है, जिसके उत्तर में हिमालय जैसा विश्व प्रसिद्ध विशाल पर्वत है। इस पर्वत को हम देवताओं का स्वर्ग कहें, ऋषियों का तपोवन कहें, प्राकृतिक सुषमा का भंडार कहें, पवित्र निर्मल जलाशयों का आगार कहें, हिम का मुकुट कहें, उनर का प्रहरी कहें या संसार का सौंदर्य कहें या जो कुछ भी कहें, वह पूर्ण रूप से सत्य होगा। इस पुण्यभूमि का भारत के इतिहास से गहरा संबंध है। भूगोल का यह मानदंड है। मंदिरों का यह क्षेत्र है। तीर्थ यात्रियों के लिए यह धर्म भूमि है और सैलानियों के लिए स्वर्ग।

विशाल हिमालय पर्वत की श्रेणिया कश्मीर से असम तक फैली हुई हैं। इन श्रेणियों में अमरनाथ, बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरो, यमुनोत्तरो आदि अनेक तीर्थ स्थान हैं, जिनके दर्शन के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों के निवासी लालायित रहते हैं। इसी पर्वत श्रेणी में कश्मीर है, जो पृथ्वी का स्वर्ग कहलाता है।

प्रश्न

1. हिमालय को प्राकृतिक सुषमा का भंडार क्यों माना गया है?
2. कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग क्यों कहा गया है?
3. भारत की सुंदरता और महानता का श्रेय हिमालय को क्यों दिया गया है।
4. इस अनुच्छेद में वर्णित चार तीर्थ स्थानों के नाम लिखो।
5. इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

13. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1 x10=10

1) संधि-विच्छेद कीजिए : विद्यालय , प्रत्येक

2) विगह -पूर्वक समास का नाम लिखिए : रोगमुक्त अथवा पाप-पुण्य

3) 'प्रति' उपसर्ग से दो शब्द बनाइए।।

4) अधिक वर्षा हुई और किसान निराश हो गए। (सरल काम में बदलिए)

5) यद्यपि मोहन ने बहुत मेहनत की, तथापि वह उत्तीर्ण नहीं हो सका। (रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए)

6) अरे तुम कहां चले गए (यथास्थान उपयुक्त विराम चिह लगाइए)

7) आँखें फेर लेना, नाक में दम करना (किसी एक मुहावरे का वाक्य-प्रयोग करें)

8) मेरे को खाना दे दो। (वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए)

9) साहित्य और जीवन का घोर संबंध है। (वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए)

10) 'ईय' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।

14 निम्नलिखित अंश का सार-लेखन एक तिहाई शब्दों में कीजिए : 5

सभ्यता और संस्कृति के विकास में धर्म और विज्ञान का हाथ रहता है। धर्म ने मनुष्य के मन में सुधार किया है और विज्ञान ने संस्कृति को जीता है। धर्म हमारे मन को बल देता है और सत्य, अहिंसा, परोपकार, संयम आदि सभी अच्छे गुण धर्म के कारण हैं। धर्म हृदय में पैदा होता है। विज्ञान प्रकृति को जीतता है जबकि धर्म सत्य, अहिंसा, परोपकार आदि से मन को जीतता है। इसीलिए यदि धर्म और विज्ञान मिलकर काम करें, तो वह दिन दूर नहीं, जब हम केवल राज्यों और देशों से अपने को जोड़ने की संकुचित प्रवृत्ति को छोड़ देंगे और समस्त संसार को अपना समझने लगेंगे।

15. नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें आपके गाँव / कॉलोनी में सफ़ाई की समुचित व्यवस्था करने का अनुरोध हो।

अथवा

अपने मित्र को पत्र लिखकर **नियमित रूप से योगासन अभ्यास के लाभों** के विषय में बताइए। 5

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए: 10

1. भ्रष्टाचार की समस्या : कारण और समाधान
2. यदि मैं कृषि मंत्री होता
3. बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ
4. खेलों का जीवन में महत्व

अभ्यास हेतु प्रश्न-पत्र ख 3

HINDI

(हिन्दी)

(201)

समय: 3 घंटे **पूर्णांक: 100**

निर्देश :

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

2. प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : 1 x 5 = 5

(1) 'बीती विभावरी जाग री' कविता की भाषा है :

(क) ब्रज
(ख) राजस्थानी
(ग) अवधी
(घ) खड़ी बोली

(2) भाग्यवाद' मनुष्य को कैसा बना देता है? आह्वान कविता के आधार पर बताइए।

(क) आलसी
(ख) अकर्मण्य
(ग) पराश्रित
(घ) अवसरवादी

(3) उनको प्रणाम! कविता के अनुसार सपने देखना कब सार्थक होता है ?

(क) जब उनके लिए प्रयास किए जाएँ
(ख) जब उनका अनुकरण किया जा सके
(ग) जब उनका प्रचार किया जा सके
(घ) जब वे सच हो सकें

(4) कबीरदास के अनुसार ऊँचे कुल में जन्म लेने पर भी व्यक्ति निंदा का पात्र होता है, क्योंकि वह:

(क) अच्छे कर्म नहीं करता

(ख) मदिरापान करता है

(ग) साधुओं की संगति करता है

(घ) धन को इकट्ठा नहीं करता

(5) कवि ने सही वक्त पर जगाने की बात क्यों कही है

(क) दिन का समय गुज़र जाएगा

(ख) फिर उसके जागने का फायदा नहीं होगा

(ग) वह दुनिया के मुकाबले में पिछड़ जाएगा

(घ) वह आलसी बन जाएगा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिए। **1 x 6 = 6**

(क) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में सरसों को सयानी क्यों कहा है ?

(ख) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के अनुसार सन्नाटे में नदियाँ क्या करती हैं ?

(ग) 'इसे जगाओ' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है ?

(घ) 'लो यह लतिका भी भर लाई मधु-मुकुल नवल रस गागरीष्ठ इस पंक्ति का क्या भाव है?

(ङ) 'क्षिप्र तो वह है जो सही क्षण में सजग हैष्ठ कथन का क्या आशय है?

(च) आह्वान कविता में कवि ने कर्म को श्रेष्ठ क्यों माना है?

3. निम्नलिखित काव्यांश किस पाठ से लिया गया है इसके कवि के नाम का उल्लेख करते हुए काव्यांश का काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । 5

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।

जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत॥

अथवा

देख आया चंद्रगहना
देखता हूँ दृश्य अब में
मेंड़ पर इस खेत की बैठा अकेला ।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का
सज कर खड़ा है ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए : 2x3=6

(क) कविता में शागिर्द ने सुई में धागा पिरोने का निर्णय क्यों लिया?

(ख) कबीर ने गुरु-शिष्य के संबंध का आदर्श रूप किसे बताया है और क्यों?

(ग) बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता हमें क्या सिखाती है और कैसे ?

(घ) उनको प्रणाम कविता में असफल लोगों के प्रति अभिव्यक्त दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण कीजिए।

5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए : 3

'बीतो विभावरी जाग री' कविता के काव्य-सौंदर्य व भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। 1 x6=6

1. 'मदर टेरेसा' के जीवन का उद्देश्य था :

(क) ईसाई धर्म का प्रचार करना।

(ख) महिलाओं को जागरूक बनाना।

(ग) भारत की संस्कृति को समझना।

(घ) रोगियों और जरूरतमंदों की सेवा करना।

2. फ़ोटो के नीचे दी गई सूचना को अखबार की भाषा में कहते हैं :

(क) बाइलाइन

(ख) कैप्शन

(ग) इन्ट्रो

(घ) ब्यौरा

3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में वाजिदअली शाह के बंदी बनाए जाने का मिरज़ा और मीर को कोई मलाल नहीं था, क्योंकि :

(क) शतरंज का बादशाह अधिक महत्त्वपूर्ण था ।

(ख) वे अंग्रेज़ों के साथी थे ।

(ग) वे उससे ईर्ष्या करते थे ।

(घ) उन्हें अंग्रेज़ी फौज से डर लगता था ।

4. 'अपना-पराया' पाठ के आधार पर बताइए कि रक्त की श्वेत कणिकाएँ :

(क) रोगाणुओं का भोजन बन जाती हैं।

(ख) निष्क्रिय रहती हैं ।

(ग) रोगाणुओं से लड़ती हैं ।

(घ) रोगाणुओं को ऊतक तरल तक पहुँचाती हैं ।

5. 'सुखी राजकुमार' की आँखों में लगा नीलम किस देश का था ?

(क) भारत
(ख) यूनान
(ग) रूस
(घ) मिस्र

6. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' पाठ में लेखक का मरे हुए बच्चे को गोद में दबाए रखने वाली बंदरिया का उदाहरण देने का क्या उद्देश्य है :

(क) रूढ़ियों का मोह त्यागो

(ख) नए को शंका की दृष्टि से देखो

(ग) मोह ममता को बनाए रखो

(घ) परंपराओं का पालन करो

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15- 20 शब्दों में दीजिए। 1 x7=7

(क) सुखी राजकुमार के सानिध्य में गौरैया क्या सोखती है?

(ख) लेखिका ने कौए के लिए किन दो विशेषणों का प्रयोग किया है?

(ग) राबर्ट नर्सिंग होम में' पाठ में लेखक ने मानव सेवा को समर्पित किन दो महिलाओं का उल्लेख किया?

(घ) **फ़ीचर** किसे कहते हैं? **फ़ीचर** लिखने का क्या उद्देश्य होता है?

(ङ) कल्पना चावला की मृत्यु के पश्चात् तत्कालीन प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने क्या घोषणा की थी ?

(च) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं पाठ के आधार पर बताइए कि नाखून कुछ लाख वर्ष पूर्व मनुष्य के लिए आवश्यक अंग क्यों थे ।

(छ) 'अपना-पराया' पाठ के आधार पर बताइए कि डिफ़्थीरिया रोग शरीर के किस अंग में होता है ?

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
1+2+2=5

धीरे-धीरे वह घर के सारे काम करने लगा। सवेरे ही उठकर वह बाहर नीम के पेड़ से दातून तोड़ लाता था। वह हाथ का सहारा लिए बिना कुछ दूर तक तने पर दौड़ते हुए चढ़ जाता। मिनट भर में वह पेड़ की पुलई पर नज़र आता। निर्मला छाती पीटकर कहती थी-अरे, रीछ-बंदर की जात, कहीं गिर गया तो बड़ा बुरा होगा। वह घर की सफाई करता, कमरों में पोंछा लगाता, अँगीठी जलाता, चाय बनाता और पिलाता। दोपहर में कपड़े धोता और बर्तन मलता।

वह रसोई बनवाने की भी जिद करता पर निर्मला स्वयं सब्जी और रोटी बनाती। निर्मला की उसको बहुत फिक्र रहती थी। उसकी उन दिनों तबीयत ठीक नहीं रहती थी, इसलिए वह कुछ दवा ले रही थी। बहादुर उसको कोई काम करते देखकर कहता था- माताजी, मेहनत न करो, तकलीफ़ बढ़ जाएगा। वह, कोई भी काम करता होता, समय होने पर हाथ धोकर भालू की तरह दौड़ता हुआ कमरे में जाता और दवाई का डिब्बा निर्मला के सामने लाकर रख देता।

(1) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।

(2) गद्यांश का मूलभाव स्पष्ट करके लिखिए।

(3) बहादुर कौन था? उसकी दो विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

बचेंद्री को बचपन में रोज़ 5 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। बाद में पर्वतारोहण प्रशिक्षण के दौरान उनका यह कठोर परिश्रम बहुत काम आया। आठवीं पास करने के बाद पिता ने उनकी पढ़ाई का खर्च उठाने से मना कर दिया। बचेंद्री ने इसका भी रास्ता तलाश किया। उन्होंने सिलाई का काम सीखा और सिलाई करके पढ़ाई का खर्च जुटाने लगीं। इस तरह उन्होंने संस्कृत से एम.ए. तथा बी.एड. की उपाधि प्राप्त की। पढ़ाई के साथ-साथ बचेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को हमेशा अपने सामने रखा।

(क) यह गद्यांश किस पाठ से है? इसकी शैली क्या है?

(ख) आठवीं के बाद बचेंद्री की पढ़ाई क्यों रोक दी गई?

(ग) अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए बचेंद्री ने क्या किया?

9 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 20-20 शब्दों में लिखिए:2x4 =8

(क) 'अंधेर नगरी' नाटक में चूरन वाला अपना चूर्ण बेचते हुए किन लोगों पर व्यंग्य करता है? किन्ही चार के नाम लिखिए।

(ख) निबंध क्या है और वे कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ग) शतरंज के खिलाड़ी कहानी का उद्देश्य लिखिए ।

(घ) रॉबर्ट नर्सिंग होम में जाना लेखक के लिए यादगार बन गया । कैसे?

(ङ) कल्पना चावला की मृत्यु कब और कैसे हुई ?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए :

3 x3=9

(क) अंधेर नगरी में गोबरधन दास के चरित्र की तीन विशेषताएँ लिखिए।

(ख) अखबार के विभिन्न अंगों के नामों का उल्लेख कीजिए।

(ग) कहानी में माँ द्वारा पीटे जाने पर बहादुर घर से भाग जाता है । किसी भी सूरत में उसका यह निर्णय आदर्श नहीं माना जा सकता । अत: आप कोई सकारात्मक रास्ता सुझाइए जिसका अनुकरण नई पीढ़ी कर सके ।

(घ) 'सुखी राजकुमार' कहानी में राजकुमार ने कहा कि "मुझे मरने के उपरान्त इतने ऊँचे पर स्थापित कर दिया है कि मैं संसार का दुःख-दर्द देख सकता हूँ। स्पष्ट करते हुए बताइए कि आप ऊँचे पदों पर स्थापित हो समाज को क्या सुख देंगे।

11 **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**1 x5=5

शोभित है सर्वोच्च मुकुट में,

जिनके दिव्य देश का मस्तक,

गूंज रही हैं सकल दिशाएँ,

जिनके जय गीतों में अब तक।

जिनकी महिमा का है अविरल

साक्षी सत्य-रूप हिम गिरिवर ।

उतरा करते थे विमान-दल,

जिसके विस्तृत-वक्षस्थल पर।

(क) इस काव्यांश में किसका गुणगान किया गया है ?

(ख) देश के मस्तक पर क्या शोभित है ?

(ग) महिमा के साक्षी कौन-कौन हैं और क्यों ?

(घ) विमान दल कहाँ उतरा करते थे ?

(ङ) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

12. **निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :** 1x5=5

जनसंख्या की वृद्धि भारत के लिए आज एक विकट समस्या बन गई है। यह समाज की सुख-संपन्नता के लिए एक भयंकर चुनौती है। महानगरों में कीड़े-मकोड़ों की भाँति अस्वास्थ्यकर घोंसलों में आदमी भरा पड़ा है- न धूप, न हवा, न पानी, न दवा, पीले-दुर्बल, निराश चेहरे। यह संकट अनायास नहीं आया है। संतान को ईश्वरीय विधान और वरदान माननेवाला भारतीय समाज ही इस रक्तबीजी संस्कृति के लिए जिम्मेदार है। चाहे खिलाने को

रोटी और पहनाने को वस्त्र न हों, शिक्षा को शुल्क और रहने को छप्पर न हो, लेकिन अधभूखे, अधनंगे बच्चों की कतार खड़ी करना हर भारतीय अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष एक ऑस्टेलिया यहाँ की जनसंख्या में जुड़ता चला जा रहा है। यदि इस जनवृद्धि पर नियंत्रण न हो सका तो हमारे सारे प्रयोजन और आयोजन व्यर्थ हो जाएँगे। धरती पर पैर रखने की जगह नहीं बचेगी। भारत की जनसंख्या इसी गति से बढ़कर सन् 2000 में एक अरब तक जा पहुँची।

(क) जनसंख्या वृद्धि भारत के विकास के लिए चुनौती क्यों है?
(ख) समाज की सुख संपन्नता जनसंख्या पर कैसे आश्रित है?
(ग) भारतीय जनसंख्या की तुलना ऑस्टेलिया से क्यों की गई?
(घ) यदि जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण न हो सका तो इसका क्या परिणाम होगा?
(।) इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

13. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:** 1x10=10

1) किसी एक समस्त पद का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-
विद्यालय अथवा नवग्रह

2) संधि-विच्छेद कीजिए-
सर्वोदय, हिमालय

3) 'वि' तथा 'अभि' उपसर्ग से एक एक शब्द बनाइए।

4) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय छाटकर लिखिए:
भारतीय , चायवाला

5) जो हितकर होता है भले लोग उसे ग्रहण करते हैं (सरल वाक्य में बदलिए।)

6) वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए:
क) जो पढ़ा-लिखा ना हो।
ख) जो बहुत कम जानता हो।

7) किसी एक मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए:
क) दाँतो तले उँगली दबाना
ख) दिन- रात एक करना

8) किसी एक विस्मयादिबोधक शब्द का प्रयोग करते हुए एक वाक्य लिखिए:
1. अरे ! अथवा 2 उफ !

9) किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए:
पानी, कमल

10) वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए:
मेरे को कल परीक्षा देने जाना है।

14 निम्नलिखित अंश का सार-लेखन एक तिहाई शब्दों में कीजिए : 5

कहा जाता है कि मानव का आरंभिक जीवन अधिक लचीला आर प्रशिक्षण के लिए विशेषकर अनुकूल होता है। यदि माता-पिता, अध्यापक और सरकार- तीनों मिलकर प्रयास करें, तो वे बालक को जैसा चाहें, वैसा वातावरण देकर उसकी जीवन-दिशा का निर्धारण कर सकते हैं। जीवन का यह समय मिट्टी के उस कच्चे घड़े के समान होता है, जिसके विकारों को मनचाहे ढंग से ठीक किया जा सकता है। लेकिन जिस तरह पके हुए घड़ों में पाए जाने वाले दोषों में सुधार करना असंभव है, उसी तरह यौवन की दहलीज़ को पार कर बीस-पच्चीस वर्ष के युवक के अंदर आमूल परिवर्तन लाना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। कच्चो मिट्टी किसी भी साँचे में ढालकर किसी भी नए रूप में बदली जा सकती है, लेकिन जब वह एक बार, एक प्रकार की बन गयी, तब उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास बहुत ही कम सफल हो पाता है। किसी लड़के या लड़की के व्यक्तित्व के निर्माण का मुख्य उत्तरदायित्व हमारे समाज, हमारी सरकार और स्वयं माता-पिता पर है तथा बहुत कुछ स्वयं लड़के या लड़की पर भी। कोई भी व्यक्ति अपने ध्येय में तभी सफल हो सकता है, जब वह अपने जीवन के आरंभिक दिनों में भी वैसा करने का प्रयास करे। इस दष्टि से विद्याध्ययन का समय ही मानव-जीवन के लिए विशेष महत्त्व रखता है। हम सभी का और स्वयं विद्यार्थियों का भी यही कर्त्तव्य है कि सभी इस तथ्य को हमेशा अपने सामने रखें।

15. परिवहन निगम के अधिकारी को पत्र लिखिए जिसमें आपके गांव / कॉलोनी तक बस चलाने का अनुरोध हो।

अथवा

अपने पिता को पत्र लिखकर सर्व शिक्षा अभियान में अपनी भागीदारी के विषय में बताइए। 5

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए: 10

1 स्वच्छता अभियान की आवश्यकता
2 हमारी सामाजिक समस्याएं
3 कंप्यूटर से लाभ हानि
4 **कोविड -19 महामारी से सुरक्षा और बचाव**

अभ्यास हेतु प्रश्न-पत्र - 4

HINDI

(हिन्दी)

(201)

समय: 3 घंटे पूर्णांक: 100

निर्देश :

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

2. प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : 1 x 5 = 5

(1) रहीम के अनुसार खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति और मदपान के अतिरिक्त और कौन-सी चीज़ छिपाए नहीं छिपती?

(क) कत्था

(ख) ऊँचा कुल

(ग) ख़ुशबू

(घ) चोरी

(2) जो लोग कभी पीछे थे वे कैसे आगे बढ़ गए?

(क) भाग्य के सहारे

(ख) ईश्वर की कृपा से

(ग) साँचे में ढलकर

(घ) कठिन परिश्रम करके

(3) 'नन्हें-से बछड़े द्वारा उछल-कूद मचाना' से कवि का क्या आशय है?

(क) भयभीत होकर जीना

(ख) उन्मुक्त और उच्छृंखल होना

(ग) इच्छित को प्राप्त करना

(ग) दिशाज्ञान प्राप्त करना

(4) ' फाग गाता मास फागुन आ गया है' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है।

(क) यमक

(ख) उपमा

(ग) मानवीकरण

(घ) रूपक

(5) पर्यावरण का अर्थ है-

(क) मनुष्य के लिए अनिवार्य आस-पास की प्राकृतिक स्थिति

(ख) प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे- भूकंप, बाढ़, सूखा आदि

(ग) वृक्षों, नदियों, पहाड़ों को मनुष्य के रूप में चित्रित करना

(घ) प्रकृति को सूक्ष्मता के साथ देखने की क्षमता

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिए। **1 x 6 = 6**

(क) चारु चंद्र की चंचल किरणें में कौन-सा अलंकार है?

(ख) कवि 'उनको प्रणाम' कविता में किन लोगों के प्रति आदर का भाव प्रकट करता है?

(ग) 'करत-करत अभ्यास तें...' दोहे में मूर्ख के लिए 'जड़मति' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है?

(घ) कवि देशवासियों का आह्वान कर उनसे क्या आशा करता है?

(ङ) आपकी दृष्टि में आज़ादी का सही अधिकारी कौन है?

(च) मानवीकरण से क्या आशय है?

3. निम्नलिखित काव्यांश किस पाठ से लिया गया है इसके कवि के नाम का उल्लेख करते हुए काव्यांश का काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । **5**

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ॥

अथवा

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए,
तू अब तक सोई है आली !
आँखों में भरे विहाग री !

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए :

2 x3=6

(क) 'बलिदानी को जीवन' का आशय स्पष्ट कीजिए?

(ख) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है?

(ग) 'बेवक्त जागने' का परिणाम क्या होता है?

(घ) 'खून की उल्टियाँ करते... अपने घर के पिछवाड़े' पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है?

5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए : 3

कविता के आधार पर चने के सौंदर्य का चित्रण कीजिए और बताइए कि उसे किन-किन रूपों में दर्शाया गया है?

अथवा

कवि ने किस-किस से सोए हुए आदमी को जगाने का आग्रह किया है? और क्यों?

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। 1 x 6=6

1. असली पढ़ना कहलाता है, सामग्री में दिए गए-
(क) शब्दों को समझना
(ख) अक्षरों को पहचानना
(ग) वाक्यांशों को पढ़ना
(घ) दिए गए विचार को समझना

2. मनुष्यों को नहीं, एक मूर्ति को दूसरों के दुख दिखते हैं- इसमें क्या है?
(क) विडंबना
(ख) मनुष्य का स्वभाव
(ग) चमत्कार
(घ) मनुष्य-विरोधी भाव

3. पाठकों के पत्रों को अख़बार में क्यों शामिल किया जाता है?
(क) प्रचार के लिए

(ख) पाठकों की भागीदारी के लिए
(ग) प्रतियोगिता के लिए

(घ) समाचार देने के लिए

4. एवरेस्ट अभियान-दल में बचेंद्री के साथ निम्न में से कौन था?
(क) तेनज़िंग

(ख) हंसा देई

(ग) जुंके ताबी

(घ) अंग दोरजी

5. शरीर में ददोरे पड़ जाने पर आप -
(क) अधिक मात्रा में पानी का सेवन करेंगे

(ख) प्रोटीन को बढ़ाने की कोशिश करेंगे

(ग) एलर्जी के लिए डॉक्टर से सपंर्क करेंगे

(घ) नष्ट होने का इंतजार करेंगे

6. कुछ लाख वर्ष पूर्व नाखून मनुष्य के लिए क्या थे?
(क) उपयोगी हथियार
(ख) सौंदर्य के प्रतीक
(ग) मनुष्यता की पहचान
(घ) अनावश्यक अंग

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15- 20 शब्दों में दीजिए। 1 x 7=7

(क) महंत ने वह नगर छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?
(ख) एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव किसे प्राप्त है?
(ग) किशोर ने बहादुर को क्यों पीटा?
(घ) कविता पढ़ने के लिए किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
(ड़) औपचारिक पत्र किसे कहते है?
(च) नसों की दीवार किससे बनी होती है?
(छ) महात्मा गांधी ने किस बात पर अधिक बल दिया?

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।1+2+2=5

अरे, वह सब झूठ है। मैं तो पहले ही जानती थी कि वे लोग बच्चों को कुछ देना नहीं चाहते, इसलिए अपनी गलती और लाज छिपाने के लिए यह प्रपंच रच रहे हैं। उन लोगों को क्या मैं जानती नहीं? कभी उनके रुपए रास्ते में गुम हो जाते हैं... कभी वे गलती से घर ही पर छोड़ आते हैं। मेरे कलेजे में तो जैसे कुछ हौंड़ रहा है। किशोर को भी बड़ा अफ़सोस है। उसने सारा शहर छान मारा, पर बहादुर नहीं मिला। किशोर आकर कहने लगा - अम्माँ, एक बार भी अगर बहादुर आ जाता तो मैं उसको पकड़ लेता और कभी जाने न देता। उससे माफ़ी माँग लेता और कभी नहीं मारता। सच, अब ऐसा नौकर कभी नहीं मिलेगा। कितना आराम दे गया वह। अगर वह कुछ चुराकर ले गया होता, तो संताष हो जाता...

निर्मला आँखों पर आँचल रखकर रोने लगी। मुझे बड़ा क्रोधा आया। मैं चिल्लाना चाहता था, पर भीतर ही भीतर मेरा कलेजा जैसे बैठ रहा हो। मैं वहीं चारपाई पर सिर झुका कर बैठ गया। मुझे एक अजीब-सी लघुता का अनुभव हो रहा था। यदि मैं न मारता, ता शायद वह न जाता।

(1) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखिक का नाम लिखिए ।

(2) गद्यांश का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(3) सबसे अधिक दुख किसके मन में था और क्यों?

अथवा

वात्स्यायन के 'कामसूत्र' से पता चलता है कि आज से दो हज़ार वर्ष पहले का भारतवासी नाखूनों को जम के सँवारता था। उनके काटने की कला काफ़ी मनोरंजक बतायी गयी है। त्रिकोण, वर्तुलाकार, चंद्राकार, दंतुल आदि विविध आकृतियों के नाखून उन दिनों विलासी नागरिकों के न जाने किस काम आया करते थे। उनको सिक्थक (मोम) और अलक्तक (आलता) से यत्नपूर्वक रगड़ कर लाल और चिकना बनाया जाता था। गौड़ देश के लोग उन दिनों बड़े-बड़े नखों को पसंद करते थे और दाक्षिणात्य लोग छोटे नखों को। अपनी-अपनी रुचि है, देश की भी और काल की भी।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए ।

(ख) गद्यांश का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश की भाषा शैली पर टिप्पणी कीजिए।

9 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 20-20 शब्दों में लिखिए :

2 x 4 =8

(क) 'कल उसके लिए विनती करूँगी' द्वारा मदर किसके लिए व क्यों विनती की बात कहती है?

(ख) 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:' का क्या अर्थ है?

(ग) समानुभूति से आप क्या समझते है?

(घ) 'सुखी राजकुमार' कहानी के संवादों की दो विशेषताएँ लिखो?

(ड़) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी की भाषा शैली की दो विशेषताएँ लिखो?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए :

3 x 3=9

(क) अंधेर नगरी के राजा के चरित्र की तीन विशेषताएँ लिखिए।

(ख) अखबार के प्रमुख कार्यों का उल्लेख कीजिए।

(ग) बहादुर के चरित्र की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(घ) रॉबर्ट नर्सिंग होम के डॉक्टर ने कहा, 'मदर तुम हँसी बिखेरती जो हो।' आशय स्पष्ट कीजिए।

11 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढिए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1 x 5=5

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।
दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
गिर पड़ूँगी चू अँगारे पर किसी,
या गिरूँगी मैं कमल के फूल में।

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा गिरी मोती बनी।
लोग यों ही हैं झिझकते-सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु अक्सर छोड़ना घर का उन्हें,
बूँद-सा कुछ और ही देता है कर।

(क) इस काव्यांश में किसके बारे में वर्णन किया गया है ?

(ख) बूँद के मन में क्या पछतावा था?

(ग) बूँद के मन में क्या आशंका थी?

(घ) अंतत: बूँद कहाँ गिरी और क्या बनी?

(ङ) 'बूँद' और 'मुँह' शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

12. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1 x 5=5
लोगों ने धर्म को धोखे की दुकान बना रखा है। वे उसकी आड़ में स्वार्थ सिद्ध करते हैं। बात यह है कि लोग धर्म को छोड़कर संप्रदाय के जाल में फ़ंसे हैं। संप्रदाय बाह्य कृत्यों पर ज़ोर देते हैं। वे चिह्नों को अपनाकर धर्म के सार-तत्त्व को मसल देते हैं। धर्म मनुष्य को आत्म-साक्षात्कार कराता है, उसके हृदय के किवाड़ों को खोलता है, उसकी आत्मा को विशाल, मन को उदार तथा चरित्र को उन्नत बनाता है। संप्रदाय संकीर्णता सिखाते हैं। ये हमें जात-पाँत, रूप-रंग तथा ऊँच-नीच के भेद-भावों से ऊपर नहीं उठने देते।

(क) लोग धर्म की आड़ में क्या करते हैं।
(ख) लोग धर्म को छोड़कर कहाँ फ़ँस जाते है?
(ग) धर्म मनुष्य के लिए क्यों ज़रूरी है?
(घ) संप्रदाय को संकीर्णता सिखाने वाला क्यों बताया गया है?
(ङ) इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

13. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1 x 10=10

1) किसी एक समस्त पद का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए-
विद्याध्ययन अथवा रहन - सहन

2) संधि-विच्छेद कीजिए-

सर्वोदय, महाकाल

3) 'अव' तथा 'परा' उपसर्ग से एक - एक शब्द बनाइए।

4) मेरे यहां पहुंचने पर दुकान बंद हो चुकी थी। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

5) वह मैदान में जाकर खेलने लगा। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

(6) वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए

(क) जन्म के साथ उत्पन्न होने वाला।

(ख) जिसको भय न हो।

7) निम्नलिखित वाक्या में से विशेषण छाँटकार लिखिए :

(क) यह एक सुशील बालक है।

(ख) आलसी व्यक्ति सर्वत्र मिलते हैं।

8) किसी एक मुहावरे का वाक्य प्रयोग कीजिए :

(क) सिर हथेली पर रखना। (ख) रंग उड़ना

9) 'इक' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए।

10) वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए :

अपन को कुछ काम करना है।

14 निम्नलिखित अंशों का सार-लेखन एक तिहाई शब्दों में कीजिए : **5**

हमारे देश में अशिक्षित प्रौढ़ों की संख्या करोड़ों में है। यदि हम किसी प्रकार इनके मानस-मंदिरों में शिक्षा की ज्योति जगा सकें, तो सबसे महान धर्म और सबसे पवित्र कर्त्तव्य का पालन होगा। रेलगाड़ी और बिजली की बत्ती से भी अपरिचित लोगों का होना हमारी प्रगति पर कलंक है। प्रौढ़-शिक्षा योजना इनको प्रबुद्ध नागरिक बनाने की दिशा में क्रियाशील है। इस योजना से गाँवों में एक सीमा तक आत्मनिर्भरता आएगी। हर बात के लिए शहरों की ओर ताकने की प्रवत्ति समाप्त होगी। निरर्थक रूढ़ियों और अंधविश्वासों में फ़ंसे हुए और अपनी गाढ़े पसीने की कमाई को नगरों की भेंट चढ़ाने वाले ये हमारे भाई प्रौढ़ शिक्षा से निश्चित ही सचेत और विवेकी बनेंगे। स्वास्थ्य, सफ़ाई, उन्नति, कृषि तथा आपसी सद्भावना के प्रति प्रौढ़ शिक्षा इनको जागरूक बना सकती है। इससे इनकी मेहनत की कमाई डॉक्टरों की जेबों में जाने से और कचहरियों में लुटने से बचेगी। सबसे बड़ा लाभ तो प्रौढ़ शिक्षा द्वारा यह होगा कि करोड़ों लोग नए ढंग से देखने, सुनने और समझने के साथ-साथ अच्छा आचरण करने में समर्थ होंगे।

15. जनहित में सरकारी पत्र व्यवहार हिंदी में ही किया जाना चाहिए। इस आशय का एक पत्र निदेशक, राजभाषा विभाग, दिल्ली को लिखिए। 5

अथवा

मित्र को पत्र लिखकर आपके शहर में आए भूकंप के भयावह दृश्य का वर्णन कीजिए।

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए 10

(क) दूरदर्शन

(ख) मोबाइल फोन : लाभ, हानियाँ

(ग) समाज की प्रगति में नारियों का योगदान

(घ) परोपकार

अभ्यास हेतु प्रश्न-पत्र 5

HINDI

(हिन्दी)

(201)

समय: 3 घंटे पूर्णांक: 100

निर्देश :

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

2. प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सामने दिए गए हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : 1 x 5 = 5

(1) चंद्र गहना से लौटती बेर कविता में प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है किसके लिए कहा गया है -

(क) सरसों के लिए
(ख) व्यापारिक भूमि के लिए
(ग) ग्रामीण परिवेश के लिए
(घ) अलसी के लिए

(2) बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता के रचयिता का नाम है -

(क) मैथिलीशरण गुप्त
(ख) भवानी प्रसाद मिश्र
(ग) निर्मला पुतुल
(घ) केदारनाथ अग्रवाल

(3) आजादी कविता में किन के बीच संवाद चल रहा है -

(क) डॉक्टर - मरीज
(ख) मालिक- नौकर
(ग) दर्जी - शार्गिद
(घ) भक्त - भगवान

(4) बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता में पेड़ों के हजारों हजार हाथों से हिलने से अभिप्राय है -

(क) रक्षा की गुहार लगाना
(ख) खुशी से झूम उठना
(ग) तूफान से कांपना
(घ) हवा से फिरकना

(5) रहीम के अनुसार मूर्ख के बढ़ चढ़कर बोलने पर विद्वान को क्या करना चाहिए -

(क) स्वयं मौन धारण कर लेना चाहिए
(ख) मूर्ख का विरोध करना चाहिए
(ग) मूर्ख को भय दिखाकर चुप कराना चाहिए
(घ) अपना प्रचार स्वयं करना चाहिए

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिए। 1 x 6 = 6

(क) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' कविता में कवि किसके स्वयंवर की बात कर रहा है ?

(ख) बूढ़ी पृथ्वी का दुख कविता में पेड़ों के हजारों हजार हाथों के हिलने से क्या अभिप्राय है?

(ग) 'कूल कूल कुल सा बोल रहा ' में प्रयुक्त किन्ही दो अलंकारों के नाम लिखिए?

(घ) इसे जगाओ कविता में कवि आदमी को सपने ना देखने की सलाह क्यों देना चाहता है तर्क सहित उत्तर लिखिए ?

(ङ) उनको प्रणाम कविता के मूल भाव को अपने शब्दों में लिखिए।

(च) 'विविध सुनने की एक माला' आह्वान कविता की इस पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है।

3. निम्नलिखित काव्यांश किस पाठ से लिया गया है इसके कवि के नाम का उल्लेख करते हुए काव्यांश का काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । 5

और सरसों की ना पूछो
हो गई सरसों सयानी
हाथ पीले कर लिए हैं
ब्याह मंडप में पधारी ।

अथवा

खैर, खून, खाँसी, खुसी
वैर, प्रीति, मदपान ।
रहिमन दाबे ना दबै
जानत सकल जहान।।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए: 2x3=6

(क) आजादी कवि के लिए शब्द है कह कर कवि क्या संदेश देना चाहता है।

(ख) कबीर के अनुसार हमें अपने स्वभाव को निर्मल बनाने के लिए क्या कदम उठाना चाहिए।

(ग) चंद्र गहना से लौटती बेर कविता के आधार पर बताइए कि 'सरसों हो गई सबसे सयानी' क्यों कहा गया है।

(घ) 'करत करत अभ्यास ते' दोहे में किसका महत्व बताया है और क्यों?

5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग 50 शब्दों में दीजिए : 3

चंद्र गहना से लौटती बेर कविता के आधार पर बताइए कि बगुला समाज के किस वर्ग का प्रतीक है क्या आज के समाज में यह उदाहरण प्रासंगिक है।

अथवा

'आह्वान' कविता में पिछड़े देशों की उपलब्धि की बात कही गई है, आपके विचार से इस प्रगति के कौन कौन से कारण हैं ?

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। 1 x6=6

1.एवरेस्ट अभियान दल में बचेंद्री पाल के साथ निम्न में से कौन था?

(क) तेनजिंग
(ख) हंसा देई
(ग) जुंके ताबी
(घ) अंग दोरजी

2. नाखून क्यों बढ़ते हैं ?पाठ के अनुसार आदमी की पूछ झड़ गई क्योंकि वह-

(क) काम उपयोगी थी
(ख) असुविधाजनक थी
(ग) पशुता की निशानी थी
(घ) अनुपयोगी थी

3. अंधेर नगरी व्यंग्य है:
(क) भारत पर

(ख) अंग्रेज शासकों पर

(ग) साधुओं पर

(घ) गुरुओं पर

4. नाखून क्यों बढ़ते हैं निबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने किस महापुरुष की विचारधारा का उल्लेख किया है?

(क) स्वामी विवेकानंद

(ख) शंकराचार्य

(ग) गुरु नानक

(घ) महात्मा गाँधी

5. कौन- सा तत्व नाटक को अन्य गद्य विधाओं से अलग करता है?

(क) अभिनेयता

(ख) संवाद

(ग) कथानक

(घ) भाषा -शैली

6. "शतरंज के खिलाड़ी"पाठ में मीर साहब के प्रति मिरजा साहब की प्रतिकार की भावना थी, क्योंकिः

(क) वे उनके कट्टर शत्रु थे।

(ख) वे शतरंज में लगातार हार रहे थे

(ग) उनकी बेगम ने उन्हें भड़काया था

(घ) उन्हें सिपाही उकसाते थे

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 15- 20 शब्दों में दीजिए। 1 x7=7

(क) यदि मदर टेरेसा और क्रिस हैल्ड एक होकर कार्य न करती तो किसकी हानि होती और क्यो?

(ख) रोगाणुओं से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

(ग) 'अंधेर नगरी' नाटक में "टके सेर भाजी टके सेर खाजा" कथन में क्या व्यंग्य निहित है?

(घ) अखबार में कार्टून छापने का क्या उद्देश्य है ?

(ड़) 'बहादुर घर में फिरकी की तरह नाचता रहता था' का आशय स्पष्ट करें ।

(च) अखबारों में समाचार के साथ प्रकाशित होने वाली फोटो का क्या महत्व है?

(छ) अनौपचारिक पत्र के किन्ही दो संबोधनों का उल्लेख कीजिए।

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1+2+2=5

इधर देश की राजनीतिक दशा भयंकर होती जा रही थी कम्पनी की फौजें लखनऊ की तरफ बढो चली आती थी । शहर में हलचल मची हुई थी। लोग बाल- बच्चों को लेकर देहातों में भाग रहे थे। पर, हमारे दोनों खिलाड़ियों को इसकी जरा भी फिक्र न थी। वे घर से आते, तो गलियों में होकर। डर था कि कही किसी बादशाही मुलाजिम की निगाह न पड़ जाए, जो बेकार में पकड़े जाएँ। हजारों रुपये सालाना की जागीर मुफ्त ही हजम करना चाहते थे

(क) यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ? लेखक का भी नाम लिखें।

(ख) कंपनी की फौज किसे कहा गया है ? वह कहाँ बढ़ रही है ?

(ग) लोग बाल- बच्चों को लेकर कहाँ और क्यों जा रहे थे ?

अथवा

उसी बीच मुझे मोटर- दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतर कर दौडता और फिर किसी दूसरे को देखकर तेजी से अपने में घोंसले जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले को सफाई की तो उसमें काजू भी भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में तकिये पर वह सिरहाने बैठकर अपने नन्हे- नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

क उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम बताइए।
ख 'काजू तक ना खाना' गिल्लू के किस गुण को उजागर करता है?
ग इस अंश के माध्यम से लेखिका ने क्या कहना चाहा है ?

9 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 20-20 शब्दों में लिखिए:2 x4 =8

(क) 'शतरंज के खिलाड़ी' पाठ के आधार पर मीर और मिरजा की मित्रता के एक-एक सकरात्मक और नकारात्मक पक्षों का उल्लेख कीजिए।

(ख) राबर्ट नसिग होम में पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? कैसे?

(ग) सुखी राजकुमार कहानी में गौरैया के व्यक्तित्व परिवर्तन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

(घ) नाखून क्यों बढ़ते हैं इस पाठ के आधार पर बताइए कि शस्त्रों की बढ़त को रोकना क्यों आवश्यक है ?

(ङ) सार लेखन की प्रक्रिया के प्रारंभिक दो चरणों का उल्लेख कीजिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए :

3 x3=9

(क) एलर्जी क्या है ? उदाहरण सहित बताइए।

(ख) नाखून काटने से क्या होता है? मनुष्य की बर्बरता घटी कहाँ है, वह तो बढ़ती जा रही है ।नाखून क्यों बढ़ते हैं? पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी देश की वर्तमान परिस्थितियों में क्या महत्व रखती है?

(घ) लेखक 'अंधेर नगरी' नाटक में गुरु महंत के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है?

11 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढिए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :1 x5=5

तुम भारत, हम भारतीय हैं, तुम माता हम बेटे
किसकी हिम्मत है कि तुम्हें दुष्टता-दृष्टि में देखे ?

ओ माता, तुम एक अरब से अधिक भुजाओं वाली,
सबकी रक्षा में तुम सक्षम, हो अदम्य बलशाली।।

भाषा, वेश, प्रदेश भिन हैं, फिर भी भाई-भाई,

भारत की साझी- संस्कृति में पलते भारतवासी।

सदिनों में इस एक साथ हसते, गाते सोते हैं

दुर्दिन में भी साथ-साथ जगते पौरुष ढोते हैं ।

तुम हो शस्यश्यामला, खेतों में तुम लहराती हो,

प्रकृति प्राणमयि, सामगानमगि, तुम न किसे भाती हो !

तुम न अगर होती तो, धरती वसुधा क्यों कहलाती ?

गंगा कहाँ बहा करती, गीता क्यों गाधी गायी जाती ?

(क) 'साझी संस्कृति' का क्या अर्थ है ?

(ख) भारतीयों और भारत के बीच कैसा संबंध बताया गया है?

(ग) भारत को अदम्य बलशाली क्यों कहा गया है?

(घ) सुख-दुख के दिनों में भारतीयों का परस्पर व्यवहार कैसा होता है?

(ङ) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

12. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1 x5=5

ऐसे विश्वास जो तर्क की कसीटी पर खरे नहीं उतरते फिर भी लोग आँख बंद करक मानते चले जाते हैं। ये अंधविश्वास कहलाते हैं। रवीद्रनाथ टैगोर लिखते हैं "विश्वास प्रकाश की ओर ले जाता है और अंधविश्वास मृत्यु की ओर।" वास्तव में विश्वास और अंधविश्वास के मध्य एक महीन- सी रखा होती है। विश्वास में अदभुत शक्ति होती है, जिसमें असंभव कार्य सिद्ध हो जाते हैं। विश्वास के सुदृढ़ आधार पर ही निश्चित सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ो जा सकती है जबकि इसके विपरीत अंधविश्वास का कोई ठास आधार नहीं होता । किसी भ्रम या कल्पना को आधार बनाकर वह अपनी जड़ें जमाता है, और तांत्रिक, ओझा व भगवान के चमत्कारों के नाम पर उस अंधविश्वास को हम हवा देते हैं। कुछ लोगों पर तो इनका भूत इस कदर सवार होता है कि वे पशुबलि या नरबलि से परहेज नहीं करते। चमत्कारी लाभ की उम्मीद दिखाती बेसिर पैर वाली हरकतो की खबरें आए दिन सुनाई देती हैं। अंधविश्वास का मनोविज्ञान गहरा है। निराश हो जाने वाले लोग इसके चक्कर में फँसते ही हैं, वे भी इसे अपनाते हैं जो अपनी योग्यता को परखे बिना तुरंत ही ज्यादा हासिल कर लेना चाहते हैं।

(क) अंधविश्वास का क्या तात्पर्य है?

(ख) अंधविश्वास कैसे फैलता है और किस हद तक इसका प्रभाव दिखाई पड़वा है? (ग) निराश हो जाने वाले लोग अंधविश्वास क्यों अपनाते है?

(घ) "विश्वास में अदभुत शक्ति है" का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ड़) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए

13. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

(1) सन्धि कीजिए : हिम + आलय , राका + ईश

(2) विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए : धनहीन अथवा माता-पिता

(3) 'निर' उपसर्ग से दो शब्द बनाइए ।

(4) सुशीला जिस मुहल्ले में रहती है, वह बहुत गंदा है । (सरल वाक्य में बदलिए ।)

(5) जैसे ही हम घर से बाहर निकले, बारिश शुरु हो गई । (रचना के अनुसार वाक्य-भेद बताइए।)

(6) वाह कितना सुंदर दृश्य है। (यथास्थान उपयुक्त विराम चिह्न लगाइए ।)

(7) आसमान सिर पर उठाना , अक्ल चरने जाना (किसी एक मुहावरे का वाक्य- प्रयोग कीजिए ।)

(8) हम आमों को खा रहे हैं । (वाक्य को शुद्ध रूप में लिखिए ।)

(9) सिंह अथवा सूर्य के दो पर्यायवाची शब्द लिखें

(10) 'ता' प्रत्यय से दो शब्द बनाइए

14 निम्नलिखित अंश का सार-लेखन एक तिहाई शब्दों में कीजिए : **5**

कहा जाता है कि मानव का आरंभिक जीवन अधिक लचीला और प्रशिक्षण के लिए विशेषकर अनुकूल होता है। यदि माता-पिता, अध्यापक और सरकार- तीनों मिलकर प्रयास करें, तो वे बालक को जैसा चाहें, वैसा वातावरण देकर उसकी जीवन-दिशा का निर्धारण कर सकते हैं। जीवन का यह समय मिट्टी के उस कच्चे घड़े के समान होता है, जिसके विकारों को मनचाहे ढंग से ठीक किया जा सकता है। लेकिन जिस तरह पके हुए घड़ों में पाए जाने वाले दोषों में सुधार करना असंभव है, उसी तरह यौवन की दहलीज़ को पार कर बीस-पच्चीस वर्ष के युवक के अंदर आमूल परिवर्तन लाना यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। कच्ची मिट्टी किसी भी साँचे में ढालकर किसी भी नए रूप में बदली जा सकती है, लेकिन जब वह एक बार, एक प्रकार की बन गयी, तब उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास बहुत ही कम सफल हो पाता है। किसी लड़के या लड़की के व्यक्तित्व के निर्माण का मुख्य उत्तरदायित्व हमारे समाज, हमारी सरकार और स्वयं माता-पिता पर है तथा बहुत कुछ स्वयं लड़के या लड़की पर भी। कोई भी व्यक्ति अपने ध्येय में तभी सफल हो सकता है, जब वह अपने जीवन के आरंभिक दिनों में भी वैसा करने का प्रयास करे। इस दष्टि से विद्याध्ययन का समय ही मानव-जीवन के लिए विशेष महत्त्व रखता है। हम सभी का और स्वयं विद्यार्थियों का भी यही कर्त्तव्य है कि सभी इस तथ्य को हमेशा अपने सामने रखें।

15. विभाग की लापरवाही से खाद्य पदार्थों में मिलावट की गंभीर समस्या पर विभाग के निदेशक का पत्र लिखिए।

अथवा

आज के उपेक्षित बुजुर्गों के प्रति युवा -वर्ग किस प्रकार अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकता है, इस पर विचार प्रकट करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

16. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए।

क भारतीय खेल

ख प्राकृतिक सौंदर्य वर्षा ऋतु में

ग फैशन की बढ़ती प्रवृत्ति

घ बेटी पढ़ाओ , बेटी बचाओ